

NOT FOR SALE

शक्ति तंत्र विशेषांक

फरवरी 2009

मूल्य : 24/-

सूत्र-तंत्र-योग

विज्ञान



जानिये वास्तविक तंत्र
मिटाइये अपने जीवन से बनाव

इसे ही करें नवरात्रि पूजा
पांच अनमोल साधनाएं

अध्यो द्वीप भव

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

ज्ञान और वेदवा की अनमोल कृतियां

पूज्य गुरुदेव

‘डॉ. नंदगयण ढंड
श्रीमाली जी’

द्वारा

रचित ज्ञान की गरिमा
से युक्तसम्पूर्ण जीवन
को जगमगाने वाली
अनमोल कृतियां



★ मूलाधार से सहसार तक	150/-	★ निश्चिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-
★ फिर द्वूर कहीं पायल खनकी	150/-	★ कुण्डलनी नाद ब्रह्मा	120/-
★ गुरु गीता	150/-	★ विश्व की श्रेष्ठ दीक्षाएँ	96/-
★ ज्योतिष और काल निर्णय	150/-	★ ध्यान धारणा और समाधि	96/-
★ हस्तरेखा विज्ञान और पंचागुली साधना	120/-	★ निश्चिलेश्वरानन्द सहस्रनाम	96/-
		★ विश्व की आलौकिक साधनाएँ	96/-

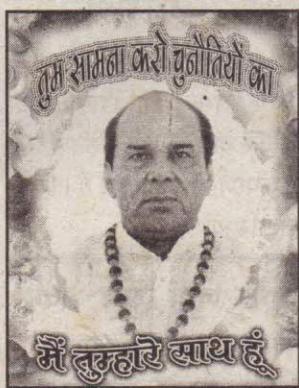
→ → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ←
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और मारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्री ब्रह्म प्रकाश

॥ श्री वसुमा ब्रह्माय वास्य यथाय गुरुभ्यो वदेः ॥



सद्गुरुदेव	
सद्गुरु प्रवचन	5
स्तम्भ	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूं	62
वराहमिहिर	63
इस मास जोधपुर में	80
एक दृष्टि में	85

वर्ष 29 अंक 02
फरवरी 2009 पृष्ठ 88



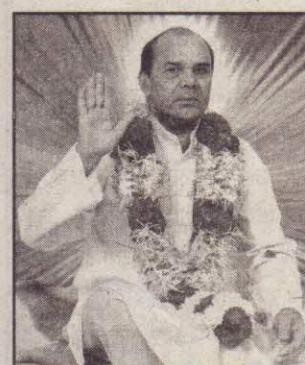
साधना	
भगवती लक्ष्मी साधना	47
अम्बिका साधना	48
सौम्य महाकाली साधना	49
तारा साधना	51
बगलामुखी साधना	52
इतर योनि साधना	52
सम्मोहन साधना	53
उर्वशी साधना	54
वीर साधना	66
शुक्र साधना	68
Aghor Shiv Sadhana	82
Kaalgyan Sadhana	83
Shwetaark Ganpati Sadhana	84



पूजन
भगवती जगदम्बा
चैत्र नवरात्रि पूजन् 33

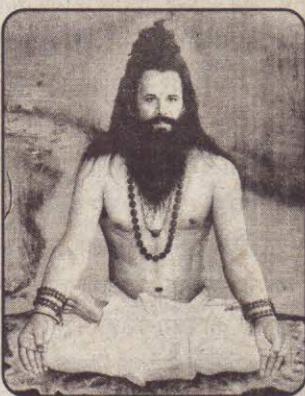


विशेष	
तंत्र का	
वास्तविक स्वरूप	23
जगदम्बा शक्ति स्वरूप	28
अप्पो दीप भव	41
शक्ति तत्व और	
शक्ति साधना	46
बजरंग बाण	57
जीवन ही साधना	64
तनाव मुक्ति के	
सर्वोत्तम सूत्र	72



प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस रवामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली
कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
श्री अरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-८७
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलेजी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति: 24/-
वार्षिक: 258/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलेजी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address – <http://www.siddhashram.org> E-mail add. – mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमककड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

उ॒ँ कालाभ्रामां कटाक्षैरस्तुलभयदां मौलिष्वद्वेन्दुरेष्वां,
शङ्क॑ चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्धहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूपा त्रिभुवनमस्तितं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गा ज्यवल्लयां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

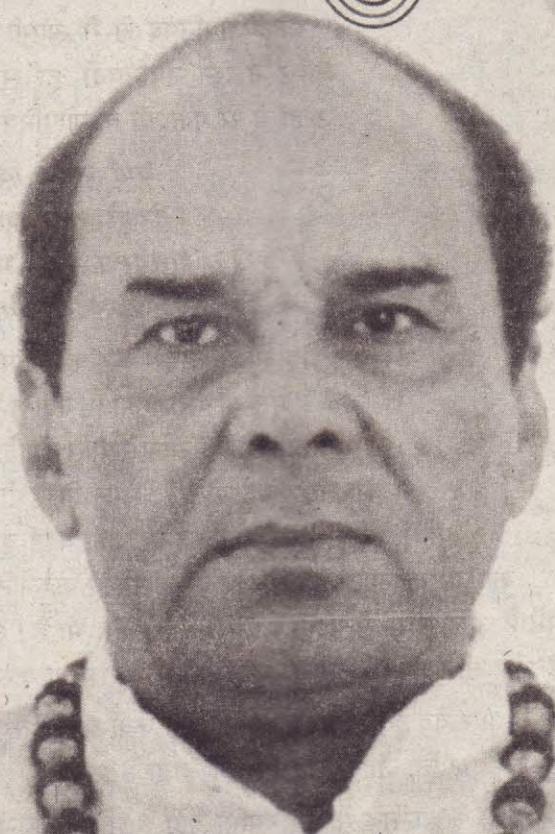
हे देवी दुर्गा! आप समस्त राक्षसी वृत्तियों पर जयी होने के कारण जया हैं। आप क्रष्णियों, मुनियों, योगियों, देवगणों एवं सिद्धि प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले साधक वृन्दों द्वारा पूजनीय एवं वन्दनीय हैं। आपके शरीर की आभा काले मेघ के समान शांतिदायक हैं। आपकी क्रोध दृष्टि शत्रुओं को भयभीत कर देती है, श्री मस्तक पर चन्द्ररेखा एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल हैं। सिंह पर आसूढ़ आपके ही तेज से तीनों लोक परिपूर्ण हैं।

एकाग्रता व समर्पण के बिना कुछ नहीं जान सकते

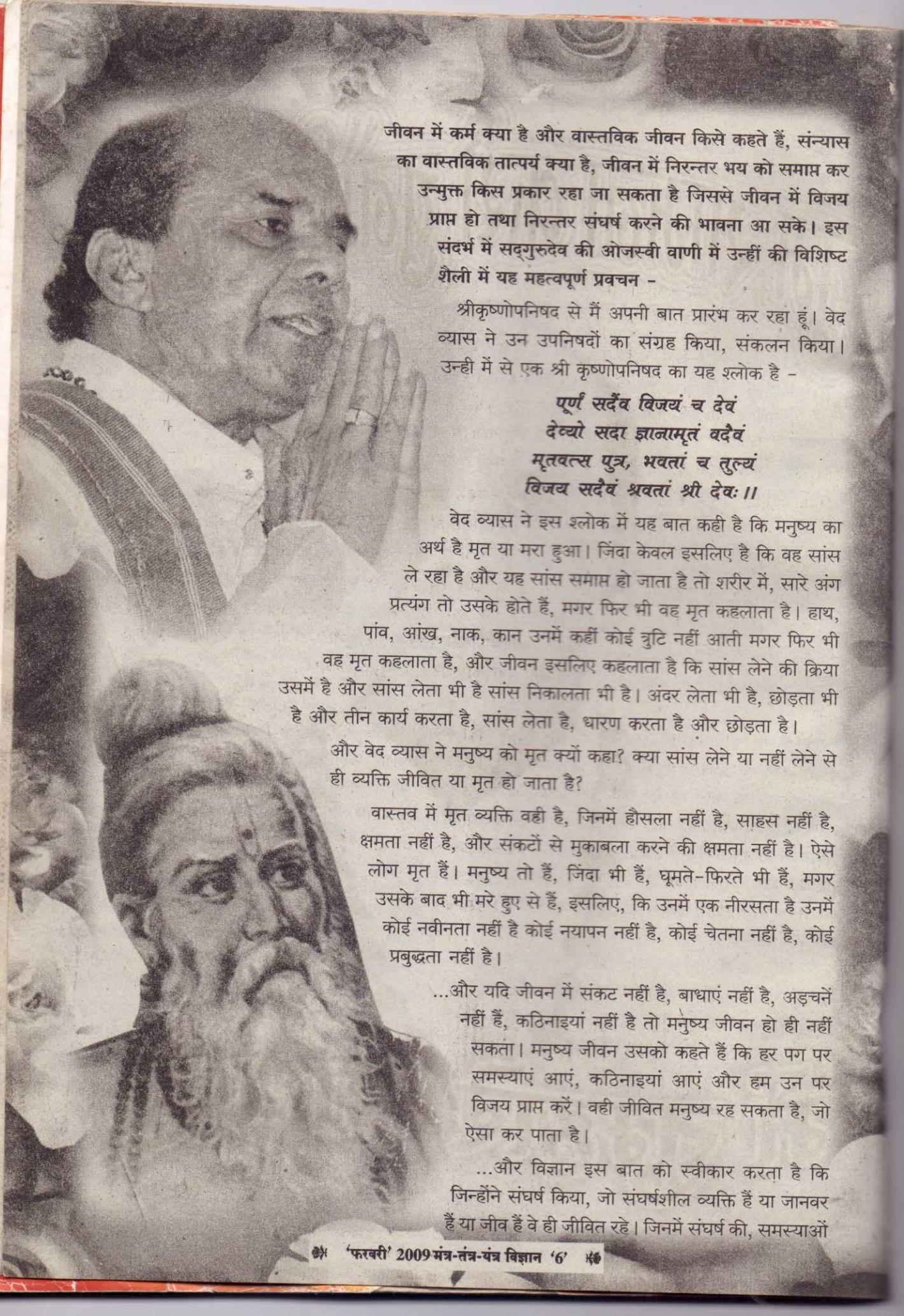
एक आश्रम में तीन युवक पहुंचे। वे वहां कुछ दिन रहना चाहते थे। आश्रम के महंत ने उनसे प्रश्न पूछा - क्यों आए हो? पहले ने उत्तर दिया - बस रहने आया हूं। महंत ने कहा - रहने में तो कोई दिक्कत है ही नहीं। जैसे दुनिया में रहते हो, कैसे ही यहां रहो। केवल रहना है तो हमें कुछ नहीं कहना है। दूसरे से पूछा तो उसने उत्तर दिया - कुछ जानने आया हूं और तीसरे ने कहा - जीने के लिए रहने आया हूं। महंत बोले - यदि कुछ जानना चाहते हो तो दो काम करने पड़ेंगे - बुद्धि को शुद्ध तथा मन को समर्पण योग्य बनाना पड़ेगा। क्या ऐसा कर सकोगे।

उस युवक ने उत्तर दिया - यह तो आसान है और मैं ऐसा करता रहता हूं। तब महंत ने उसे समझाया - दुनिया की जीवनशैली और आश्रम की जीवनशैली में यही फर्क है। जिसे हम जानना कहते हैं, अधिकांश मौकों पर हम जानकारियों के स्तर पर काम करते हैं और जो हमारे मन की प्रतिष्ठाया है वह इतनी हावी हो जाती है कि वास्तविक जानकारी न होकर मन की छाया ही रहती है। यह हमारा वहम होता है कि हमने जान लिया। चित्त को एकाग्र किए बिना जो जाना जाता है वह बहुत स्तरीय होता है। वह जाना जा सकता है जो दिख रहा है। उससे महत्वपूर्ण वह है जो देखा नहीं जा रहा है। जैसे जिसे हम परमात्मा मानकर देख रहे हैं वो हमारा अहंकार, हमारा पूर्वग्रिह ही होता है। इस स्थिति से ऊपर उठकर जब इसके पीछे देखा जाए तो असली परमात्मा दिखता है। चाहे आश्रम में रहो, चाहे मंदिर में या दुनिया में रहें, चित्त की एकाग्रता और मन के समर्पण के बिना कुछ नहीं जान सकोगे। हां, जानकारियों से जरूर लबालब हो जाओगे और फिर महंत ने उस व्यक्ति की ओर देखा जिसने कहा था कि जीना चाहता हूं। महंत बोले - रहना और जानना इन दोनों से ऊपर की स्थिति है जीना। जीवन को जीने के लिए परमात्मा की अनुभूति होना जरूरी है। जीवन बिताना आसान है, जीना कठिन है।

महाराष्ट्राचे पुण्यात्मका



जीं लुम्हाणे खाथ हं



जीवन में कर्म क्या है और वास्तविक जीवन किसे कहते हैं, संन्यास का वास्तविक तात्पर्य क्या है, जीवन में निरन्तर भय को समाप्त कर उन्मुक्त किस प्रकार रहा जा सकता है जिससे जीवन में विजय प्राप्त हो तथा निरन्तर संघर्ष करने की भावना आ सके। इस संदर्भ में सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में उन्हीं की विशिष्ट शैली में यह महत्वपूर्ण प्रवचन -

श्रीकृष्णोपनिषद से मैं अपनी बात प्रारंभ कर रहा हूँ। वेद व्यास ने उन उपनिषदों का संग्रह किया, संकलन किया। उन्हीं में से एक श्री कृष्णोपनिषद का यह श्लोक है -

पूर्ण सदैव विजयं च देवं
देव्यो सदा ज्ञानामृतं वदैवं
मृतवत्स पुत्र, भवतां च तुल्यं
विजय सदैवं श्रवतां श्री देवः ॥

वेद व्यास ने इस श्लोक में यह बात कही है कि मनुष्य का अर्थ है मृत या मरा हुआ। जिंदा केवल इसलिए है कि वह सांस ले रहा है और यह सांस समाप्त हो जाता है तो शरीर में, सारे अंग प्रत्यंग तो उसके होते हैं, मगर फिर भी वह मृत कहलाता है। हाथ, पांव, आंख, नाक, कान उनमें कहीं कोई त्रुटि नहीं आती मगर फिर भी वह मृत कहलाता है, और जीवन इसलिए कहलाता है कि सांस लेने की क्रिया उसमें है और सांस लेता भी है सांस निकालता भी है। अंदर लेता भी है, छोड़ता भी है और तीन कार्य करता है, सांस लेता है, धारण करता है और छोड़ता है।

और वेद व्यास ने मनुष्य को मृत क्यों कहा? क्या सांस लेने या नहीं लेने से ही व्यक्ति जीवित या मृत हो जाता है?

वास्तव में मृत व्यक्ति वही है, जिनमें हौसला नहीं है, साहस नहीं है, क्षमता नहीं है, और संकटों से मुकाबला करने की क्षमता नहीं है। ऐसे लोग मृत हैं। मनुष्य तो हैं, जिंदा भी हैं, धूमते-फिरते भी हैं, मगर उसके बाद भी मरे हुए से हैं, इसलिए, कि उनमें एक नीरसता है उनमें कोई नवीनता नहीं है कोई नयापन नहीं है, कोई चेतना नहीं है, कोई प्रबुद्धता नहीं है।

...और यदि जीवन में संकट नहीं है, बाधाएं नहीं हैं, अड़चनें नहीं हैं, कठिनाइयां नहीं हैं तो मनुष्य जीवन हो ही नहीं सकता। मनुष्य जीवन उसको कहते हैं कि हर पग पर समस्याएं आएं, कठिनाइयां आएं और हम उन पर विजय प्राप्त करें। वही जीवित मनुष्य रह सकता है, जो ऐसा कर पाता है।

...और विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि जिन्होंने संघर्ष किया, जो संघर्षशील व्यक्ति हैं या जानवर हैं या जीव हैं वे ही जीवित रहे। जिनमें संघर्ष की, समस्याओं

से जूझने की क्षमता समाप्त हो गई। वे मर गए। अभी कुछ समय पहले बीच में आपने बहुत हो हल्ला सुना होगा कि डायनासॉर होता था जो संसार का सबसे लम्बा चौड़ा प्राणी था, मगर मच्छ, हाथी या व्हेल मछली तो उसके सामने एकदम तुच्छ प्राणी थे और अभी एक फिल्म भी बनी थी डायनासॉर पर। आज से हजारों साल पहले आखिर डायनासॉर की मृत्यु हो गई और एक का भी अस्तित्व नहीं रहा, एक भी डायनासॉर जीवित नहीं रहा। क्यों नहीं रहा?

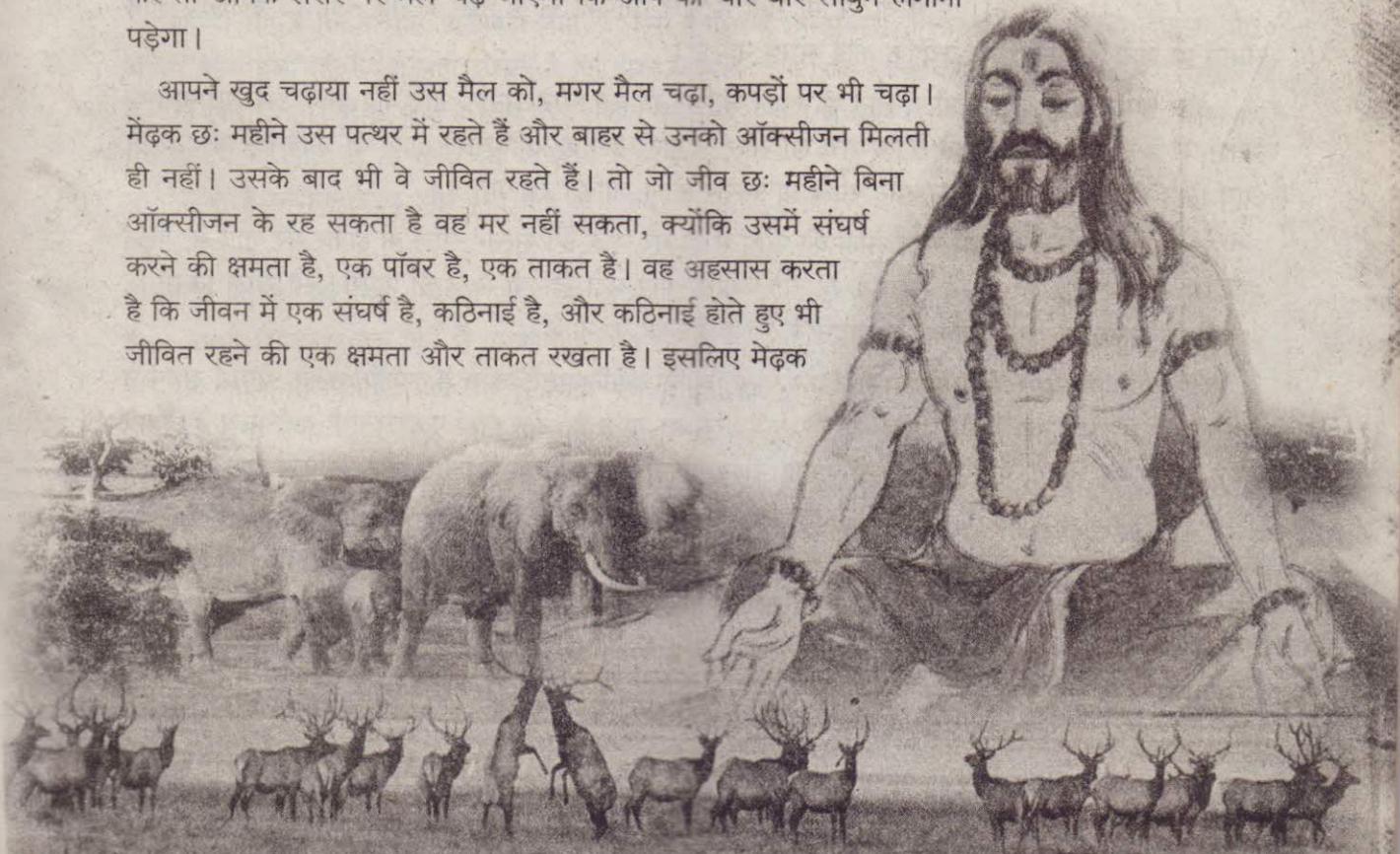
इतना बड़ा लम्बा-चौड़ा प्राणी तुम्हारे जैसे कम से कम पांच सौ आदमी उसके मुंह में आ सकें, वह जीवित नहीं रहा और आप जीवित हैं, इसका क्या कारण था? वह क्यों नहीं जीवित रहा?

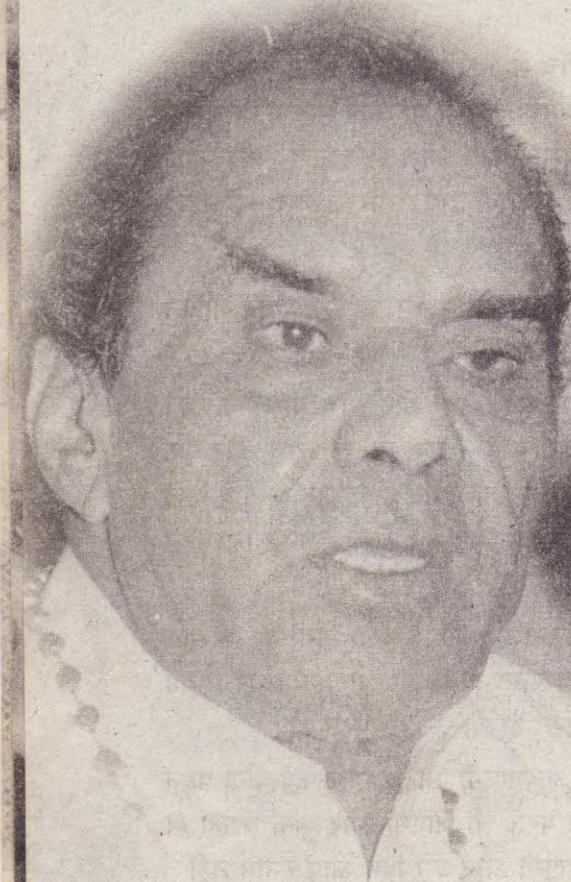
और आपको मालूम होना चाहिए कि आज से तीन हजार साल पहले भी मेंढक था, और आज भी जीवित हैं। सबसे पुराने जो जीव हैं, केवल दो हैं जो पिछले हजारों सालों से हमारे बीच हैं - एक तो कॉकरोच और एक मेंढक। बाकी सब जांतियां धीरे-धीरे नष्ट होती गईं, बदलती गईं या परिवर्तित होती गईं। पर, उन दोनों में कुछ परिवर्तन नहीं आया और दोनों आज भी वही हैं जो आज से तीस हजार साल पहले थे। तीस हजार साल बहुत बड़ी उम्र है, और तीस हजार वर्षों से वे जीवित हैं ऐसा क्यों है?

ऐसा इसलिए है कि वे प्रत्येक परिस्थिति में जीवित रहने की क्षमता, रखते हैं। आपने देखा होगा कि बरसात में मेंढक पानी में तैरते हैं, आवाज करते हैं और जब समाप्त हो जाती है बरसात तो किसी खोखले पत्थर में वह मेंढक घुस जाता है और उसके ऊपर एक परत आ जाती है, वायु की परत हो या रेत की परत हो।

यदि आप भी चार घंटा बाहर बैठ जाएं तो आपके ऊपर रेत की परत आ जाएगी और आप सफेद कुर्ता पहन कर चांदनी चौक में निकल जाएं तो आपके ऊपर एक धुएं की, रेत की परत आ जाएगी और कुर्ता काला हो जाएगा और चार दिन तक चलेंगे तो आपके ऊपर मैल की परत चढ़ जाएगी और दस दिन आप स्नान नहीं करें तो आपके शरीर पर मैल चढ़ जाएगा कि आप को चार बार साबुन लगाना पड़ेगा।

आपने खुद चढ़ाया नहीं उस मैल को, मगर मैल चढ़ा, कपड़ों पर भी चढ़ा।
मेंढक छः महीने उस पत्थर में रहते हैं और बाहर से उनको ऑक्सीजन मिलती ही नहीं। उसके बाद भी वे जीवित रहते हैं। तो जो जीव छः महीने बिना ऑक्सीजन के रह सकता है वह मर नहीं सकता, क्योंकि उसमें संघर्ष करने की क्षमता है, एक पॉवर है, एक ताकत है। वह अहसास करता है कि जीवन में एक संघर्ष है, कठिनाई है, और कठिनाई होते हुए भी जीवित रहने की एक क्षमता और ताकत रखता है। इसलिए मेंढक





जीवित है इसलिए काँकरोच जीवित हैं इसलिए ऊंट जीवित है कि वह तीस दिन बाद तक बिना पानी के जीवित रह सकता है, हम और तुम नहीं रह सकते। बिना पानी के वह तीस दिन चल सकता है, मरुस्थल में, रेगिस्तान में। यह केवल एक छोटा सा उदाहरण है, मगर वह छोटा उदाहरण इसलिए दे रहा हूँ कि आप समझ सकें कि जिंदा वही व्यक्ति रहता है जिसमें संघर्ष करने की पूर्ण क्षमता हो, और संघर्ष वह कर सकता है जिसके सामने समस्याएं आएं।

समस्याएं आएंगी ही नहीं तो संघर्ष करेगा भी क्या? किससे संघर्ष करेगा, दीवारों से? दरवाजों से? पत्थरों से? वह संघर्ष होता ही नहीं। और पति पत्नी के बीच संघर्ष नहीं होता, मतभेद होते हैं। आप मतभेद को लड़ाई कहते हैं, मैं कहता हूँ मतभेद हैं।

वह कहती कि मैं प्लाजा पर फिल्म देखने जाऊँगी आप कहते हैं नहीं, रिवोली पर पिक्चर देखने जाएँगे। लड़ाई झगड़ा कोई नहीं है, बस वह एक अलग कहानी, कहती है आप एक अलग बात कहते हैं और यह एक टकराहट है आपके जीवन की इसलिए घर में एक टकराव की, एक तनाव की स्थिति है। वह आपका संघर्ष नहीं है। आपका संघर्ष पुत्र से भी नहीं है। आपका संघर्ष पत्नी से भी नहीं है और आपका संघर्ष खुद से भी नहीं है। इसलिए आप समाप्त हो जाते हैं धीरे-धीरे, क्योंकि कोई संघर्ष नहीं है।

...और हमारे ऋषि दो सौ साल, तीन सौ साल जीवित रहे यह हमने सुना। और यदि आप उस साधनात्मक लेवल पर हैं तो आप देख सकते हैं कि पांच सौ साल, हजार साल के ऋषि योगी आज भी जीवित हैं और इतनी आयु लिए हुए हैं और हम केवल साठ साल या सत्तर साल जीवित रह पाते हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है कि हम साठ साल की आयु में ही मर जाते हैं। सत्तर साल के होकर मर जाते हैं, बहुत मुश्किल से गिन कर के अस्सी साल के दो चार व्यक्ति आप मुझे दिल्ली में दिखा पाएँगे। सौ साल किसी के होते हैं तो भारत सरकार उसका अभिनंदन करती है तिलक करती है।

आज व्यक्ति सौ साल भी उम्र प्राप्त नहीं कर पाता, व्यक्ति इसलिए टूट जाता है क्योंकि उसके सामने संघर्ष है ही नहीं, और संघर्ष नहीं है तो व्यक्ति का जीवन एकरस हो जाता है, और जहां एकरसता है वहां मृत्यु है। आप सुबह उठे, स्नान किया, पेंट पहनी, कुर्ता पहना, नाश्ता किया, टिफिन हाथ में लिया और ऑफिस चले गए, फिर ऑफिस से वापस आए, पत्नी की भी सुनी दो बातें, पत्नी को सुनाई खाना खाया और सो गए। तीस दिन महीने के ऐसे ही होते हैं। एक संडे के अलावा ऐसा ही होता है, बस संडे को कहते हैं आज संडे है आठ बजे अखबार पढ़ते हैं और पढ़े रहते हैं, बैड टी पी लेते हैं। अगला संडे भी वैसा ही होता है।

जीवन में कोई प्रॉब्लम आई, कोई समस्या आई, कोई तनाव आया, कुछ ऐसी अनिश्चितता आई कि कल क्या होगा या एक घंटे बाद क्या होगा, किसी ने तलवार लेकर आपके सिर पर रखी? कोई बंदूक की गोली लेकर आपके सामने खड़ा हुआ?

हुआ ही नहीं, आप बस बचते रहें। बचना आप का धर्म है। इसका मतलब यह नहीं, कि आप ए.के.४७ के सामने खड़े हो जाएं कि गुरुजी ने कहा है संघर्ष करना। मगर यदि कोई सामने खड़ा हो जाए तो आपमें यह

क्षमता होनी चाहिए कि आप उसे धक्का देकर उसके सीने पर खड़े हो सकें। इतनी ताकत आपमें होनी चाहिए और वह ताकत तब आ सकती है जब आप में आत्मबल हो, यदि आप में आत्मबल हो। यदि आत्म बल नहीं है तो आप जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। और ज्योंही कोई गोली चली, आप मर जाएंगे और यदि आत्मबल है तो आप खड़े होकर उसे एक लात मारेंगे उसकी ए.के.४७ राइफल एक तरफ गिरेगी और वह एक तरफ गिरेगा। आप उसकी छाती पर बैठकर सफलता प्राप्त कर लेंगे।

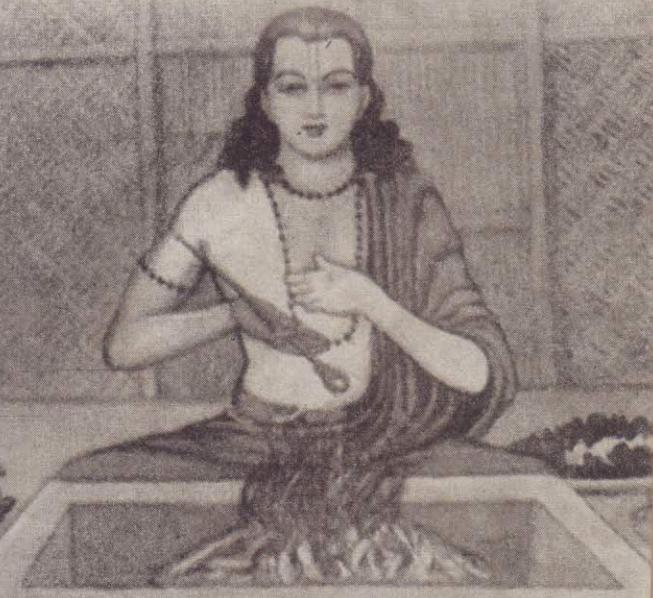
दोनों स्थितियां आपके सामने हैं। प्रत्येक व्यक्ति भयभीत है, जब संसार में पैदा होता है, उस क्षण से लगाकर मृत्यु तक उसके जीवन में और कुछ नहीं होता, बस भय होता है, और वह भय पीछा करता है आपका और कोई दूर से नहीं करता। मां, बाप भय पैदा करते हैं उसके मन में कि बाहर मत जाना सड़क पर, एकसीडेंट हो जाएगा। और स्कूल से सीधे दो बजे घर आ जाना नहीं तो कुछ हो जाएगा, और यह तू मत खाना इससे तकलीफ हो जाएगी, ऐसा करने से यह हो जाएगा, ऐसा करने से वह हो जाएगा। और हम उसे भय के अलावा कुछ देते ही नहीं क्योंकि हम खुद भी भय से पैदा हुए हैं और हमने उनको भय दिया इसलिए व्यक्ति कायर बना, बुजदिल बना। हम अपने लड़कों को ताकतवान नहीं बना सके, साहसवान नहीं बना सके।

कोई अस्सी किलो का आदमी ही ताकतवान नहीं बनता। गांधी जी तो बयालिस किलो के ही थे सिर्फ, और आप और हम से बहुत ज्यादा ताकतवान थे, अंग्रेजों से लोहा लिया, एक संघर्ष किया लाखों लोगों से और उनकी वाणी में इतनी ताकत थी कि हजारों लोग सूली पर चढ़ गए, फांसी पर चढ़ गए, गोलियां खा गए। आपके कहने से एक व्यक्ति भी गोली नहीं खाएगा, आपके कहने से एक व्यक्ति भी संघर्ष नहीं करेगा। आपके कहने से एक व्यक्ति भी कॉलंज छोड़ कर सड़क पर नहीं उतरेगा आपके कहने से एक व्यक्ति भी अपनी पत्नी को छोड़ कर जेल में नहीं जाएगा।

आपमें और उस आदमी में ऐसा डिफरेंस क्या था? यह तो अभी की घटना है पचास साल, साठ साल पहले की।

डिफरेंस यह है कि आपमें आत्मबल नहीं है। उस व्यक्ति में आत्मबल था कि मैं ऐसा कर के छोड़ूँगा और आपमें आत्मबल नहीं है तो आप सोचते हैं कि होगा या नहीं होगा। आप बस कहते हैं चलो, कोशिश कर लेते हैं, देख लेते हैं, उम्मीद तो नहीं है फिर भी कोशिश कर लेते हैं यहीं से आपका भय स्टार्ट हो जाता है, और जब भय आरंभ हो जाता है तो उस भय के साथ मृत्यु जुड़ी होती है क्योंकि मृत्यु और भय एक ही शब्द हैं।

आपने सैनिकों को देखा। आर्मी वाले क्या करते हैं कि आर्मी ऑफिसर एक दिन में उनको एक हजार बार एक लाइन बुलवाते हैं। 'जो डरा सो मरा' बस, उनकी प्रार्थना होती है, उनकी स्तुति भी यहीं होती है, कोई 'ॐ जय जगदीश हरे' नहीं करते वो। सुबह उठते ही सबसे पहले यहीं बोलते हैं कि जो डरा, सो मरा। फिर सोते हैं तो भी यहीं कहते हैं - जो डरा सो मरा। पूरे दिन भर में एक सैनिक को एक हजार बार बुलवाते हैं वो। एक दूसरे से मिलते हैं, बात करते हैं तो नमस्ते नहीं करते, वो कहते हैं - जो डरा, सो मरा। दूसरा भी कहता है - जो डरा, सो मरा। यदि आप आर्मी फिल्ड में जाएं तो वहां दीवारों पर कुछ और लिखा नहीं होता, श्री कृष्ण



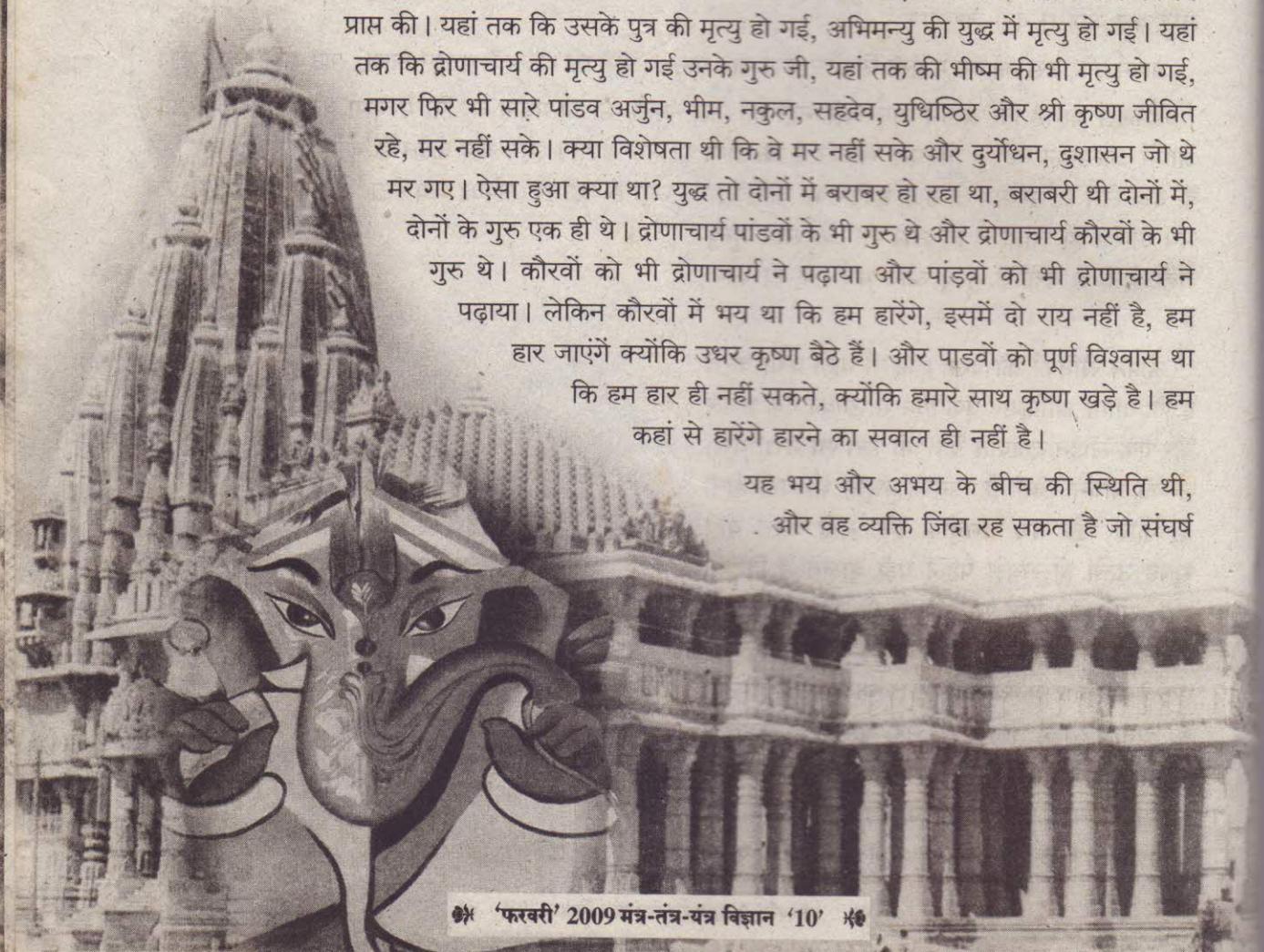
शरणं मम लिखा नहीं होता, भगवान् श्री कृष्ण या राम जी की जय, ऐसा लिखा नहीं होता। वहां केवल यही लाइन लिखी होती है।

यह क्या चीज़ है? ऐसा क्यों करते हैं? भय निकालने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसी कोशिश करते हैं इसलिए वह उन हथगोलों और बमों के बीच निर्भीकता से चला जाता है मर सकता है, जिंदा भी रह सकता है। मगर जिंदा रहने के चान्स ज्यादा होते हैं क्योंकि उनमें एक हिम्मत, एक साहस, एक क्षमता पैदा होती है कि देखा जाएगा। जीवन के एक छोर पर जन्म है, एक छोर पर मृत्यु है, हम दोनों के बीच में हैं - मर जाएंगे तो मर जाएंगे और जिंदा रह जाएंगे तो जिंदा रह जाएंगे।

कृष्ण ने भी अर्जुन को यही कहा था गीता में, कि अर्जुन! तुम बहुत कायर, तुम बहुत बुजदिल हो क्योंकि तुम्हें ऐसा ही अपने भीतर पैदा किया गया। तुम भयभीत हो, तुममें ताकत और निर्भीकता नहीं है, तुममें क्षमता नहीं है, तुममें हौसला नहीं है और मैं कहता हूं कि तू मरण को प्राप्त कर, तू मर जा पहले। यदि तू मर भी जाएगा तो स्वर्ग मिलेगा आगे जहां अप्सराएं नृत्य करती हैं। जो कृष्ण ने कहा मैं वह बात दोहरा रहा हूं स्वर्ग है नक्त है, अप्सराएं हैं, या नहीं है मैं इस विषय को नहीं उठा रहा हूं। जो कृष्ण ने कहा मैं उस बात को कर रहा हूं। उस अर्जुन को समझाने के लिए श्री कृष्ण ने कहा - कि यदि तू जिंदा रह गया तो विजय प्राप्त करेगा, लोग जय जयकार करेंगे और आने वाली पांच हजार पीढ़ियां तुम्हें याद करेंगी। दोनों स्थितियों में तुम्हें लाभ ही लाभ है, हानि है ही नहीं। जीत जाओगे तो भी लाभ है मर जाओगे तो भी लाभ है।

...और अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हुआ, धनुष बाण हाथ में लिया, गांडीव हाथ में लिया और उस पर शर संधान कर के तीर संधान कर के अपने सामने जितने भी खड़े थे उन्हें समाप्त कर के विजय प्राप्त की। यहां तक कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई उनके गुरु जी, यहां तक की भीष्म की भी मृत्यु हो गई, मगर फिर भी सारे पांडव अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर और श्री कृष्ण जीवित रहे, मर नहीं सके। क्या विशेषता थी कि वे मर नहीं सके और दुर्योधन, दुश्शसन जो थे मर गए। ऐसा हुआ क्या था? युद्ध तो दोनों में बराबर हो रहा था, बराबरी थी दोनों में, दोनों के गुरु एक ही थे। द्रोणाचार्य पांडवों के भी गुरु थे और द्रोणाचार्य कौरवों के भी गुरु थे। कौरवों को भी द्रोणाचार्य ने पढ़ाया और पांडवों को भी द्रोणाचार्य ने पढ़ाया। लेकिन कौरवों में भय था कि हम हारेंगे, इसमें दो राय नहीं है, हम हार जाएंगे क्योंकि उधर कृष्ण बैठे हैं। और पांडवों को पूर्ण विश्वास था कि हम हार ही नहीं सकते, क्योंकि हमारे साथ कृष्ण खड़े है। हम कहां से हारेंगे हारने का सवाल ही नहीं है।

यह भय और अभय के बीच की स्थिति थी, और वह व्यक्ति जिंदा रह सकता है जो संघर्ष



कर सकता है, जो संघर्ष करने की क्षमता रखता है, जो संघर्ष को अपने जीवन में निमंत्रण देता है, जो संघर्ष को बुलाता है, जो अपने सामने संघर्ष को उत्पन्न करता है और फिर संघर्ष से जूझता है, वही सफलता प्राप्त करता है तो आनंद, असीम आनंद की अनुभूति होती है। कोर्ट में आप केस लड़ते हैं तो हर बार आप भयभीत रहते हैं कि हारेंगे या जीतेंगे, कहीं हमारा वकील दूसरे के साथ मिल गया क्या है, पता नहीं और आपके मन में तनाव और तनाव के अलावा कुछ नहीं होता। मगर जब आप जीत जाते हैं तो आपके चेहरे की प्रसन्नता और मुस्कुराहट इतनी तेज होती है कि शीशा भी एकदम तड़क जाता है।

उस दिन क्या हो गया था और आज क्या हो गया है? पहले आप भयग्रस्त थे, जीते तो भय से मुक्त हुए। इसलिए यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो जूझना ही पड़ेगा - तनाव के साथ नहीं विश्वास के साथ, वृद्धता के साथ।

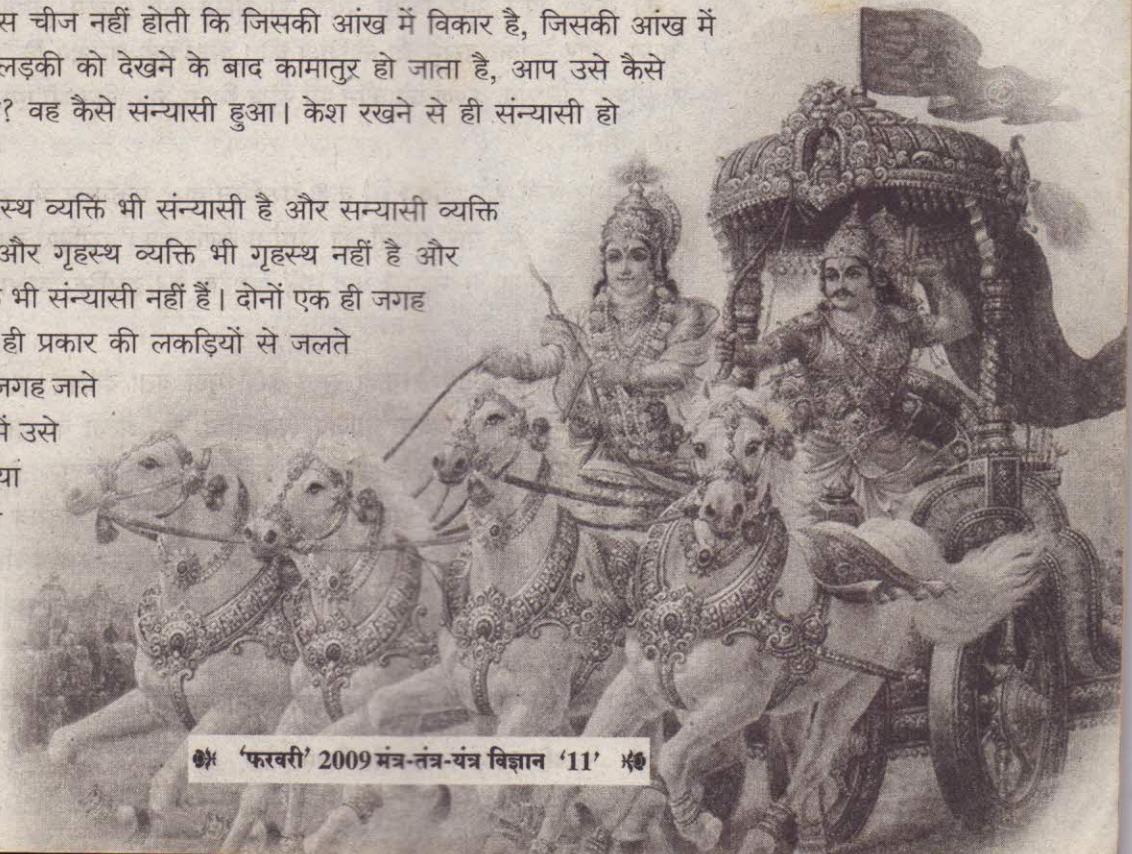
और जब सन्यासी दीक्षा लेता है, एक सन्यासी, गृहस्थ नहीं, तो निर्भीकता से दीक्षा लेता है। हममें से प्रत्येक सन्यासी है। आप में से कोई गृहस्थ है ही नहीं क्योंकि पत्नी आपकी है नहीं, पुत्र आपका है नहीं, पति आपका है नहीं, बंधु-बांधव आपके हैं नहीं, मकान जायदाद आपके हैं नहीं। अगर ये आपके होते तो आपके साथ चिता पर चले जाते ये सब। कोई जाता नहीं है, मैंने तो देखा नहीं, अपने सत्तर साल के इतिहास में मैंने तो देखा नहीं कि पति गया तो पत्नी भी साथ में मरी, मकान को भी जला दिया, नोट के टुकड़े भी अंदर आग में डाल दिए, बक्से भी अंदर डाल दिए, हीरे-मोती भी अंदर डाल दिए। ऐसा मैंने देखा नहीं, शायद आपने भी नहीं देखा। सुना बस, राम नाम सत्य है आगे गया गत है।

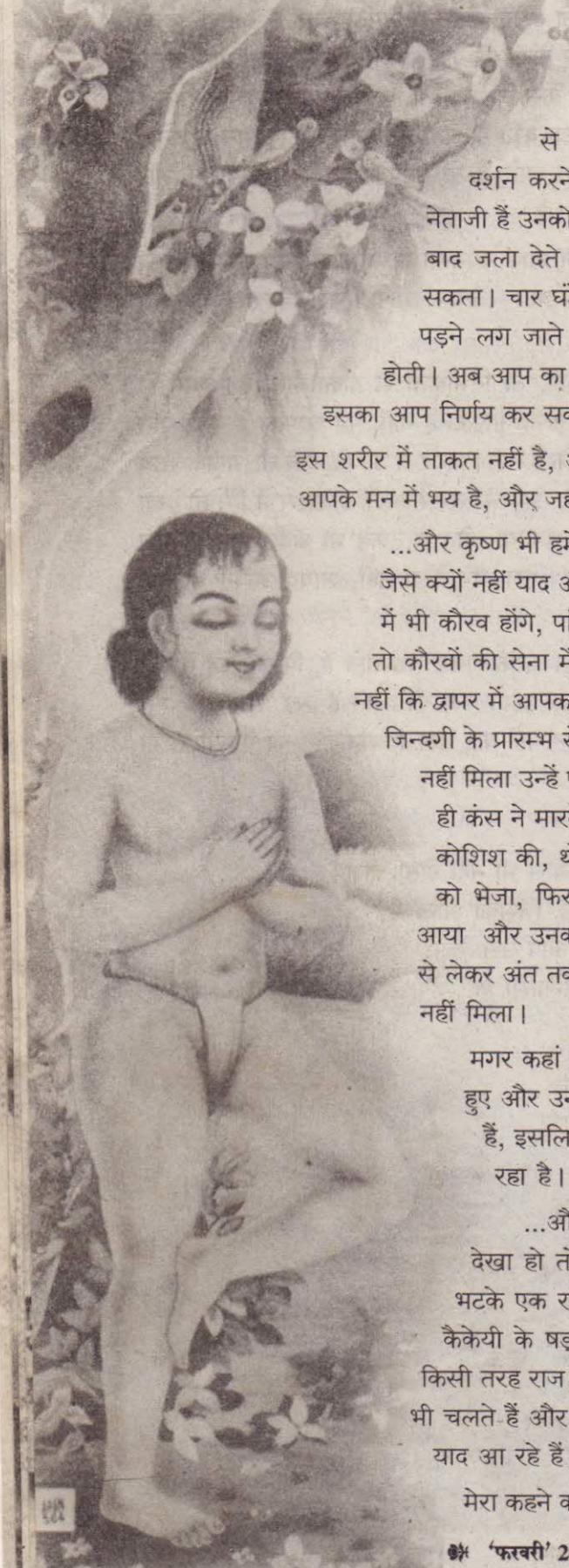
आगे गया गत है, अब आगे तो किसने देखा। और हम स्नान करके वापस घर आते हैं, फिर तराजू में दस छठांक कम तोलते हैं और हम दुकानदारी वैसी ही चलाते हैं। फिर अपने बच्चे को कहते हैं देख, सड़क पर मत जाना एक्सीडेंट हो जाएगा, देख उसका एक्सीडेंट हो गया मदनलाल का, देख किशनलाल का एक्सीडेंट हो गया, देख हरिराम का एक्सीडेंट हो गया। तू बाहर मत जाना।

...और हम उनको कायर, हम उनको बुजदिल बनाते हैं।

मैं कह रहा हूं कि गृहस्थी कोई होती ही नहीं चीज, और सन्यास भी नहीं होता चीज। इसलिए सन्यास चीज नहीं होती कि जिसकी आंख में विकार है, जिसकी आंख में गंदगी है, जो लड़की को देखने के बाद कामातुर हो जाता है, आप उसे कैसे सन्यासी कहेंगे? वह कैसे सन्यासी हुआ। केश रखने से ही सन्यासी हो गया?

इसलिए गृहस्थ व्यक्ति भी सन्यासी है और सन्यासी व्यक्ति भी गृहस्थ है और गृहस्थ व्यक्ति भी गृहस्थ नहीं है और सन्यासी व्यक्ति भी सन्यासी नहीं हैं। दोनों एक ही जगह जलते हैं, एक ही प्रकार की लकड़ियों से जलते हैं और एक ही जगह जाते होंगे। या कब्र में उसे गाड़ देते हैं, या नदी में प्रवाहित कर देते हैं या लकड़ियों में जला देते हैं।





तीनों में से कोई एक स्थिति बनती है क्योंकि कोई मरने के बाद उसको रखता ही नहीं।

पत्नी कहती है कि तुरंत ले जाओ और जला दो। मुश्किल से चार घंटे भी आंगन में रख दे तो बहुत बड़ी बात है हाँ, अंतिम दर्शन करने के लिए बर्फ की सिल्लयां चारों तरफ रख देते हैं क्योंकि नेताजी हैं उनको चौबीस घंटे रखना ही पड़ेगा। तो वे रख देते हैं और २४ घंटे के बाद जला देते हैं। बस इतना ही डिफरेंस होता है। शरीर २४ घंटे नहीं रह सकता। चार घंटे बाद उसमें बदबू आने लग जाती है। आठ-दस घंटे बाद कीड़े पड़ने लग जाते हैं, चौबीस घंटे बाद उनको उठाने की किसी की हिम्मत नहीं होती। अब आप का शरीर कितना ताकतवान कितना क्षमतावान कितना संघर्षवान है, इसका आप निर्णय कर सकते हैं।

इस शरीर में ताकत नहीं है, और भय के अलावा इस जीवन में कुछ है ही नहीं, प्रारंभ से ही आपके मन में भय है, और जहां भय है वहां मृत्यु है ही, क्योंकि भय और मृत्यु एक ही चीज हैं।

...और कृष्ण भी हमें क्यों याद आ रहे हैं, मुझे क्यों याद आ रहे हैं? और मदनलाल जैसे क्यों नहीं याद आ रहे जो कृष्ण के साथ पैदा हुए थे। इतने कौरव पैदा हुए थे आप में भी कौरव होंगे, पांडव होंगे क्योंकि आपका भी जन्म तो बराबर होता ही रहा है या तो कौरवों की सेना में होंगे या पांडवों की सेना में होंगे। मगर आपका नाम मुझे याद नहीं कि द्वापर में आपका नाम क्या था, मगर कृष्ण का नाम याद हैं। इसलिए कि उन्होंने जिन्दगी के प्रारंभ से लगाकर अंत तक संघर्ष के अलावा, कुछ किया ही नहीं। सुख नहीं मिला उन्हें पूरी जिन्दगी में। सुख जैसी चीज उन्होंने देखी ही नहीं। पैदा होते ही कंस ने मारने की कोशिश की, दो महीने का था तो पूतना ने आकर मारने की कोशिश की, थोड़े से बड़े हुए तो बकासुर आया, फिर कंस ने एक और राक्षस को भेजा, फिर और किसी प्रकार से मारने का उपक्रम किया, कालिया नाग आया और उनको डसने की कोशिश की। आप मुझे बताइए कि जिन्दगी के प्रारंभ से लेकर अंत तक कृष्ण को कौन सा सुख मिला, एक दिन भी एक मिनट भी सुख नहीं मिला।

मगर कहां हारे जीवन में, कहां पराजित हुए? एक बार भी हारे नहीं, विजयी हुए और उन सारे संघर्षों का सामना करते हुए। इसलिए कृष्ण याद आ रहे हैं, इसलिए मदनलाल याद नहीं आ रहा है। इसलिए हेमराज याद नहीं आ रहा है।

...और राम ने कहां सुख देखा मुझे बता दीजिए। एक दिन भी सुख देखा हो तो मुझे बता दीजिए, एक दिन भी। पत्नी के साथ जंगल-जंगल भटके एक राजा के बेटे होकर भटके, पिता का दाह संस्कार नहीं कर सके, कैकेयी के षड्यंत्र का सामना करना पड़ा, कैकेयी ने षड्यंत्र किया कि भरत किसी तरह राज गद्दी पर बैठ जाए, और वे षड्यंत्र उस समय भी चलते थे आज भी चलते हैं और संघर्ष के अलावा राम ने कुछ देखा ही नहीं, इसलिए आज राम याद आ रहे हैं।

मेरा कहने का अर्थ यह है कि अगर हमारे जीवन में संघर्ष नहीं हैं तो हम मृत्यु

युक्त हैं, हममें और एक मेरे हुए व्यक्ति में डिफरेंस कोई नहीं है, इसलिए हम मेरे हुए व्यक्ति हैं और आश्चर्य यह है, कि मेरे हुए व्यक्ति हैं, और सांस ले रहे हैं। और ऐसे लोगों को देख कर बड़ा आश्चर्य होता है कि ये कैसे मृत व्यक्ति हैं, जो सांस भी ले रहे हैं और चल भी रहे हैं।

एक छोटा मोटा शिकारी था जिसको कोई खास बंदूक चलाना आता नहीं था। बेटे ने एक दिन कहा कि आप बहुत बड़े शिकारी हैं... उसने कहा - अरे शिकारी! मैंने एक गोली मारी और एक गोली से बीस बाघ समाप्त। शेर का शिकार करना कोई सीखें तो मुझसे सीखें।

तो बेटे ने समझा कि बहुत बड़े बहादुर का पुत्र हूं। उसने कहा, पिता जी! चलिए। तालाब के किनारे पहुंचे धूमते धामते। वहाँ ऊपर एक चील उड़ रही थी, एक कौआ उड़ रहा था।

बेटे ने कहा - आपने बाघ को मार दिया तो उस कोए को भी मार सकते हैं बंदूक की गोली से?

बाप ने कहा - यह दो मिनट का काम है। उसने बंदूक से गोली चलाई कौआ उड़ गया। बेटे ने कहा - कौआ तो मरा नहीं।

बाप ने कहा - यहीं तो विशेषता है कि गोली लगने के बाद भी मरा नहीं। आप देखिए लगी उसको, फिर भी उड़ता रहा। यह मंत्र-तंत्र है तुम नहीं समझ पाओगे। यह साधना है।

यह अपने बेटे को भुलावे में डालने के लिए इस्ती प्रक्रिया थी। उसको भयभीत करने की प्रक्रिया थी। उसको और गुमराह करने की प्रक्रिया थी। वह खुद तो गुमराह था ही, बेटे को भी गुमराह कर दिया और हम जीवन में यहीं करते हैं - खुद गुमराह होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं। इसके अलावा आप कुछ करते नहीं, कर नहीं सकते।

आप में अधिकांश जब मेरे पास आते हैं तो एक ही बात कहते हैं कि बहुत तनाव है, बहुत दुःख है, परेशानी है, बेटी कहना मानती नहीं, मेरे बेटे कहना मानते नहीं, मैं बीमार हूं, मुझे यह तकलीफ है, और इसके अलावा आप कुछ बात करते ही नहीं हैं; और मैं सोचता हूं कितना आश्चर्यजनक व्यक्ति है? मरा हुआ है, सांस भी ले रहा है और बात भी कर रहा है। ऐसे व्यक्ति इस पृथ्वी पर ही मिलते हैं, दूर जगह नहीं मिलते।

निर्भयता जो है वह जीवन की श्रेष्ठता, सत्यता है, प्रामाणिकता है और वे व्यक्ति जिंदा रहे, वे पशु जिंदा रहे, वे पक्षी जिंदा रहे, वे कीट पंतग जिंदा रहे, वे नभचर और जलचर जिंदा रहे, जिन्होंने संघर्ष करने की क्षमता रखी। जो संघर्ष करते रहे, स्ट्रगल करते रहे, वे ही बच पाएं।

और आप टालते रहते हैं कि जीवन में यह भी प्रॉब्लम नहीं आए, वह भी प्रॉब्लम नहीं आए। अमृतसर जाना नहीं है, गुरुद्वारे में माथा टेकना नहीं है क्योंकि कभी भी ए.के.४७ चल जाएगी।

...और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि एक.के.४७ की कोई गोली अभी तक आपके लिए बनी ही नहीं है। जब ऐसे कारखाने बने ही नहीं



३ जन्म की शरण

तो आपको लगेगी कहां से, और आप पहले से ही डर रहे हैं। गोली बनेगी एके ४७ में जाएगी फिर आपको लगेगी तब देख लेंगे।

अभी आप क्यों परेशान हो रहे हो, अभी आप क्यों तनावग्रस्त हो रहे हो?

मगर नहीं, आप कहते हैं, अमृतसर से गुजरना ही नहीं हमें, वहां रात को टिकना ही नहीं हमें, हमें तो सीधा जम्मू (तबी) जाना है तो वहीं जाएंगे, बीच में रुकना ही नहीं और अमृतसर आते ही आप बिल्कुल दुबक कर बैठ जाएंगे। दूर से ही मत्था टेक देंगे।

मैं ऐसा नहीं कह रहा कि हमें जाना ही चाहिए मैं ऐसा भी नहीं कह रहा कि आपको नहीं जाना चाहिए। मैं ऐसा कह रहा हूं कि आपके मन में जो भय है, यह मिटाना चाहिए और आपमें से अधिकांश व्यक्ति उस भय को लेकर मेरे पास आ रहे हैं, जो घटना घटी ही नहीं आपके जीवन में, उससे आप भय खा रहे हैं।

जब लड़का बिगड़ेगा तब बिगड़ेगा, अब आज से ही क्यों तनाव में है कि लड़का बिगड़ेगा, लड़का बिगड़ेगा। छः बजे आना चाहिए साढ़े छः बजे आना चाहिए और पैट पहननी चाहिए, जीन्स पहनना है।

कहना, नहीं मानता गुरुजी, आप सोच लीजिए कितनी परेशानी है और मेरी बेटी जो है वह सात बजे आती है और उसकी आंखें कह रही हैं कि वह ठीक नहीं है, कहीं गड़बड़ जरूर है, अब गुरुजी आप खुद सोच लीजिए।

अब गुरुजी क्या सोचेंगे? बेटी तुम्हारी। पांच नहीं, सात बजे आ रही है, अब गुरुजी बैठे बैठे क्या करेंगे? नहीं गुरुजी आप ठीक कर दीजिए।

यह अपनी स्थिति आपके लिए मुझे बताना स्वाभाविक है। आपका विश्वास है कि ये गुरुजी हैं और मेरी समस्या तो दूर करेंगे। और समस्याओं को दूर दैविक साधना और सहायता के माध्यम से किया जा सकता है। जहां दैविक बल हो, उससे ऐसा किया जा सकता है। मनुष्य के बल से नहीं।

जब देवताओं का बल हमारे साथ हो तो हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं, तब हम निर्भिक बन सकते हैं, युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते हैं, पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, धनवान बन सकते हैं और जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो हम चाहते हैं।

आप जीवन में धन चाहते हैं और मैं कहता हूं कि आपको धनवान होना चाहिए। मैं कहता हूं कि इतना अधिक होना चाहिए कि आप गिनते-गिनते थक जाएं।

मैं बुद्ध नहीं हूं कि आपको कहूं कि धन त्याग दो, बुद्ध शंरणं गच्छामि संघं शरणं गच्छामि। न मैं महावीर स्वामी हूं कि सब कपड़े खोल देना चाहिए। मैं ऐसी सलाह आपको नहीं दे रहा हूं।

मैं कह रहा हूं आपके पास बहुत वैभव होना चाहिए बहुत मकान होने चाहिए, ऊँची गाड़ी होनी चाहिए, आपको धनवान होना चाहिए क्योंकि आप मेरे शिष्य हैं, धन होना चाहिए, यश होना चाहिए, मान, पद प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य होना चाहिए और वह सब कुछ दैविक बल से प्राप्त हो सकता है, आपके प्रयत्नों से प्राप्त नहीं हो सकता। आपके प्रयत्नों से प्राप्त होता तो अब तक आप करोड़पति होते, क्योंकि प्रयत्न करने में आप कसर रखते ही

नहीं। दिन भर परिश्रम करते रहते हैं। प्रत्येक प्रकार से प्रयत्न करते हैं छल, बल, ताकत, युक्ति, चतुराई, चालाकी, मक्कारी, धूर्तता, समझदारी - कोई चीज़ छोड़ते नहीं आप।

मगर उसके बावजूद भी आप उतनी ही तकलीफ में बंधे रहते हैं। चाहे तकलीफ फाइनैशीयल हो, चाहे पुत्र की हो, चाहे पत्नी की, चाहे पत्नी की। जिसे आप शादी कर के लाए वही आपके कंट्रोल में नहीं है। डेटिंग वेटिंग करके लाए होंगे, बगीचे में गए होंगे, दो चार महीने डेटिंग की होंगी उसने आपको परखा होगा, आपने उसे परखा होगा लेकिन फिर भी घर लाते ही झगड़ा शुरू और जिन्दगी भर फिर लड़ाई झगड़ा चल रहा है आपका।

यह हुआ क्या? कैसे हो गया?

इसलिए हुआ कि वह भयभीत है कि अगर यह मर गया तो मैं कैसे रहूँगी? अभी तक मकान भी नहीं बनाया अभी तक किराए के मकान में रह रहा है, और मरेगा जरूर यह, तो फिर मैं कहां जाऊँगी, यह गड़बड़ हो जाएगा, मैं करूँगी क्या?

वह भयभीत इसलिए है वह कहती है - अच्छा चलो एक मकान तो बनाओ, अरे रहने के लिए कोई स्थान भी नहीं है, तुम कैसे आदमी हो? लोगों ने देखो, कितने मकान बना लिए, मदनलाल ने बना दिया तुम ने बनाया ही नहीं। वह भयभीत आपसे नहीं है, वह भयभीत आने वाली स्थिति से है।

पति भी भयभीत है कि अगर बीमार पड़ गई तो अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ेगा, डॉक्टर की फीस १२०० रुपये है, फिर दंबा, क्या करें?

वह पत्नी को बहकाता रहता है कि तुम्हें कोई तकलीफ नहीं है, छोटा-मोटा बुखार है आता ही रहता है और मर भी जाएगी तो कोई फर्क नहीं होगा मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि दूसरी शादी नहीं करूँगा। बस भरोसा रख मेरे ऊपर।

एक पत्नी मरने लगी तो पति का हाथ पकड़ कर कहा - देखना, मैं मर जाऊँगी, घंटा-डेढ़ घंटे से ज्यादा जिंदा नहीं रह पाऊँगी। पति ने कहा - मुझे लग रहा है तेरी अंतिम सांसें चल रही हैं, तू मर जाएगी ऐसा लग रहा है और अभी तो उम्र ही तेरी ४०-४२ साल की है।

पत्नी ने कहा - आप मेरा कहना मानेंगे?

पति ने कहा - तेरी अंतिम इच्छा है जरूर पूरी करूँगा।

पत्नी ने कहा - आप दूसरी शादी कर लेना, बच्चे छोटे-छोटे हैं।

पति ने कहा - चलो तुम्हारी बात मान लूँगा पर छः महीने पहले विश्राम करूँगा, पहले आराम करूँगा, बहुत दुःखी हो गया हूँ मैं तुम्हारे साथ रहते-रहते। जब छः महीने विश्राम कर लूँगा तो फिर शादी कर लूँगा। अभी छः महीने तक तो मुझे माफ करना, उसके बाद देख लूँगा।

आप खुद सोचिए कि पति कितना, दुखी और तकलीफ में है और आपने, कितना उसे कोंच, कोंच कर दुःखी कर दिया है। और उसने भी आपको भयभीत कर दिया है। और आप दोनों ने मिलकर बेटे को क्या दिया है? मैं शादी को भयपूर्ण घटना नहीं कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ।

'निर्भयो जायते पुत्र निर्भयो जायते सदः'

३१ 'फरवरी' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '15' ५०

जो निर्भय होता है वह जीवित हो सकता है और निर्भय तब आप हो सकते हैं, जब आपके सामने संघर्ष आएंगे। और संघर्ष तब आएंगे जब आप बुलाएंगे संघर्ष को। टेन्शन आए, बाधाएं आएं, परेशानियां आएं, कठिनाइयां आएं और नहीं हो पाएं तो गुरु के पास जाएं और पूछें, कौन सी साधना है, कौन सी तरकीब है, कौन सा मंत्र है, दैविक बल हम कहां से प्राप्त करें, जिसके माध्यम से हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी के यहां नौकर हैं और तीन, चार, आठ हजार रूपये तनख्वाह लें रहे हैं, आप ले रहे हैं तोताराम जी से तोताराम जी क्या महान हो गए?

आपके लिए इसलिए महान् हो गए कि उनके पास एक लाख रूपये हैं, आपके पास नहीं हैं। इतना ही तो डिफरेंस है, इसलिए कि आप तोताराम जी से ले रहे हैं। आप हरिराम से ले ही नहीं रहे हैं। जिसके पास खाने को ही नहीं है वह आपको कहां से देगा? उस देवता से हम प्राप्त कर पाएंगे, जिसके पास वह शक्ति है।

अगर लक्ष्मी है तो हमें धनवान बनाने में वह क्षमतावान हो सकती है क्योंकि उस चीज में वह सिद्धहस्त है। अब उस देवी का बल प्राप्त कैसे करें?

वह आपको ज्ञान नहीं है और वह आपको ज्ञान नहीं है इसलिए आप भयभीत हैं और जिस दिन आपको दैविक बल प्राप्त हो जाएगा तब आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाएंगे। पर बिना दैविक बल के सम्पन्न नहीं हो पाएंगे।

जय हनुमान झान गुण सागर, जय करीश...

इस प्रकार हनुमान जी आपके शरीर में आ ही नहीं सकते और हनुमान जी कुछ कर ही नहीं सकते क्योंकि आपके लिए कौन सा मंत्र, कौन सी विधि, साधना उपयुक्त है जिसके माध्यम से आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं, यह आपको ज्ञात नहीं है। इसलिए ज्ञात नहीं है कि आपके पास कोई गुरु नहीं हैं।

...और दस लाख में से एक गुरु होता है यह मैं आपको बता देता हूँ। दस लाख व्यक्तियों की गणना करें तो एक गुरु निकलता है, बाकी तो पंडे निकलते हैं, बाकी पुजारी निकलते हैं, बाकी पूजा करने वाले निकलते हैं बाकी, घंटा घड़ियाल बजाने वाले निकलते हैं। वे गुरु नहीं हो सकते, और थोक के भाव लेने हैं तो गाढ़ी से उतरिए हरिद्वार आप और पांच सौ पंडित एकदम से घेर लेंगे आपको।

क्या वो गुरु हैं?

क्या तो गऊ दान पांच रूपये में करा देते हैं, और मैं तो गाय की पूँछ का एक बाल भी नहीं खरीद सकता पांच रूपये में। अब पांच रूपये मैं गऊदान कहां से करूँगा। मगर वे करा देते हैं दो रूपये में भी करा देते हैं, मैंने भी कराया है।

जब मेरी मां की मृत्यु हुई तो मैं गया तो मुझे पता था यहां गऊदान कराना ही पड़ेगा, यहां वैतरणी पार मां को करवाना ही पड़ेगा क्योंकि वो कहते हैं कि वैतरणी पार नहीं कराया तो मां यहीं टिक जाएगी। मुझे पता था यह सब फँड है, छल है, झूठ है, उनको कुछ ज्ञान है ही नहीं।

हरिद्वार में जाते हैं तो पहली बात यहीं पूछते हैं कोई मर गया है क्या? मैंने कहा, मेरी मां मर गई।

उसने कहा - हां ठीक है, तुम्हारा पंडा मैं हूँ।

अब कोई प्रमाण है तुम्हारे पास मैं कैसे मानू तुम पंडे हो, यहां तो इतनी भीड़ है पंडों की। कोई धोती खींच रहा है, कोई कुर्ता खींच रहा है, तुम हो तो कोई प्रमाण तो दो।

उसने कहा - चलो।

तुम उसके पीछे चलते हो और वह बही निकालता है और पढ़ता है कि तुम्हारे दादा जी आए थे और दादाजी का नाम यह था। आप संतुष्ट होते हैं कि दादाजी ने सोने की थाली दी।

अब तुम सोचते हो दादाजी के पास पीतल के बर्तन तो थे नहीं, वो तो तकलीफ पा रहे थे तो सोने की थालियां कहां से दे दीं?

मगर पंडे को इसलिए कहना पड़ रहा है, कि यह भी कुछ देतो सही। दादाजी ने तो सोने की थाली दी नहीं पर यह तो पांच सौ रुपये दे।

वह इसलिए कहता है, दादाजी आए थे, सोने की थालियां दीं।

हमारे हिस्से में तो आई नहीं मेरे भाई के हिस्से में भी नहीं आई दादाजी सब कुछ यहां देकर समाप्त हो गए। आश्चर्य है घोर आश्चर्य है।

पंडा कहता है - तुम नास्तिक न बनो, तुम नास्तिक हो बच्चे।

मैं आस्तिक हूँ, नास्तिक हूँ और मुझे अपने दादाजी के बारे में नॉलेज है, सोने की थाली क्या पीलत के बर्तन भी नहीं थे उनके पास। यह मुझे बहुत अच्छी तरह से ज्ञात है।

पंडा कहता है, अच्छा चलो, छोड़ो तुम, मरा कौन हैं?

मरी तो मेरी मां हैं।

चलो नीचे नदी पर फिर।

वहां गए तो कहता है - तुम्हें गऊ दान कराना पड़ेगा, तुम्हारे पास पैसे कितने हैं?

पैसे तो मेरे पास थे। मैं असत्य भी नहीं बोल सकता था तो सत्य भी नहीं बोल सकता था। पंडे थे पांच सौ और मैं था अकेला, मुझे पकड़ते, बांधते और सीधा माताजी के पास भेज देते गंगाजी में फेंक कर के।

मैंने कहा - मेरे पास पैतालीस रुपये हैं।

पंडा बोला - कंजूस, पैतालीस रुपये लेकर मां का श्राद्ध कराने आया है। पैतालीस रुपये में होगा क्या?

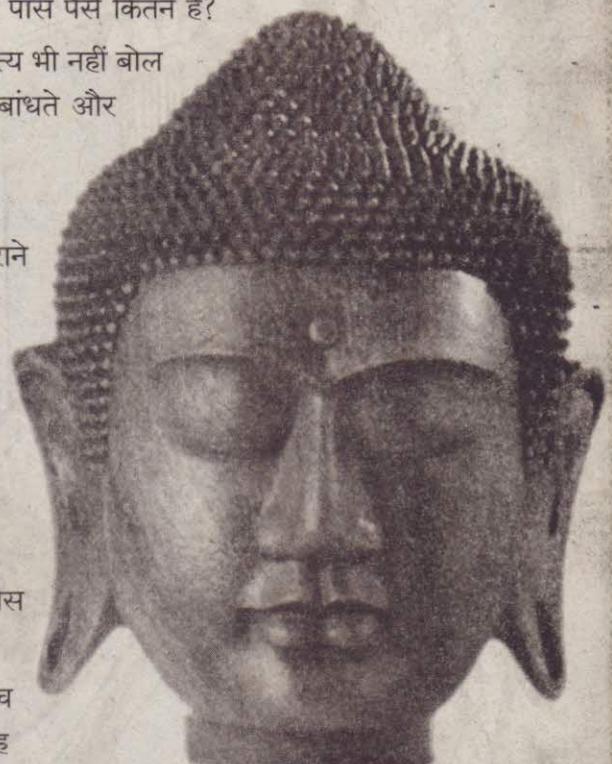
मैंने कहा - मैं तो नौकरी से कमाता हूँ, बस इतने ही हैं और इनमें वापस जाने का किराया भी बाकी है। टिकट लिया नहीं मैंने, कोई रिजर्वेशन नहीं है मेरा।

कितना किराया लगता हैं?

मैंने कहा, पंद्रह रुपये।

उसने कहा - अच्छा पैतालीस में से पंद्रह गए, बचे तीस। तीस रुपये ला, मैं गऊ दान करा देता हूँ।

मैंने कहा - तीस कैसे दे दूँ? सराय के रुपये देने बाकी हैं, पांच रुपये सराय वाले को देने हैं, फिर शाम को रोटी खानी है, सुबह



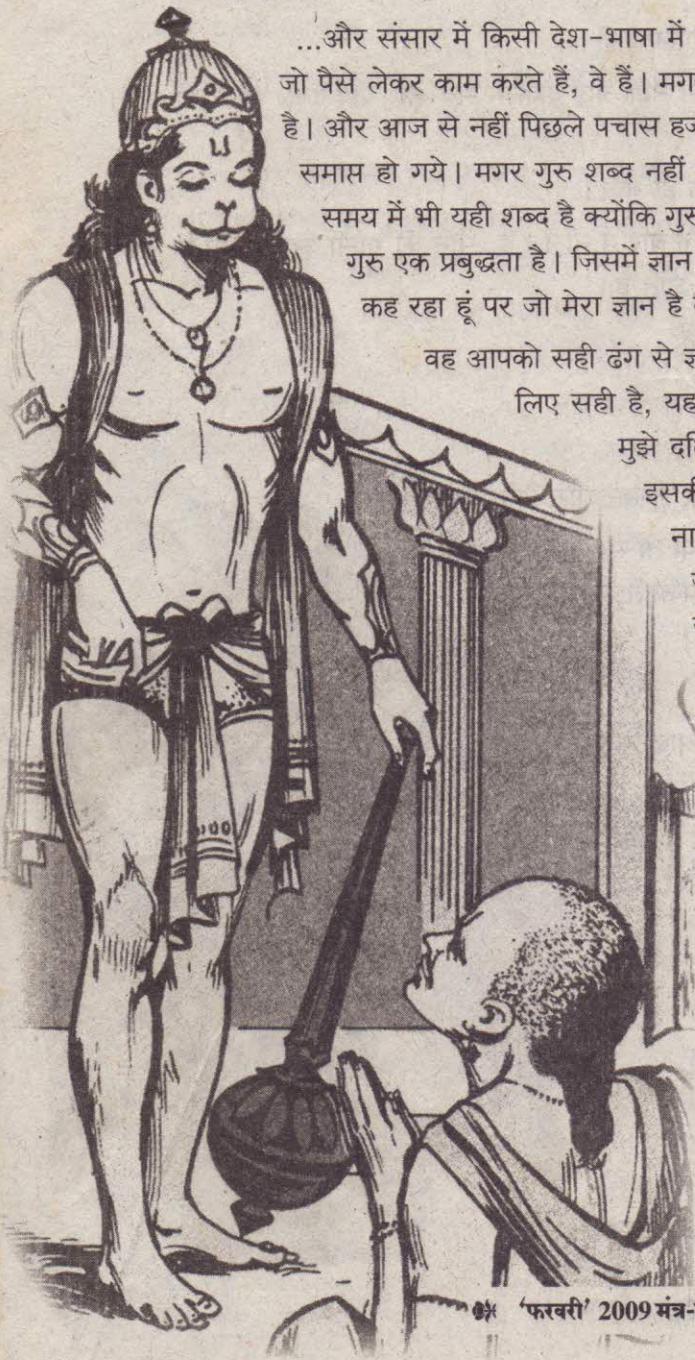
भी रोटी खानी है, रिक्षा करके स्टेशन जाना है।

उसने कहा - यह कैसा कंजूस है। दिन भर में पहला तो यजमान मिला, पहला ही कंजूस। अब इसके पास बस पांच रुपये बचते हैं। अच्छा ला, पांच रुपये ला।

मैंने कहा पांच रुपये देने में मुझे तो कोई आपत्ति है नहीं, मगर सुबह मेरा एक कुर्ता गुम गया, अब कुर्ता नहीं है, आप सोचिए, क्या पहन कर जाऊंगा? बाजर में तीन रुपये में कुर्ता आता है।

उसने कहा अच्छा ला, दो रुपये ला, तुम्हारी मां को वैतरणी पार करा दूँगा।

अब दो रुपये में मेंढक भी नहीं आता, और वह दो रुपये में गाय खरीद कर वैतरणी पार करा देगा। वे आपके गुरु हैं। वे तिलक लगाए हुए बस बैठे हैं और वे गुरु नहीं हैं तो आपको ज्ञान कहां से दे पाएंगे? इसलिए मैंने कहा कि दस लाख में से कोई एक गुरु होता है। यदि आपको जीवन में ऐसे गुरु मिल जाएं तो यह आपका सौभाग्य ही होगा।



...और संसार में किसी देश-भाषा में गुरु शब्द कहीं है नहीं, टीचर शब्द है, मास्टर शब्द है, जो पैसे लेकर काम करते हैं, वे हैं। मगर गुरु शब्द नहीं है। यह गुरु परंपरा केवल भारत में ही है। और आज से नहीं पिछले पचास हजार वर्षों से हैं। यह शब्द नहीं मर पाया, बाकी सब शब्द समाप्त हो गये। मगर गुरु शब्द नहीं मर पाया। वशिष्ठ के समय भी यही शब्द था आज के समय में भी यही शब्द है क्योंकि गुरु कोई व्यक्ति नहीं हैं गुरु एक ज्ञान है, गुरु एक चेतना है, गुरु एक प्रबुद्धता है। जिसमें ज्ञान की प्रबुद्धता है वह गुरु है। मैं तुम्हारा गुरु हूँ मैं यह नहीं कह रहा हूँ पर जो मेरा ज्ञान है वह आपका गुरु है।

वह आपको सही ढंग से ज्ञान दे पाएगा, चेतना दे पाएगा कि यह मंत्र है जो तुम्हारे लिए सही है, यह साधना सही है। गुरु ही तुम्हें बताएगा और कहेगा तू मुझे दक्षिणा चढ़ा, न चढ़ा, चरण स्पर्श कर या नहीं कर, मुझे इसकी जरूरत नहीं है, पैर पर जोर से सिर पटकेगा तो नाड़ियां आगे सरकेंगी, अपनी खोपड़ी मेरे पैरों में रखना जरूरी है मगर मैं जो साधना दूँगा वह दैविक बल के लिए जरूरी होगा।

ब्राह्मण, आपको ज्ञान नहीं दे सकते सारे ब्राह्मण, दस पंद्रह को छोड़कर कहते हैं कि ग्रहण बहुत खराब है ग्रहण काल में बाहर नहीं जाना चाहिए, ग्रहण काल में खाना नहीं खाना चाहिए, मटकों का जल फेंक कर मटके उलटे रखने चाहिए, ग्रहण समाप्त होते ही स्नान करना चाहिए, उसके बाद सब काम करना चाहिए।

वास्तव में ग्रहण कोई खराब शब्द है ही नहीं, मगर बाकी सारे गुरु उल्टा कहते हैं और आपके परिवार वाले भी ग्रहण को बुरा मानते हैं क्योंकि उन्होंने अपने बड़ों से यही सीखा, और आप भी यही कहते हैं अपने बेटे को कि ग्रहण काल में कुछ नहीं करना चाहिए, ग्रहण काल खराब हैं क्योंकि राहु आता है और सूर्य को मुँह में डाल देता है, डालता है तो ग्रहण हो जाता है।

इतना बड़ा सूर्य उसको राहु कैसे मुंह में डालेगा मेरी समझ में नहीं आता। आपकी समझ में शायद आ रहा होगा पर मेरी समझ में नहीं आता। साइंस इस बात को स्वीकार नहीं करता।

मगर गीता में कृष्ण कह रहे हैं कि ग्रहण से श्रेष्ठतम कोई समय है ही नहीं, अद्वितीय समय है, एक समय है कि उस समय जो कुछ भी किया जाए उसमें सफलता मिलती ही है। और इसीलिए महाभारत युद्ध ठीक उस समय शुरू हुआ जब ग्रहण काल था और पांडव विजयी हुए। पांडवों ने कृष्ण से कहा, शंख बजा दें, युद्ध आरंभ कर दें। कृष्ण ने कहा - अभी नहीं, अभी ठहर जाओ।

पांडवों ने कहा - ठहर जाओ? कौरव सामने खड़े हैं, तलवार लिए खड़े हैं, अनके शंख बज रहे हैं भीष्म तैयार खड़े हैं और आप कहते हैं ठहर जाओ?

कृष्ण ने कहा - अभी ठहर जाओ। अभी नहीं क्योंकि

'कालोद्यं निर्विदा विपुला च लक्ष्मी।'

काल क्षण अपने आप में बहुत मूल्यवान है। मैंने भी थोड़ी देर पहले कहा कि मैं दस मिनट बाद प्रयोग कराऊंगा। आपने सोचा, गुरुजी को कोई काम होगा अंदर क्योंकि आप तो तर्कवान हैं न, कुछ न कुछ सोचा ही होगा।

अब मेरे साथ तो कमरे में कोई था ही नहीं, बस बैठा था और दस मिनट बाद इसलिए आया कि प्रयोग के लिए वह समय उपयुक्त हो, जहां आपको लाभ मिल सके।

जब राम-रावण युद्ध हुआ तब भी राम ने ज्योही तीर संधान किया तो हुनमान ने कहा, महाराज! ठहर जाइए। युद्ध का अभी समय नहीं आया है। युद्ध में यदि विजय प्राप्त करनी है तो आपको रुकना पड़ेगा और मैं तो सेवक हूँ, मैं आज्ञा तो नहीं दे सकता, मैं तो विनम्र निवेदन कर सकता हूँ मगर आप विश्वामित्र से पूछिए कि यह समय उपयुक्त है? आप ध्यान में अपने गुरु को लाइए, और उनको आज्ञा चक्र में स्थापित करिए।

यह सब बात इसलिए समझा रहा हूँ कि जब राम कर सकते हैं तो आप भी आज्ञा चक्र में गुरु को स्थापित कर सकते हैं। जब राम अपने गुरु को आज्ञा चक्र में स्थापित कर आज्ञा ले सकते हैं तो आप भी ले सकते हैं। राम में और आप में कोई अंतर है ही नहीं! जहां तक मैंने सुना है उनके दो हाथ ही थे, दो पांव थे, दो आंखें थीं, दो कान थे। बीस या पचास हाथ उनके नहीं तो आपके भी नहीं हैं।

जन्म से कोई महापुरुष होता ही नहीं, आज तक नहीं हुआ। वे सब आपके जैसे ही थे, अपने कार्यों से, संघर्ष से राम, कृष्ण, बुद्ध और चैतन्य बने। यदि आपमें संघर्ष है तो आप राम बन सकते हैं, बुद्ध बन सकते हैं चैतन्य बन सकते हैं और जीवित रह सकते हैं दो हजार पांच हजार साल तक भी, यदि आप में संघर्ष करने की क्षमता है, यदि आप निर्भीक हैं और चुनौतियों को सामने बुलाते हैं, हर समय चुनौतियों का



सामना करते हैं, प्रॉब्लम आती हैं तो उसे फेस करते हैं। यदि आपमें यह भावना, यह क्षमता है तो आप जीवित रह सकते हैं, संघर्षशील हो सकते हैं, और सफलता प्राप्त कर सकते हैं और उसके लिए दैविक बल जरूरी है।

राम को भी विश्वामित्र की जरूरत थी। ...और जब राम ने उनसे पूछा तो “थोड़ी देर बीत जाए उसके बाद तुम तीर संधान करना।”

अब कहां विश्वामित्र ठेठ अयोध्या के पास एक आश्रम में और कहां राम, ठेठ दक्षिण में रामेश्वरम् के पास में और उसके भी आगे। मगर वहां से भी उनका आपस में संचार होता रहा। आप भी कहीं भी हों, चाहे यहां हों, चाहे दो हजार मील दूर हों आपके आज्ञा चक्र में भी गुरु स्थापित हो सकते हैं और गुरु बता सकते हैं और आप गुरु की आज्ञा प्राप्त कर सकते हैं, गुरु आपको गाइड कर सकते हैं और आप गुरु से गाइड हो सकते हैं यदि आपका गुरु से अटैचमेंट है, यदि आपको विश्वास है और यदि आपको गुरु में विश्वास है, उनकी दी हुई साधनाओं में विश्वास है, तो फिर देवता भी आपको जीवन में सफलता दे सकते हैं और आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

और विजय का मतलब है कि जो आपके जीवन में समस्याएं हैं उन पर सफलता प्राप्त होनी चाहिए। अभी वह क्षमता प्राप्त हुई नहीं है आपको, क्योंकि उस दैविक बल को प्राप्त नहीं कर पाए आप, दैविक बल को छोड़ो गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए आप। जब गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए तो देवता कहां से आपके जीवन में आ पाएंगे?

इसलिए आपको विजय की जरूरत है, आपको संघर्ष करने की जरूरत है, आपको निर्भय होने की जरूरत है आपको निःदर होने की जरूरत है और आपकी जो भी इच्छा है उसको पूरा करने की जरूरत है और प्रत्येक व्यक्ति के मन में इच्छा रहनी चाहिए क्योंकि

‘इच्छा विहीनः पुशः’

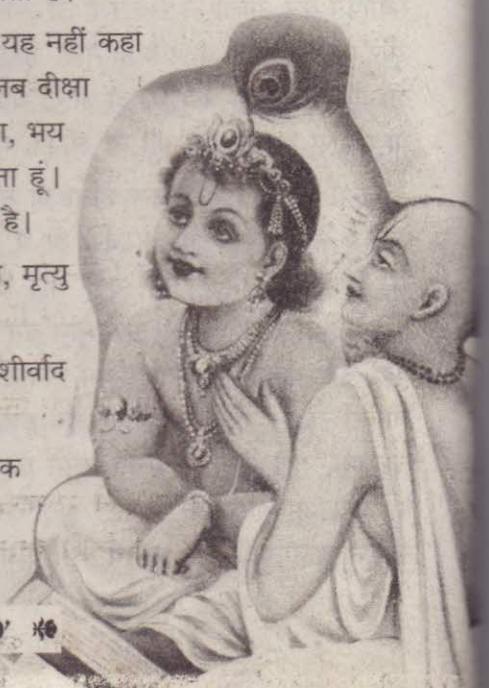
जिसकी इच्छा है ही नहीं, वह तो मरा हुआ है, आपमें इच्छा ही नहीं है, संघर्ष करने की भावना ही नहीं है और जब इच्छा नहीं होती तो आदमी मर जाता है, जिंदा होते हुए भी मर जाता है।

सन्न्यासी को जब दीक्षा दी जाती है तो कहा जाता है - जा मर जा यह नहीं कहा जाता तू सुखी रह सम्पन्न रह सफल हो। ऐसा आशीर्वाद नहीं देते हैं। जब दीक्षा देते हैं तो कहते हैं - तू मर जा। आज तक जितना तुम्हारे अन्दर डर था, भय था, समस्याएं थीं, बांधाएं थीं, उन्हें मार देता हूं, मैं तुम्हें नया जन्म देता हूं। आज तुम्हें नवीन चेतना दे रहा हूं, आज से तुम्हें नवीन तरीके से काम करना है।

सन्न्यासी को भी जब गुरु दीक्षा देता है तो अंत में यही कहता है, जा, मृत्यु को प्राप्त हो जा।

और आप सुनेंगे तो कहेंगे - यह अच्छा है गुरु जी! आपको अच्छा आशीर्वाद देना चाहिए कि लखपति हो, करोड़पति हो।

मर जाने का मतलब है कि आज तक का तुम्हारा जीवन जितना डरपोक था गंया बीता था, घटिया था, वह समाप्त हो जाए। आप नए मनुष्य के रूप में जन्म ले सकें, आज से आप नए बन सकें; नवीनता का प्रारंभ हो



सके, नवीनता का संचार हो सके। जैसे सूर्य पर ग्रहण लगता है वैसे आपके ऊपर भी ग्रहण लग गया है भय का, डर का, चिंताओं का, बाधाओं का, अड़चनों का, कठिनाइयों का। यह सब दूर हो सके और सूर्य की भाँति आप चमक सकें, रोशनी कर सकें, पूरे संसार में आपका नाम हो सके।

ऐसा तब हो सकेगा, जब आपके पास दैविक बल होगा और दैविक बल तब हो पाएगा जब आप गुरु के सान्निध्य में हो सकें, और गुरु का सान्निध्य तब हो पाएगा जब गुरु का आप पर विश्वास हो पाएगा और गुरु का विश्वास तब हो पाएगा जब आप उन पर पूर्ण विश्वास कर पाएंगे।

इसलिए जीवन में आप संघर्षशील बनें, विजयी बनें और मैं कह रहा हूं आपके पास इच्छाएं होनी चाहिए, रोज नयी इच्छाएं होनी चाहिए और प्रत्येक इच्छा पर विजय प्राप्त करें आप। एक साल में होगी, दो में होगी या दस में होगी। मगर इच्छाओं पर विजय प्राप्त होनी ही चाहिए। जहां भी कृष्ण हैं वहां विजय है - ऐसा गीता में कहा गया है।

जब गुरु हैं, वहां विजय होगी ही होगी। क्योंकि जब गुरु होगा तो एक भय का संचार मिटेगा। और गुरु प्राप्त होगा तो दैविक बल प्राप्त होगा क्योंकि गुरु समझा पाएगा कि आपका जीवन क्यों बना है? वह बता पाएगा आपके लिए कौन सी साधना जरूरी है और इसके लिए गुरु शिष्य के बीच एक एग्रीमेंट होना चाहिए विश्वास का, क्योंकि यह चीज तर्क की नहीं है, यह श्रद्धा की है। तर्क में तो न मैं आपसे जीत सकता न आप मुझसे जीत सकते। यह चीज तर्क की नहीं है, श्रद्धा की है।

जब आप ने मान लिया कि यह व्यक्ति सत्य बोल रहा है और मेरा हितचिंतक है तो आपको विश्वास में लेना पड़ेगा। आप शादी कर के आते हैं, उस अनजान लड़की से जिसे आपने देखा नहीं, और सत्रह साल की लड़की पहली बार आपके घर आती है, उससे कोई परिचित भी नहीं है, अभी कोई उसे जानता भी नहीं, और एकदम से संदूक की चाबी उसे दें देते हैं यह क्या? आप पढ़ासी को इतने साल से जानते हैं, उसे देते नहीं मगर उसे क्यों दे देते हैं?

क्योंकि आपको विश्वास है कि यह पैसे बरबाद नहीं करेगी। विश्वास एक क्षण में पैदा हो गया, और जहां विश्वास नहीं होगा, वहां रात को भी चाबी तकिए के नीचे रखेंगे आप।

विश्वास गुरु के प्रति होना चाहिए, अपने प्रति होना चाहिए, संघर्षशील होना चाहिए और आप जीवन में सफलता प्राप्त कर पाएं और निश्चय ही आप जीवन में विजयी हो पाएं, दैविक बल प्राप्त कर पाएं, पूर्ण रूप से सफल हो पाएं ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद दे रहा हूं।

- सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी
निखिलेश्वरानन्द जी

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर,
आप पार्वते अद्वितीय और विद्युष्ट उपहार

आदित्य सूर्य चंद्र

रविवार के दिन साथक प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर लें। उसके पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुख कर एक तोंबे के पात्र में शुद्ध जल भर उसमें आदित्य सूर्य यंत्र रख दें। इसके पश्चात् निम्न मंत्र की 1 माला जप करें।

मंत्रः // ॐ हां हौं हौं सः सूर्याय नमः //

मंत्र जप के पश्चात् पात्र में सूर्य यंत्र निकाल कर जल सूर्य को अर्घ्य कर दें। ऐसा चार रविवार करने के पश्चात् सूर्य यंत्र को जल में समर्पित कर दें।

भीतर जाग्रत् सूर्य तत्त्व का है, नाभि चक्र, सूर्य चक्र का उद्गम स्थल है, और यह ज्ञानेतर नन के संस्कार तथा चेतना का प्रधान केन्द्र है, शक्ति का स्रोत बिन्दु है। साधारण मनुष्यों में यह तत्त्व सुप्त होता है, न तो इनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही यह इसका लाभ उठा पाता है। इस तत्त्व को अर्थात् भीतर के नाणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत् करने के लिए बाहर के सूर्य तत्त्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का चोत है, और इसको जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है, और जब यह तत्त्व जाग्रत् हो जाता है, तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास जा ही नहीं सकती हैं।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिजेन्ट या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 258/- + 45/- postage
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

तंत्र में संकेतों का क्या तात्पर्य है?
तंत्र में शर्ति पूजा की प्रधानता क्यों है?

दक्षिणचार और वामाचार क्या है?

चित्ता, श्मशान साधना का क्या तात्पर्य है?
तंत्र में प्रिकोण और बिन्दु क्या है?

तंत्र में पुरुष और स्त्री एकान्त साधना क्यों करते हैं?
तंत्र में पंचमकार का क्या अर्थ है?
तंत्र के गुरु का क्या महत्व है?



इन्हीं प्रश्नों के आप उत्तर जानता चाहते हैं
तो पढ़िये तंत्र के सम्बन्ध में यह आलेख



तंत्र

छां छाल्डविळ छाल्डग

सृष्टि विकास के क्रम में मानव ज्यों ज्यों विकसित होता का मानव है, फिर भी रह-रह कर उसके मन में एक अजीब गया, तदनुरूप उसकी आवश्यकताएं एवं महत्वकांक्षाएं भी तरह की उत्कंठा अनायास जग जाती थी। ... और शायद बढ़ती चली गई। वह शाश्वत सुख शांति के एक ऐसे स्रोत का इसी प्यास ने उसे आध्यात्मिक जगत की ओर अभिमुख होने अन्वेषण कर रहा था जिसे प्राप्त कर लेने पर जीवन की सभी को बाध्य किया। मानव समाज में देवी देवता पूजन की प्रथा अभिलाषाएं पूर्ण हो जाती हैं और जन्म जन्मातर की प्यास का प्रारंभ इसी का परिणाम है।

बुझ जाती है। यद्यपि तब भी मानव भौतिक उपलब्धियों की वर्तमान युग में समाज में हम देवी देवताओं के जो रूप वास्तविकता के प्रति उतना ही निष्ठावान था, जितना आज देखते हैं अथवा उनकी आराधना की जो परिपाटी देखते हैं,

निश्चित ही प्रारंभिक युगीन परम्परा इससे भिन्न थी। यह तो मानव विकास के साथ-साथ विकसित प्रक्रियाओं की ही देने मनुष्य जल, सर्प, कच्छप, मत्स्य तथा वृक्ष आदि पदार्थों पर अपनी 'सजीवता' का आरोपण करता था, उन्हें पूजता था। आज भी जंगल, पर्वत के निवासी ऐसे देवताओं की पूजा करते हैं। भारत के ग्रामों एवं नगरों में रहने वाले आज के सभ्य लोगों में, कुछ परिवर्तित रूप में यह प्रथा आज भी जीवित है। एकान्त में किसी वट, पीपल या लकड़ी के वृक्ष को देखकर आज के सभ्य मानव में भी एक अजीब भाव का उदय होता है, जो निश्चित ही पूर्व संस्कार का परिणाम है। यहाँ मूल है, जहाँ शिव एवं शक्ति आदि को उत्पत्ति होती है।

शिव एवं शक्ति साधना का अस्तित्व आर्यों से भी पूर्व आर्योंतर जातियों में यहाँ विद्यमान था। सिन्धु घाटी की सभ्यता में इसका अस्तित्व प्राप्त होता है। आगे चलकर आर्यों ने भी इसे अपना लिया। भग और लिंग की पूजाएं आर्योंतर सभ्यता की वस्तुएं हैं, किन्तु आगे चलकर आर्यों में भी इसका आगमन हुआ। सिन्धु घाटी की सभ्यता में शक्ति पूजा विद्यमान थी। इसकी प्राचीनता का यह प्रमाण है। शिव के साथ जंगल, पर्वत, सर्प, बिच्छु, वटवृक्ष, बाघाम्बर एवं भूत प्रेतादि का सम्बन्ध उसी पुरातन एवं अविकसित युग के साक्षी है।

यहाँ भारत में शक्ति की विशेष महत्ता है। पुराणों के अनुसार वह भक्तों की रक्षा के लिए नाना रूपों में अवतीर्ण होकर दुष्टों का संहार करती है। मार्कण्डेय पुराण में तो इसकी प्रमुख चर्चा है। दुर्गा सप्तशती उसी से संकलित है। पौराणिक काल तक देवी को सम्पूर्ण देवताओं का मूल मान लिया गया है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव उसी के उत्पन्न होते हैं और अन्त में उसी में समा जाते हैं। पुराणों और महाभारत के पूर्व वैदिक काल में भी शक्ति का अस्तित्व है। ऋग्वेद में सरस्वती की प्रार्थना है। यजुर्वेद में उनकी आहुति दी गई है। अथर्वशीर्ष, श्री सूक्त और देवी सूक्त भगवती की ही प्रार्थना में हैं। देवी सूक्त में देवी ने स्वयं अपनी महत्ता का कथन किया है।

**अहं रुद्राय धनुरात्नोमि ब्रह्मादिवषे शर वा हन्त वा उ।
अहं जनाय समदं कूपोम्यहं द्यावा पृथिवी अविवेश॥**

अर्थात् - मैं रुद्र के लिए धनुष विस्तृत करती हूँ ताकि वे ब्रह्मादिवषों का नाश कर सके। मैं ही जनता के लिए संग्राम करती हूँ और पृथिवी एवं आकश में सर्वत्र अनुस्थूत हूँ। अथर्व वेद में 'अहं रुद्राभिः वसुभिः चरमि' आदि वाक्य शक्ति

पूजा के वैदिक कालीन अस्तित्व के परिचायक हैं। शाक्तों का मत है कि उपनिषद जिस ब्रह्म का आह्वान करते हैं वह शक्ति ही है। इसी शक्ति को भयकर, करुणामयी, दोनों रूपों में कल्पना की गई है। कालक्रम में शक्ति के इसी उभय स्वरूप को लेकर उपासकों में भी भिन्नता दृष्टिगोचर होती है।

उपासना के दो महत्वपूर्ण मार्ग हैं - वेद और तंत्र। वैदिक उपासना पद्धति में शक्ति सौम्यरूपा, करुणामयी और मद्य, मांस बलिदानादि से असंपृक्त है, जबकि तांत्रिक परम्परा में वह उग्ररूपा तथा मद्य, मांस, बलिदानादि में सम्पृक्त। वैदिक पद्धति में गायत्री पुरुष्चरण के साथ-साथ विद्युत सूक्त तथा मानसिक सूक्तों का पाठ करते हुए ब्रह्म की खोज करने वाले साधक को कहते हैं 'वेदोचारी'।

शाक्तधर्म के अनुसार तीन 'भाव' एवं सात 'आचार' पद्धतियां होती हैं जिन्हें दिव्य, वीर तथा पशुभाव एवं वेद, वैष्णव, शैव, दक्षिण, वाम, सिद्धांत एवं कौलाचार कहते हैं। 'भाव' का तात्पर्य होता है मानसिक विचार एवं तदनुसार आचरण 'आचार' कहलाता है। इन साधनों पर्यों पर गुरु स्वयं शिष्य की प्रतिभा, स्थमता, धैर्य एवं वैराग्य देखते हुए विशेष आचार पद्धति पर दैक्षित करते हैं क्योंकि भाव एवं आचार पद्धतियों के अनुसार साधन में भी महान अंतर होता है। उदाहरणार्थ, पशुभावी साधक रात्रि में उपासना नहीं करते जबकि दिव्य एवं वीरभावियों की साधनाएं रात्रि में हुआ करती हैं। शाक्त सिद्धांत के अनुसार उपरोक्त देव, वैष्णव, शैव तथा दक्षिण - ये चार आचार पशुभाव एवं प्रकृतिमार्गियों के लिए हैं और वाम सिद्धांत तथा कौलाचार वीर तथा दिव्य भावी निवृत्ति मार्गियों के लिए। इस प्रकार उभय मार्गियों के लिए साधना पद्धतियों का विभाजन पुरातन मनोविद्यों द्वारा किया गया।

वर्तमान समय में तंत्र साधनाओं में सर्वाधिक प्रचलित परंपरा है दक्षिणाचार एवं वामाचार की। इन्हीं को दक्षिण एवं वाम मार्ग भी कहते हैं। सामान्यतः लोग, जो तंत्र के वास्तविक, सांकेतिकार्थ से परिचित नहीं हैं वे दक्षिण और वाम शब्द का अर्थ लगाते हैं सीधा और उल्टा। सीधा अर्थात् सहज साधना एवं उल्टा अर्थात् नहाँ मद्य, मांस बलिदानादि का प्रयोग होता है।

ऐसे लोगों ने वाममार्ग की खुलकर निन्दा की है और कुछ लोगों ने तो वाममार्ग का दुरुपयोग कर उसे निन्दनीय साबित करने की भी कोशिश की है। वाममार्ग को आज अवैदिक, धृणित एवं असामाजिक साधना पद्धतियों के आधार स्तम्भ के रूप में जाना जाता है, जबकि सत्य कुछ और है। कुलार्णव तंत्र में वाममार्ग में प्रवेश पाने वाले साधकों के लक्षण को देखकर

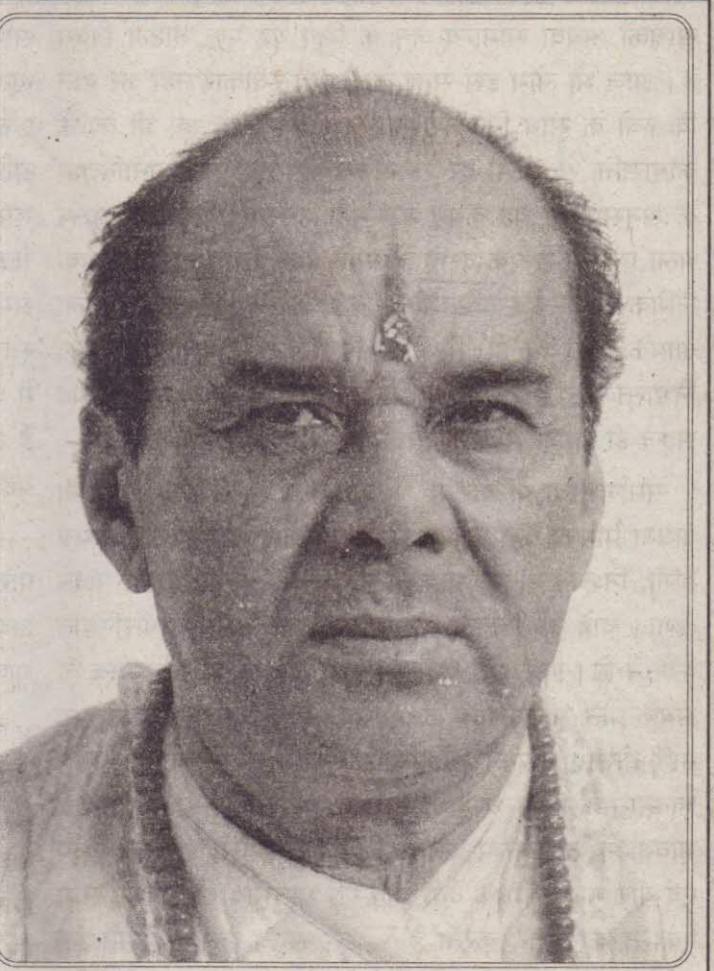
वर्तमान प्रचलित वाम शब्द के अर्थ के प्रति घोर आश्चर्य होता है। वहां स्पष्ट आदेश है - क्रोध, लोभ, मात्सर्य, चंचलता का त्याग कर, आसन, निद्रा एवं इन्द्रियों को जीतता हुआ, धृणा, लज्जादि पाशों को काट कर वाम मार्ग में प्रवेश करना चाहिए। ऐसे गुण लक्षण सम्पन्न व्यक्ति ही सच्चा वाममार्गी हो सकता है, न कि कामी। इसके अतिरिक्त जब हम

**परदव्येषु योऽन्धः परस्त्रीपुन्पुंसकः परापवादे
यो मूकः सर्वथा विजितेन्द्रियः तस्यैव ब्रह्मणस्यात्र
वामस्याधिकारिता ॥**

आदि विशिष्ट निर्देशों का अवलोकन करते हैं तो यह सहज स्पष्ट हो जाता है कि वाम मार्ग अपसव्य, धृणित एवं असामाजिक साधना पथ न होकर प्रशस्त, सत्य व श्रेष्ठ साधना पथ है। क्रग्वेद में 'वामनोस्तवर्वर्यमन् वामं वरुणं शस्यं। वाम ह्या वृणीमहे।' अर्थात् हे अर्थगम! हमें वाम दो, हे वरुण! हमें श्रेष्ठ गुम दो, हम वाम मांगते हैं इत्यादि उक्तियों को देखकर वाम नार्ग की श्रेष्ठता का सहज ही अन्दाजा लगाना जा सकता है।

तंत्र के उपासकों के लिए जिन गुह्य साधनाओं का उल्लेख आता है, उनमें कुछ प्रमुख साधनाएँ हैं - चिता, शव, श्मशान, शक्ति अथवा श्यामा साधना एवं पंचमकार।

इन विशेष साधनाओं के लिए स्थल एवं समय का बहुत ही में पीठ कहते हैं। वे पीठ हैं देवपीठ, चतुष्पीठ, श्मशानपीठ व श्यामपीठ। यंत्र, मंत्र, मंडल इनके प्रमुख साधन हैं। तंत्र में त्रिकोण का बहुत महत्व है। जब वह ऊर्ध्वमुखी होता है तब शिव का प्रतीक एवं अर्धमुखी त्रिकोणद्वय का समन्वय तंत्र करने का एक विकट साधन है। इस अवस्था में साधक को में अर्धनारीश्वर अथवा शिवशक्ति का प्रतीक माना जाता है। अत्यन्त सतर्कता के साथ साधना की शुरुआत करनी होती प्राचीन काल में भारत का भौगोलिक विभाजन भी शास्त्रों द्वारा त्रिकोणात्मक किया गया था। इस विभाजन में मुख्य त्रिकोण विन्दुओं को अश्वक्रान्ता, रथक्रान्ता, विष्णुक्रान्ता कहते हैं। विन्ध्याचल से चटगांव का क्षेत्र विष्णुक्रान्ता, विन्ध्याचल से तिब्बत तक रथक्रान्ता तथा दक्षिण भारत एवं जावा आदि द्वीप क्षेत्र अश्वक्रान्ता कहे जाते हैं। केन्द्र में तीन प्रदेश कांची, कामाख्या और कश्मीर माने जाते हैं। इन क्रान्ताओं में 64 तंत्र प्रचलित थे, जहां की मूर्धन्य महिला सिद्धों की आज भी 64 योगिनियों के रूप में चर्चा आती है।



प्रत्येक दिव्य एवं वीरभावी साधक चिन्ता एवं शव साधना समाप्त करने के पश्चात् शक्ति साधना की ओर तत्पर होता है। इसी को श्यामा साधना भी कहते हैं, जहां साधक अपनी श्यामापीठ करता है। यह मनुष्य के अन्दर छिपी अनन्त शक्ति को प्रकट करने का एक विकट साधन है। इस अवस्था में साधक को महिला साथी के साथ श्मशान में घोर निशा रात्रि में साधना देने वाली हो सकती है। खासकर इस समय काम वासना का उदय तो साधक के लिए प्रत्यक्ष काल का काम करता है।

तंत्र साधना की वामाचार परम्परा में स्त्री साधना का एक अनिवार्य अंग है। वहां साधक स्त्री को आद्याशक्ति अथवा पराशक्ति का प्रतीक स्वरूप मानकर उसकी अर्चना करता है, उसमें वह विपुर सुन्दरी का दर्शन करता है। यह दर्शन किसी काम का नहीं रह जाता। तांत्रिक साधना सम्पूर्ण जगत की स्त्रियों के प्रति मातृत्व भाव रखते हैं। परन्तु पशुभावी

साधकों अथवा सामान्य जन के लिए यह एक जटिल विषय है। आज भी लोग इस सत्य को जलदी स्वीकार नहीं कर पाते कि स्त्री के साथ निरन्तर एकान्त सेवन करते हुए भी व्यक्ति कामासक्ति से कोसों दूर रह सकता है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार भी यह कथन गले नहीं उतरता। स्त्री और पुरुष भला एकान्त में एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए बिना अथवा लैंगिक सम्बन्ध स्थापित किए बिना कैसे रह सकते हैं? भला आपके पास धी हो और वह पिघले नहीं! परन्तु यह एक निश्चान्त सत्य है। अगर थोड़ी सी गहराई में जाया जाय तो यह सहज ही समझ में आ जाता है।

समाज तथा परिवार में अनेक स्त्रियां होती हैं परन्तु पत्नी अथवा प्रेमिका के प्रति मन में जिस प्रकार की भावनाएं उत्पन्न होंगी, निश्चय ही वह भाव माता एवं बहन के प्रति नहीं उदित होगा। चाहे वह कितना भी एकान्त तथा कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो। फिर यदि हम स्त्री-स्त्री को एक मान लें, तब तो सबके प्रति समान भाव का ही उदय होना चाहिए? नहीं, ऐसा नहीं होता। इसका मतलब है - हमारा स्त्रियों के साथ भावनात्मक सम्बन्ध होता है और हम सब उन्हीं भिन्न-भिन्न भावनाओं के अनुरूप प्रेरित होते हैं। ठीक ऐसे ही, जब दिव्य एवं वीर भावी साधक देवी भाव एवं मातृभाव से स्त्री के साथ एकान्त का सेवन करता है - उस समय उसके सामने वह स्त्री एक सामान्य स्त्री न होकर देवी अथवा मातृस्वरूपा होती है।

प्रारंभिक काल में शक्ति केवल स्थूल चित्रों की पूजा करते थे जिनमें लिंग एवं योनि अंकित होते थे परन्तु समय के साथ-

संसार की सम्पूर्ण साधना पद्धतियों का एक उद्देश्य है, और वह है अन्तर्निहित आत्मशक्ति का जागरण। इसी शक्ति को सम्प्रदाय एवं आचार परम्परा के अनुसार भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है तथा यह माना जाता है कि जब तक इस सूक्ष्म तत्त्व का जागरण या साक्षात्कार नहीं होता, तब तक जीव जन्म मृत्यु, जरा-व्याधि के चक्र में घूमता रहता है।

साथ मान्याएं भी बदलती गईं और शास्त्रों में सुरा सुन्दरी का खुलकर प्रयोग होने लगा। तंत्र साधनाओं में चक्रार्चन नाम की एक महत्वपूर्ण पूजा होती है। उसमें सभी शक्ति साधक सधिकाएं एक साथ मिलकर शक्ति रूप में स्त्री की तथा शिव रूप में पुरुष की पूजा करते थे। उनका यह पूजास्थल भैरवी चक्र कहलाता है। यहां आने पर जानि, लिंग एवं सामाजिक सम्बन्ध की कोई मर्यादा नहीं रह जाती। इसके अन्तर्गत स्वेच्छाचार की पूर्ण स्वच्छन्दता होती है। वर्तमान प्राप्त आलेखों में शक्तियों के इस सामृहिक स्वेच्छाचार की बड़ी भर्त्सना की गई है और लगता है तंत्र के आधुनिक समाज की उपेक्षा का भी यही कारण है।

प्राचीन समय में गुह्य ज्ञान के ज्ञानान्तर प्रदान की एक विशिष्ट परिपाठी थी। उस समय सत्यात्र को ही गुह्यज्ञान का उपदेश अथवा दीक्षा प्राप्त होनी थी और नुम विद्याओं को सांकेतिक भाषा में लिखकर, गुरु शिष्य परम्परा से सुरक्षित रखा जाता था।

इसीलिए सभी शास्त्रों में गुरु को एक अनिवार्य तत्व के रूप में बतलाया है। गुरु वह व्यक्ति है जो शास्त्र एवं साधनाओं की गहराई से परिचित होता है। वह प्रत्येक सांकेतिक भाषा की यथार्थता को जानता है और वह अपनी अन्तर्दृष्टि से शिष्य की सामर्थ्य के अनुरूप उसे दीक्षित करता है गुरु की दूर दृष्टि से हमारा जीवन, वर्तमान एवं भविष्य का कोई भी कोना वंचित नहीं रह जाता। इसीलिए तो हिन्दू धर्म गुरु को एक साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर एवं साक्षात् परब्रह्म के रूप में पूजता है।

कुछ इसी प्रकार तंत्र में उल्लिखित पंच मकार (मध्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन) के प्रति भी लोगों की भ्रमपूर्ण धोरणाएं हैं। सभी शास्त्र एवं साधनाएं, परम्पराएं यह स्वीकार करती हैं कि साधना की उच्च अवस्था (प्राकाश्टा) को प्राप्त करने के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, धैर्य, दृढ़ निश्चय एवं ब्रह्मचर्य की नितान्त आवश्यकता है। योग, सूक्ष्म में पातंजलि ने भी कहा है -

'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठावा वीर्द्ध त्वाभः' ब्रह्मचर्य से ही वीर्य लाभ होता है और यह धैर्य, शक्ति, प्रतिभा एवं ब्रह्मोपलब्धि का अनन्यतम साधन है। उसके अभाव में सदाविद्या का लोप, निर्लज्जता का आधिक्य एवं सहनशीलता में कमी आ जाती है अतः ऐसी अवस्था में पंचमकार का तथाकथित प्रयोग ब्रह्मोपलब्धि के लिए कैसे कारण होगा? निश्चित ही पंचमकार का भी कुछ सांकेतिक अर्थ होगा, स्थूल नहीं। मेरुतंत्र में बतलाया गया है कि मांस, मंदिरा, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन से ही यदि सिद्धियों प्राप्त होती हैं तो फिर पापरों की क्या परिभाषा

होगी? यदि मध्यपान से ही मुक्ति मिल जाय अथवा संभोग से कैवल्य प्राप्त हो जाये, तो फिर पुनर्जन्म होगा किसका? भैर वायामल में व्यभिचारी में पंचमकारों की जो वास्तविक व्याख्या है, उसे देखकर इनकी वास्तविकता के प्रति सहज ही विश्वास होने लगता है। उसके अनुसार वास्तविक पंचमकार है -

1. व्योम पंकज में स्पंदित अर्थात् सहस्रार के बिन्दु चक्र से प्रवाहित रस की मद है। योगियों के अनुसार यही अमृत है। इसके पान से योगी अमर होता है। खेचरी मुद्रा द्वारा इसका पान किया जाता है।
2. ज्ञान खण्डगं के द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि पशुओं का छेदन ही पशुबलि तथा निर्विषय होकर परात्म सुख प्राप्त करना है - मांस भक्षण।
3. मन के द्वारा इन्द्रियों का संयम कर आत्मतत्त्व में उनका विलय ही है - मत्स्य भक्षण।
4. आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय, विषय, धृणा, मान, लज्जा और क्रोध पर विजय ही मुद्रा, तथा
5. कुण्डलिनी शक्ति का परमशिव के साथ सहस्रार में संयोग ही मैथुन कहलाता है।

आगम शास्त्रों के अनुसार यह ब्रह्माण्डीय शक्ति मनुष्य शरीर के अन्दर निष्क्रिय अवस्था में सोई हुई है। इसके विश्रामस्थल का नाम है मूलाधार चक्र। यह चक्र मेरुदण्ड में सबसे नीचे है। यहां वह स्वयंभू नाम लिंग में साढ़े तीन फेरा डालकर, ब्रह्मरंथ को ढककर पड़ी हुई है। इस शक्ति को कहते हैं - कुण्डलिनी। इसकी कल्पना सर्पिणी के रूप में की गई है। जब यह जागती है, साधक को दिव्य अनुभव होने लगते हैं। उसमें प्रसुप्त प्रतिभाओं का प्रकटीकरण होने लगता है। तत्पश्चात् यह शक्ति मेरुदण्ड स्थित सुषुम्ना मार्ग से स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञा चक्रों को पार करती हुई सहस्रार में परमशिव से मिलती है। शिव शक्ति का यह मिलन साधक और साधना की चरम सीमा है। यही निर्विकल्प समाधि की अवस्था है, जहां ध्याता, ध्यान और ध्येय तीनों का विलय हो जाता है ... और वस्तुतः यही शाक्त साधना का मूल उद्देश्य है।

शाक्तमत का प्रभाव भारतीय चिंतन धारा पर प्रचुर है। यहां एक ओर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण आदि की मान्यता है वहीं दूसरी ओर सावित्री, लक्ष्मी, पार्वती, सीता और राधा भी कम महत्व नहीं रखती। सीता-राम, राधाकृष्ण,



लक्ष्मी नारायण, उमा महेश्वर आदि नामों में प्रथम स्थान शक्ति को ही प्राप्त है। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है - वैदिक एवं प्रागैतिहासिक काल में भी शाक्त मत एक विकसित मत था, तब शक्ति की प्रधानता को स्वीकारते हुए समाज में स्त्री को प्रतिष्ठित स्थान दिया जाता था। परिवार मातृमूलक हुआ करते थे। दिति और अदिति से दैत्य एवं आदित्य कुलों का होना इसका प्रमाण है, परन्तु समय बदला और अनेकानेक मान्यताएं मिट्टी गईं इस प्रकार लम्बे अर्से तक यह मत लुप रहा।

कदाचित प्रथम शताब्दी के आस-पास इसका फिर से प्रचार प्रसार होने लगा। इसके प्रभाव से तत्कालीन बौद्ध भी प्रभावित हुए हैं जिससे बौद्ध तांत्रिक सम्प्रदाय का जन्म हुआ। इसके बाद तो एक से एक महापुरुष होते गये और शक्ति की उपासना विधियों का भी विस्तार होता गया। इस प्रकार इस मत ने धीरे-धीरे शैव, वैष्णव, गाणपत्य एवं सौर मतावलंबियों को भी अपने प्रभाव में ले लिया। आज हम तंत्र साधना पद्धतियों के जिन विशाल स्वरूप को देखते हैं, यह हमारे प्राचीन एवं अर्वाचीन साधकों की अनन्त तपस्या एवं निरन्तर प्रयास का ज्वलंत उदाहरण है।



सादृशु लक्ष्मेव नै अपने एक प्रवचन में

ये उद्गार
प्रकट किये थे

जगदम्बा शक्ति स्वरूप क्या है?

जगदम्बा आद्या शक्ति क्यों है?

जगदम्बा साधना क्यों आवश्यक है?

सम्पूर्ण विवेचन

जगदम्बा

शक्ति साधना

जीवन में प्रत्येक प्रकार के रागरंग, भोग, यश, माम, पट, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, इनकी इच्छा रहनी ही चाहिए और इन सबकी प्राप्ति केवल और केवल, शक्ति साधना के द्वारा संभव है अर्थात् भगवती जगदम्बा की साधना के द्वारा संभव है।

ॐ विद्युदमसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्यामिः करवालस्त्रेटविलसद्वस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणमनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे ॥

भगवती जगदम्बा सकल विश्व की मातृ स्वरूपा आध्यात्मिक देवी हैं, जो अपने भक्तों और साधकों की उसी प्रकार से रक्षा करती हैं जिस प्रकार से एक मां अपने अबोध बालक की रक्षा

और पालन करती हैं। वह छोटा बच्चा तो कुछ भी नहीं जानता, न उसे इस बात का ज्ञान होता है कि माँ का ममत्व क्या होता है, न ही उसे इस बात की चिन्ता होती है कि माँ कितने कष्ट और दुःख झेल कर उसका पालन पोषण कर रही है और न

उसे इस बात की फिक्र होती है कि यदि कोई विपत्ति, बाधा या परेशानी आ जाए़गी तो माँ को कितना तनाव, कितनी वेदना

इसीलिए तो बालकं निश्चिंत होता है, इसीलिए तो मां की गोद में निर्भीक होकर वह विश्राम करता है, और मां सभी वृष्टियों से उस बालक की रक्षा करती है, उसका मार्ग दर्शन करती है, उसका पालन पोषण करती है, और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं को, दूर करने में सदैव तत्पर रहती है।

भगवती जगदम्बा का भी ऐसा ही स्वरूप है। वह केवल देवी ही नहीं, वह केवल मातृ स्वरूपा ही नहीं, अपितु उसके तो कई नाम, कई स्वरूप, कई विचार, कई धारणाएं हैं। वह देवताओं का पुंज है, क्योंकि भगवती जगदम्बा का तो जन्म हुआ ही नहीं।

जब देवताओं पर विपत्ति आई जब राक्षसों ने देवताओं पर प्रहार किए। जब देवताओं के लिए कोई भी आश्रय स्थल नहीं रहा, जब देवताओं ने अनुभव किया कि इन राक्षसों से छुटकारा पाना अत्यंत कठिन है तब समस्त देवताओं के शरीर से तेज पुंज निकला, ब्रह्मा के शरीर से भी, विष्णु और सूर्य के शरीर से भी इन्द्र और वरुण के शरीर से भी। जितने भी देवता थे, उन सभी के शरीर से तेज पुंज निकल कर जो मूर्ति बनी, जो चित्र बना, जो आवरण हुआ, उसे जगदम्बा कहा गया - जो आठ भुजाओं वाली, जिनके हाथों में अस्त्र-शस्त्र, जिनके चेहरे पर अद्भुत तेज जो युद्ध में हुंकार करने वाली और जो शेर पर आरूढ़ शत्रुओं का दमन करने में तत्पर निरंतर अग्रसर, होने वाली और देवताओं की सभी प्रकार से रक्षा करने वाली एक जीवन्त मूर्ति देवताओं के सामने प्रकट हुई।

देवताओं ने देखा कि यह स्वरूप तो अपने आप में अद्भुत है, विलक्षण है, इसकी तेजस्विता तो अपने आप समस्त संसार में प्रकाशित हो रही है। इसकी हुंकार से सारा विश्व चलायमान होने लगा है, इसकी आवाज से दैत्यों के हृदय कांपने लगे हैं, जो प्रहार करने में वज्र की तरह समर्थ हैं। ... मगर साथ ही साथ मातृ स्वरूपा भी हैं, जो अपने भक्तों की सदैव रक्षा करने में तत्पर रहती हैं जो एक साथ ही महाकाली बनकर शत्रुओं का प्रचण्ड दमन करने में समर्थ हैं, महालक्ष्मी बनकर शिष्यों और साधकों को सम्पन्नता देने में समर्थ हैं, मां सरस्वती बनकर जो मनुष्यों को बुद्धि और चेतना देने में समर्थ है। ऐसी त्रिगुणात्मक स्वरूपा भगवती जगदम्बा को देवता लोग शत्-शत् वंदन करने लगे।

भगवती जगदम्बा कोई देवी ही नहीं अपितु, समस्त विश्व की अधिष्ठात्री हैं जो निन्द्रा रूप में भी विद्यमान हैं, क्षुधा रूप में भी विद्यमान हैं, पालन पोषण करने में भी विद्यमान हैं, बुद्धि की क्षेत्र में भी श्रेष्ठता और अद्वितीयता देने में समर्थ हैं,

इस महाविद्याओं को घोपनीय रखने की परंपरा के कारण इन शक्तियों के नाम श्री विश्विन्न संकेत स्वरूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। काली का आद्या, महाकाली व चंडी कहा जाता है। विश्व के सबसे बड़े भव्य मृत्यु का नाश करने वाली काली को श्मशान में शव पर खड़ी और लपलपाती लाल जीभ वाली बताया गया है। तारा को द्वितीया, उत्त्रातारा, उक्कजटा और नीलसरस्वती कहा जाता है। इसी प्रकार घोड़शी को तृतीया, श्रीविद्या, त्रिपुरा, त्रिपुर सुंदरी और ललिता नाम दिया गया है। श्रीविद्या बुद्धि शास्त्र, वैदुष्य, सौन्दर्य, काव्य शक्ति प्रदान करने वाली देवी हैं। छिन्नमस्ता को पराडाकिनी श्री कहा जाता है। इनका ध्यान और स्वरूप तो अत्यंत अद्भुत है। इस देवी ने अपना सिर गाटकर हाथ में ले रखा है और स्वयं अपना खून पी रही है। संहार शक्ति के उच्चिष्ट से सृष्टि शक्ति की निरंतरता बताने वाले इस स्वरूप का गूढ़ रहस्य तंत्र साधना के द्वारा ही समझा जा सकता है। इसी प्रकार बगलामुखी को वलगामुखी और पीतांबरा श्री कहा जाता है। यह मुकद्मे, शास्त्रार्थ अथवा विवाद में विजय दिलाने वाली शक्ति है। शूद्रवर्णा मातंशी को चांडाली श्री कहा जाता है। धनप्रदात्री कमला लक्ष्मी का स्वरूप है। धूमावती दायिद्वय, वैधव्य और अभावों की देवी है। इन्हें कुरुक्षेत्र, कृशकाय और विधवा बताया गया है। सौन्दर्य के साथ डासौन्दर्य की श्री पूजा तांत्रिक उपासना की विशेषता है। तंत्र साधना में सभी देवियों के पृथक-पृथक स्वरूप, ध्यान, बीजमंत्र, यंत्र और साधना पञ्चतियां प्रचलित हैं। कालांतर में इन स्वरूपों के आधार पर ही विश्विन्न मंदिरों का निर्माण हुआ।

जिसके सैकड़ों नाम हैं, सैकड़ों स्वरूप हैं, जिसके हाथ में अक्ष, परशु गदा, कलश, धनु, दण्ड और विविध आयुध हैं जिनके द्वारा वह शत्रुओं पर प्रहार करती हैं, आने वाली परेशानियों और तनावों को दूर करने में समर्थ हैं, जो अपने आप में ही श्रेष्ठ और अद्वितीय हैं, ऐसी मूर्ति, ऐसे विग्रह को देखकर देवताओं ने हर्ष तो अनुभव किया ही, उन्हें यह भी विश्वास हुआ कि आने वाले समय में मानव जाति के कल्याण के लिए भक्तों और साधकों की समस्याओं को दूर करने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई विग्रह नहीं हो सकता।

...क्योंकि यही एक मात्र विग्रह है, जो प्रहार करने में भी समर्थ है, जो उत्पत्ति करने में भी समर्थ है, जो पालन करने में भी समर्थ है। जो शत्रुओं का संहार करने में काल स्वरूप है, तो भक्तों की रक्षा और सहयोग करने में मातृ स्वरूप है। इसकी आराधना इसका चिंतन, इसकी धारणा, और इसका विचार अपने आप में जीवन का एक सौभाग्य है, जीवन की एक पूंजी है।

यदि व्यक्ति नवरात्रि के दिनों में भगवती जगदम्बा की साधना करता है तो यह श्रेष्ठतम होता है। नवरात्रि के सारे दिन पूर्ण पर्व कहे जाते हैं। ये सारे दिन अपने आप में तेजस्विता युक्त होते हैं, और जो साधक इन दिनों में साधना करना चाहता है वह, इन्हीं दिवसों पर शुरु से चामुण्डा दीक्षा प्राप्त कर सभी साधनाओं में पूर्णता प्राप्त कर सकता है। चामुण्डा दीक्षा का तात्पर्य है कि अपने आप में पूर्ण पवित्र और दिव्य बनकर अपने आप को दक्ष बनाते हुए, योग्य बनाते हुए उस तेजस्विता युक्त भगवती जगदम्बा की साधना को सम्पन्न करने के लिए अपने आपको प्रेरित करता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि साधक नवरात्रि के दिनों में पूर्व यथा संभव पूर्ण मौन रहकर अपनी शक्ति का संचय करे और उसके बाद सद्गुरु से चामुण्डा दीक्षा प्राप्त करें और यदि सद्गुरु कहीं और हों, सशारीर उपस्थित नहीं हों तो फोटो भ्रेजकर उसके माध्यंम से दीक्षा प्राप्त करें।

मार्कण्डेय एक अद्भुत और अद्वितीय कृषि हुए हैं। उन्होंने अपने मार्कण्डेय पुराण में जगदम्बा के सम्पूर्ण स्वरूप का चिन्तन किया, विचार किया। उनकी उत्पत्ति, उनके कार्य और किस प्रकार से भगवती जगदम्बा को प्रसन्न किया जाए, साथा जाए, उनसे सहयोग लेने के लिए प्रयत्न किया जाए इसकी विस्तृत विवेचना मार्कण्डेय ने अपने ग्रन्थ में की और उन्होंने स्पष्ट किया कि भगवती जगदम्बा तो भगवान शिव, मृत्युंजय का साक्षात् विग्रह है, क्योंकि शिव अर्थात् कल्याण वहीं हो सकता है, जहां शक्ति है।

शिव और शक्ति का अद्भुत समन्वय है। जो मनुष्य कायर है, बुजदिल है, जो हताश परेशान और चिन्तित है, वह कल्याणमय नहीं बन सकता। वह न तो अपना कल्याण कर सकता है और न समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकता है। यह तभी हो सकता है जब उसमें शक्ति का संचरण हो, जब उसमें निर्भीकता आए जब उसमें प्रहार करने की क्षमता आए और ये स्थितियों कलंकन होना क्षमता प्राप्त करना, निर्भीकता होना, प्रहार होना और कल्याणमय होना, यही जीवन की पूर्णता है।

इसीलिए इसे शिव और शक्ति का समन्वय और उनकी साधना और आराधना जीवन की पूर्णता मानी गई। मार्कण्डेय पुराण में बताया गया कि जो साधक पूर्ण स्वरूप के साथ भगवती जगदम्बा सद्गत होता है, उसकी आराधना करता है, उसे अपने हृदय में स्थापित करता है, वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति बैलोक्य विनाय प्राप्त करने में भी समर्थ होता है। उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव या परेशानी, चिन्ता या तकलीफ हो हो नहीं सकती। वह निर्भीक होकर विचरण करने में समर्थ होता है।

सैकड़ों देवताओं की साधना या आराधना करने की अपेक्षा मात्र जगदम्बा की साधना करने से भी समस्त देवताओं की साधना सम्पन्न हो जाती है क्योंकि भगवती जगदम्बा तो समस्त देवताओं के नेज स्वरूप का पुंज है और इसीलिए शास्त्रों में जगदम्बा को श्रेष्ठतम आराध्या माना गया, जीवन की पूर्णता माना गया, जीवन की श्रेष्ठता और अद्वितीयता माना गया।

जो साधक जगदम्बा को छोड़कर अन्य देवताओं की साधनाओं में समय व्यतीत करता है, वह वैसा ही है, जैसे जड़ में पानी न देकर पत्तों और डालियों को सींचता है। जीवन की पूर्णता और पौधे का लहलहाना तो जड़ में पानी देने से ही संभव है। ठीक इसी प्रकार से जीवन को निर्भीक और निश्चिन्त बना देने की कला और क्रिया तो जगदम्बा साधना से ही

संभव है और जो इसकी साधना सीख लेता है, समझ लेता है, जो जगदम्बा की साधना सम्पन्न कर लेता है, जिसे जगदम्बा को प्रसन्न करने की कला ज्ञात है उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही कैसे सकता है?

फिर जगदम्बा की साधना का कहीं कोई निषेध है ही नहीं, चाहे वह शैव हो, चाहे वैष्णव हो, विष्णु की आराधना करने वाला हो, चाहे तांत्रिक हो, चाहे योगी हो, चाहे संन्यासी हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो, चाहे किसी भी चिन्तन या विचार का प्रणेता हो, जगदम्बा की साधना तो सबके लिए सर्व सुलभ है। किसी भी युक्ति से, किसी भी स्थिति में जगदम्बा की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

सैकड़ों प्रकार हैं, जगदम्बा की साधना सम्पन्न करने के - मंत्रों के माध्यम से, स्तुति-आराधना के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से, योग के माध्यम से, रुद्रायमल के माध्यम से, शमशान साधना के माध्यम से, अघोर पथ से, नाथ पथ से, और जितने भी पथ, जितने भी संप्रदाय, उन सभी संप्रदायों में भगवती जगदम्बा की साधना का चिन्तन है विचार है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मात्र जगदम्बा की ही ऐसी साधना है, जो प्रत्येक पथ और प्रत्येक सम्प्रदाय में विद्यमान है। प्रत्येक प्रकार का व्यक्ति, साधक, संन्यासी, योगी इस प्रकार की साधना को सम्पन्न करने में गौरव अनुभव करता है।

...और फिर कलियुग में तो 'कलौ चण्डी विनायकौ'

कलियुग में तो केवल गणपति और जगदम्बा ही शीघ्र सिद्धि देने वाले देवता माने गए हैं। अन्य देवताओं की साधना जहां कठिन है, लम्बी है, वहां जगदम्बा की साधना सरल है, सामान्य है, स्पष्ट है, जो शीघ्र सिद्धि दायक है, जिसकी साधना करने से हाथों हाथ फल मिलता है। वह चाहे रक्षा करने की साधना हो, वह चाहे धन प्राप्त करने की साधना हो, वह चाहे व्यापार-वृद्धि की साधना हो, वह चाहे परिवार की सुरक्षा और परिवार की उत्तरि की साधना हो, वह चाहे स्वास्थ्य कामना की साधना हो और चाहे अन्य फल इच्छा की साधना हो। सभी प्रकार की इच्छाओं का परिपालन जगदम्बा की साधना में निहित है।

...और साधक जब साधना सम्पन्न करता है तो साधना समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, समाधान ही नहीं कर



सम्पन्न होते-होते ही उसको फल अनुभव होने लग जाता है, उसका कार्य सम्पन्न हो जाता है। इसीलिए तो कलियुग में जगदम्बा की साधना सर्वश्रेष्ठ, साधना कहीं गई है, इसीलिए तो कलियुग में समस्त साधकों को स्पष्ट किया गया कि जो जगदम्बा साधना नहीं कर सकता या नहीं करता वह अपने आप में नुकसान प्राप्त करता है क्योंकि इस साधना से ही जीवन की सम्पूर्णता का बोध स्वतः होने लगता है, क्योंकि इस साधना के माध्यम से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसका अभीष्ट लक्ष्य है।

इसीलिए तो शास्त्रों में जगदम्बा की साधना को जीवन की श्रेष्ठतम साधना माना गया है। इसीलिए तो मानव जाति के कल्याण के लिए इस साधना को प्राथमिकता दी गई। इसीलिए तो जीवन के सारे अभावों को दूर करने वाली यह साधना बताई गई, इसीलिए तो वेद, उपनिषद्, पुराण आदि प्रत्येक ने जगदम्बा की साधना को महत्व दिया है। उन्होंने अनुभव किया, विचार किया कि इस साधना के द्वारा हम अपनी

सकते, उन बाधाओं और संकटों से पीछा छुड़ा सकते हैं और जीवन को ज्यादा सुगम, ज्यादा सरल, ज्यादा सुखमय बना सकते हैं।

भगवती जगदम्बा की साधना और पूजा अर्चना अपने आप में जीवन एक अनिवार्य सोपान है। जब जीवन का सौभाग्य उदय होता है, तब साधक भगवती जगदम्बा की साधना, पूजा विधिवत् कर पाता है। यह आवश्यक नहीं है कि वह साधना नवरात्रि में ही हो, यह वर्ष में किसी भी दिन किसी भी समय कर सकते हैं, और साल के सारे 365 दिन भगवती जगदम्बा के ही दिन कहे जाते हैं, वे चाहे नवरात्रि के दिन हों और चाहे किसी भी प्रकार का अन्य पर्व, त्यौहार और उत्सव हो।

वास्तव में यह सौभाग्य होता है कि व्यक्ति भगवती जगदम्बा के सान्निध्य में उनके चरणों में पूर्ण तेजस्विता युक्त, ऋषि तुल्य जीवन जीते हुए निरंतर गुरु मंत्र और नवार्ण मंत्र का जप करते हुए अपने शरीर के सभी चक्रों की जागरण क्रिया की ओर अग्रसर होते हुए जगदम्बा साधना सम्पन्न करता है। यह साधना सम्पन्न करना अत्यंत ही आह्लाद और प्रसन्नता का सोपान है।

जीवन में प्रत्येक प्रकार के रागरंग, भोग, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, इनकी इच्छा रहनी ही चाहिए और इन सबकी प्राप्ति केवल और केवल, शक्ति साधना के द्वारा संभव है या भगवती जगदम्बा की साधना के द्वारा संभव है।

मार्कण्डेय ने एक अद्वितीय ग्रंथ, मार्कण्डेय पुराण की रचना की जो शिव के ऊपर पूर्ण ग्रंथ है तो उसके शक्ति के ऊपर भी पूर्ण ग्रंथ है और उनके द्वारा लिखा गया शक्ति का ग्रंथ ही हजारों वर्षों से मान्य है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में भगवती जगदम्बा को साक्षात् किया और उनके कई रूपों को साक्षात् प्रत्यक्ष करके दिखाया और उन्होंने कहा -

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चंद्रघण्टेति कुम्भाण्डेति चतुर्थकम् ।
यं चमं स्कंधमातेति षष्ठं कात्यायनी तथा ।
सप्तमं सिद्धिदा प्रोक्ता चामुण्डेति चाष्टमं
नवमं कालं रत्रीति नवदुर्गा प्रकीर्तिता ॥

भगवती जगदम्बा के कई स्वरूप हैं, नवदुर्गा भी उनके ही रूप हैं और भगवती जगदम्बा का ध्यान लिखते समय ऋषि ने कहा कि -

अँ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिष्वद्वैन्दुरेष्वां
अखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्धृहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिहस्रकन्थाधिरूढां त्रिभुवनमस्त्रिलं तेजसा पूर्यन्तीं साधना को सम्पन्न कर, अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बना पाएं ध्यायेद् दुर्गा जयाल्लयां त्रिदशपरिवृत्तां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

उन्होंने भगवती जगदम्बा से प्रार्थना करते हुए कहा है कि मेरे जीवन की सभी कामनाएं पूर्ण हों और जीवन में कामनाओं का पूर्ण होना आवश्यक है, क्योंकि यदि व्यक्ति पैदा हो और अपूर्ण जीवन में रह जाए तो ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं कहलाता। व्यक्ति अपूर्ण पैदा जरूर होता है मगर अपूर्णता के साथ यदि अपनी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति न करें, यदि जो जीवन का उल्लास और उमंग है वह प्राप्त नहीं करें, उच्च कोटि का धन, उच्च कोटि की शिक्षा या उच्च कोटि का सौन्दर्य प्राप्त नहीं करें तो ऋषि कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं है। उसने अपने जीवन को संवारा नहीं, सजाया नहीं, व्यर्थ ही गंवा दिया। ...और सभी इच्छाओं की पूर्ति केवल मात्र जगदम्बा साधना से संभव है।

और जीवन में आध्यात्मिकता प्राप्त करनी हो, सिद्धाश्रम पहुंचना हो तो यह भी केवल जगदम्बा साधना द्वारा संभव है। जीवन की अंतिम परिणति केवल सिद्धाश्रम जाने में है। जहां न कोई स्वर्ग है, न नर्क है। स्वर्ग और नर्क दोनों कल्पना की चीजें हैं। वास्तविक जीवन का इनसे कोई सम्बन्ध नहीं। हमें बहलाने के लिए कि हम गलत रास्ते पर न चलें इसलिए नर्क की व्याख्या की गई है। नर्क जैसी कोई चीज नहीं है। जीवन का सार सिद्धाश्रम प्राप्ति है और यह भी इच्छा भगवती साधना द्वारा शीघ्र, सहज संभव है, परन्तु आवश्यक है कि व्यक्ति पूर्ण विश्वास के साथ, श्रद्धा के साथ अनुष्टान करें।

आज दिवाली का मुहूर्त ही नहीं तो आप नहीं मना सकते आज दिवाली, आज आप होली भी नहीं मना सकते, क्योंकि होली का दिन एक निश्चित है, एक बातावरण है, एक उमंग है। दिवाली का अलग दिन है, रक्षा बंधन का अलग दिन है। ठीक इसी प्रकार से नवरात्रि के भी अपने आप में अलग दिन हैं, और प्रत्येक दिन का अपना एक अलग महत्व है।

यदि आपके पास जगदम्बा साधना का ज्ञान है और आप उसको सम्पन्न नहीं करते, नवरात्रि के दिनों में इस साधना को नहीं कर पाते तो वास्तव में ही आपसे अधिक दुर्भाग्यशाली कोई नहीं है, और यदि आप जगदम्बा की साधना को पूर्णता के साथ नवरात्रि में सम्पन्न कर लेते हैं तो फिर आपसे अधिक सौभाग्यशाली कोई नहीं है, क्योंकि इस साधना के द्वारा हम सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं, हम जीवन में उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

और आप अपने जीवन में ऐसा कर पाएं, आप जगदम्बा, सिहस्रकन्थाधिरूढां त्रिभुवनमस्त्रिलं तेजसा पूर्यन्तीं साधना को सम्पन्न कर, अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बना पाएं ध्यायेद् दुर्गा जयाल्लयां त्रिदशपरिवृत्तां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

व्यापारियों
सरकारी व्यापारियों
शैक्षणिक व्यापारियों
सिद्धिवाली व्यापारियों
महाशैक्षणिक व्यापारियों
प्रदूषणिक व्यापारियों



दौ आधार शक्तियां

द्वंग स्वरूप सामिलित स्वरूप

शैक्षणिक
व्यापारियों

जगद्वर्षा



साधना का पर्व नवरात्रि

विद्या-विधान सहित सरपञ्च दर्शने

वृश्चिक-नवरात्रि-पूजा



आदिशक्ति के मुख्यतः तीन स्वरूप साधकों की श्रद्धा भावना के केन्द्र बिन्दु हैं। मां दुर्गा अपने तीव्र और शांत दोनों ही स्वरूपों में विद्यमान होती हैं। जहां वे मनुष्य की तामसिक वृत्तियों का नाश करती हैं, वहीं वे विभिन्न प्रकार के कार्यों, जैसे - आर्थिक उद्घाति, मानसिक शांति, पारिवारिक उद्घाति, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु भी हर क्षण साधक के साथ शक्ति रूप में विद्यमान रहती हैं।

भारतवर्ष में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां नवरात्रि के पर्व पर जो अपने सुपुत्र या कुपुत्र दोनों पर ही समान रूप से प्रेम व मां दुर्गा का आह्वान न किया जाता हो, और हर बार की तरह आशीर्वाद की नौ दिनों तक निरन्तर वर्षा करती है।

इस बार भी आपके सामने चैत्र नवरात्रि पूर्ण शक्तियुक्त होकर उपस्थित हो रही है, जब मां दुर्गा अपना पूर्ण वात्सल्य स्वरूप है, जब साधक पूर्ण तन्मयता से लीन हो, मां दुर्गा की पूजा-धारण कर जगत में विद्यमान होती हैं, और प्रदान करती हैं, अर्चना व साधना कर उसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकता है, अपने पुत्रों को वह सब कुछ, जो उनकी इच्छा होती है, जो क्योंकि शरीर और मन, दोनों प्रकार से कष्टों का निवारण मां उनकी मनोकामना होती है, क्योंकि 'मां' शब्द ही ऐसा है, दुर्गा के चरणों में ही निहित है।

नवरात्रि पर्व पर गुरु-परिवार की ओर से सभी साधकों-सिव्यों को आशीर्वाद।

शक्ति के बिना कोई सिद्धि नहीं है, और शक्ति तत्व जाग्रत हो सकता है साधना द्वारा, इस शक्ति और सिद्धि द्वारा भाग्य-तत्व प्रबल होता है, कर्म-तत्व पूर्ण फल देता है, क्योंकि शक्ति और सिद्धि एक महान् प्रक्रिया है आत्म-साक्षात्कार की, अपने बल, अपनी बुद्धि को पहचान कर जीवन-दिशा को निर्धारित करने की।

मां दुर्गा तो आद्याशक्ति हैं, और विश्व की प्रत्येक शक्ति इसी महान् शक्ति से उत्पन्न होती है। ये परम विद्या तथा वेदों की आधार हैं, इसीलिए नवरात्रि पर्व को 'शक्ति पर्व' के रूप में सम्बोधित किया जाता है।

जगत् जननी आद्याशक्ति; जिनके विभिन्न स्वरूप हैं, जो अपने विभिन्न स्वरूपों में भक्तों का कल्याण करते हुए चराचर जगत में विचरण करती हैं, जो मनुष्य तो क्या शिव के लिए भी शक्ति हैं, जिसके बिना ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अपूर्ण हैं, उस आदिशक्ति का ध्यान न करने वाले, साधना न करने वाले दुर्भाग्यशाली ही कहे जायेंगे, जिसके एक-एक स्वरूप की माया निराली है, जो शीघ्र प्रसन्न होने वाली हैं, और अपने भक्तों को अभय प्रदान करती हैं।

वर्ष में चैत्र नवरात्रि को सर्वाधिक विशेष महत्व दिया जाता है, इसके कई कारण हैं -

1. इस दिन से नया वर्ष आरम्भ होता है।
2. नये कालयुग प्रारम्भ भी इसी तिथि से होता है।
3. यह नवरात्रि 'सकाम्य नवरात्रि' कहलाती है।

जिस व्यक्ति को भी यदि किसी प्रकार की कामना होती है, चाहे वह अर्थ प्राप्ति, रोग मुक्ति, कर्ज उतारना, शीघ्र विवाह, व्यापार वृद्धि या अन्य किसी भी प्रकार की कामना हो, तो इस नवरात्रि में देवी-साधना करने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

नवरात्रि पूजन के कई उपाय हैं, कई प्रयोग हैं, और कई तरीके हैं, परन्तु जो साधक किसी कारणवश गुरु के समीप न पहुंच सके, उनके साक्षिध्य में बैठकर साधना सम्पन्न न कर सके, उसे घर पर बैठकर ही इस नवरात्रि पूजा-साधना को विधिवत् ढंग से सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि नवरात्रि का तो प्रत्येक दिन शुभ एवं विशेष मुहूर्त सिद्ध होता है, अतः किसी भी कार्य हेतु इन नौ दिनों में मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती।

आदिशक्ति के मुख्यतः तीन स्वरूप साधकों की श्रद्धा भावना के केन्द्र बिन्दु हैं, इन्हीं के भेद-प्रभेद को लेकर सैकड़ों चरित्रों

और नाम रूपों का साहित्य रचा गया है। इसके तीन प्रमुख रूप हैं - 1. सरस्वती, 2. लक्ष्मी, 3. काली।

दुर्गा का एक रूप काली है। मां दुर्गा अपने तीव्र और शांत दोनों ही स्वरूपों में विद्यमान होती हैं। जहां वे मनुष्य की तामसिक वृत्तियों का नाश करती हैं, वहीं वे विभिन्न प्रकार के कार्यों, जैसे - आर्थिक उन्नति, मानसिक शांति, पारिवारिक उन्नति, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु भी हर क्षण साधक के साथ शक्ति रूप में विद्यमान रहती है।

दुर्गा के नौ अवतार विशेष रूप से पूजित होते हैं, और नवरात्रि काल में प्रतिदिन उनके झलक-झलक रूप की उपासना क्रमिक रूप में किए जाने का विधान है क्योंकि इसके किसी भी रूप का, किसी भी नाम का स्मरण किया जाए, उस भक्त व साधक को मां दुर्गा की कृपा प्राप्त होती ही है।

दुर्गा के नौ अवतार इस प्रकार हैं -

1. शैलपुत्री, 2. स्कन्द माता, 3. ब्रह्मचारिणी, 4. चन्द्रघण्टा, 5. कृष्णामृता, 6. कान्त्यायनी, 7. कालरात्रि, 8. महागौरी और 9. सिद्धिदात्री।

इस वर्ष विक्रम सम्वत् 2066 में नवरात्रि 27 मार्च 2009 को प्रारम्भ हो रही है और इसका समाप्ति 03 अप्रैल 2009 को हो रहा है। इन दिनों में जाप साधक हैं, शिष्य हैं तो शक्ति आराधना पूर्ण विधि विद्यान सहित नित्य सम्पन्न करें।

प्रथम दिन विशेष पूजन नीचे दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न करना है और बाकी दिनों में जपापति पूजन, गुरु पूजन सम्पन्न करके ही प्रत्येक दिन क्रमानुसार शक्तिक्र हाथ में लेकर नवदुर्गा मंत्रों का जप करें (प्रत्येक दिन एक नवदुर्गा मंत्र जप) एवं दुर्गा मंत्र सम्पन्न करना है।

इस साधना में मंत्र स्थिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठायुक्त सामग्री के साथ साथ नियमों का पालन विशेष आवश्यक है।

साधना विधान:

1. प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के साथ उठ जायें और समय पर दैनिक क्रम सम्पन्न कर, पूजन सम्पन्न करें। 2. यदि प्रातः पूजन संभव नहीं है तो स्नान इत्यादि कर, गुरु मंत्र का एक माला जप कर साधकाल पूजन सम्पन्न कर सकते हैं। 3. नवरात्रि के नौ दिनों में निराहार रहना आवश्यक नहीं है लेकिन सात्त्विक भोजन ग्रहण करें तो शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से चेतना रहनी और अधिक से अधिक मंत्र जप कर सकते हैं। 4. ब्रह्मचर्य नियम का पालन अवश्य करें। 5. नवरात्रि में दुर्गा समशक्ती का पाठ करना विशेष फलप्रद रहता

है। पूरा पाठ न कर सकें तो एक-एक अध्याय का पाठ अवश्य करना चाहिए। 6. भगवती दुर्गा पर मांसादि भोग, शराब इत्यादि अप्रित करना अत्यन्त अशुभ है और जिन शास्त्रों में यह वर्णन आया है, उन टीकाकारों को वास्तव में शक्ति पूजा का महत्व ही मालूम नहीं है। 7. नवरात्रि में शक्ति से सम्बन्धित जितनी अधिक साधनाएं सम्पन्न कर सकते हैं उतनी अधिक साधनाएं सम्पन्न करें। 8. वास्तविक शक्ति पूजन तो गुरु चरणों में गुरु के सान्निध्य में ही सम्पन्न किया जाता है लेकिन यदि किसी कारण वश आप गुरु के पास न पहुंच सकें तो नीचे दी गई विधि से पूजन अवश्य सम्पन्न करें। 9. नवरात्रि में अखण्ड दीपक प्रज्ज्वलित करना उत्तम माना गया है।

नवरात्रि पूजन में मंत्र का, तंत्र का और यंत्र का अद्भुत संयोग है और इन चीजों के संयोग से ही साधना सम्पन्न होती है।

साधना-सामग्री

‘आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र’, श्री साफल्य गुटिका, शक्ति माला, नवदुर्गा स्वरूप नौ शक्ति चक्र।

साधना-विधान

साधक प्रातः काल स्नान करके आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर भगवती दुर्गा का सुन्दर सा आकर्षक चित्र स्थापित करें। भगवती के चित्र के सामने कुंकुम से रंगे हुए लाल चावल की ढेरी बना कर उस पर ‘आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र’ को स्थापित करें। इसके चारों ओर नवदुर्गा स्वरूप ‘नौ शक्तिचक्र’ स्थापित करें। दुर्गा यंत्र के सामने ‘श्री साफल्य गुटिका’ स्थापित करें। यंत्र के समक्ष दीप-धूप प्रज्ज्वलित कर दें। ये नौ शक्तिचक्र नवदुर्गा शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्रि के प्रतीक रूप हैं, इनमें प्रत्येक का पूजन गुलाब, अबीर, कुंकुम, अक्षत, मौली इत्यादि से करें। इसके बाद -

आचमन

दाहिने हाथ में जल लेकर स्वयं आचमन करें -

ॐ ऐं अत्मतत्त्वं शोधयामि नमः ॥

ॐ ह्रीं विद्यतत्त्वं शोधयामि नमः ॥

ॐ वलीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः ॥

इसके बाद हाथ धो लें।



आसन शुद्धि

आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथिवी त्वया धृता लोकं देवि त्वं विष्णुजा धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं ॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लें -

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया
प्रवर्त्मानस्य अस्य ब्रह्मणो द्वितीयं पराद्वें श्वेत
वाराह कल्पे जम्बुदीपे भस्तस्त्रद्वें उग्यविर्तेकं देशन्तर्गते
पुण्य क्षेत्रे कलियुगे, कति प्रथम चरणे अमुक
जोत्रोत्पझोऽहं (अपना जोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं
(अपना नाम बोलें) सकल दुःख दारिद्र्य निवृत्तिम्
मन्त्रोक्तमन्त्रा पूर्ति निमित्तं भगवती दुर्गा सिद्धि प्राप्ति
निमित्तं च पूजनं करिष्ये ॥

जल छोड़ दें।

तंत्र शास्त्र में पुरुष को शिव और नारी को शक्ति कहा गया है। शक्ति द्वारा संचरण गति और कर्म सामर्थ्य प्राप्त किए बगैर शिव की स्थिति भी शब्द जैसी होती है। नवरात्रि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली शक्ति आराधना का श्रेष्ठतम् काल होता है, जिसमें समस्त देवों की सम्मिलित शक्ति से अवतरित हुगा की आराधना के द्वारा शक्ति प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

नवरात्रि में नौ हुगाओं के पूजन की परम्परा पौराणिक काल से चली आ रही है। मार्कंडेय पुराण में नौ हुगा के नौ स्वरूपों का वर्णन मिलता है। ये हैं: शीलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, संकदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। नवरात्रि के नौ दिनों में इन स्वरूपों की ही पूजा की जाती है, किन्तु शुद्ध चैतन्य की उपासक तांत्रिक परम्परा के में दस महाविद्याओं की साधना की जाती है। ये हैं - काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिङ्गमस्ता, त्रिपुरमीरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला। हुगा सम्प्रशती द्वारा शक्ति आराधना तो अधिक गोपनीय नहीं होती। विधि-विधान के साथ सामान्य व्यक्ति भी हुसे आसनी से कर सकता है। सामान्य जन के मंगल अनुष्ठानों में तो षोडश मातृकाओं की पूजा अनिवार्य रूप से की जाती है। विवाह आदि मंगल अवसरों पर भी गौरी, पद्मा, शाची, मेघा आदि पंद्रह माताओं के साथ सोलहवीं कुलदेवी का पूजन होता है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र में युद्ध आरंभ करने से पूर्व योगेश्वर कृष्ण के परामर्श पर अर्जुन ने भी विजय के लिए हुगा की अनूठी आराधना की थी। अपनी आराधना से प्रसन्न हुगा ने प्रकट होकर अर्जुन को विजय आशीर्वाद दिया था।

गणपति पूजन

ॐ गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः ।
एष्यास्तत्र समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । तिलकं अक्षतात्
व समर्पयामि । धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

गुरु पूजन

इसके बाद गुरुदेव का पंचोपचार पूजन जल, केशर/कुंकुम, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य से करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

कलश-स्थापन

अपनी बांयी ओर जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश स्थापन करें। उसमें जल भर दें। इसके बाद कलश में चारों ओर कुंकुम से चार तिलक लगा दें। उसमें सुपारी, अक्षत, दूब और पुष्प तथा गंगाजल डालें। ऊपर नारियल रख दें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च एतन्यां बहो रात्रे
याश्वै लक्ष्म्राणि स्त्रयमश्विनौ व्यातम् ।
इष्टान्निष्टाण मुम्मङ्गिष्टाण सर्वतोकम्मङ्गिष्टाण ॥

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावल को दाहिने हाथ से निम्न मंत्र को पढ़ते हुए कलश पर चढ़ावें।

ॐ महाकाल्यै नमः । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ
महासरस्वत्यै नमः । ॐ बन्दजायायै नमः । ॐ धूमायै
नमः । ॐ शकम्भर्यै नमः । ॐ भ्रामर्यै नमः । ॐ
दुर्गायै नमः ॥

भगवती हुगा के चित्र को पानी का छींटा देकर साफ कपड़े से पोंछ दें और पूजन करें -

द्याव

दोनों हाथ जोड़कर, हुगों के नाश हेतु ध्यान करें -

दुर्जे स्मृता हरसि भीतिमशेष जनतोः,
स्वस्त्यैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्ये दुःख भव हारिणी कात्वदन्या,
सर्वोपकार करणाव सदर्द चित्ता ॥

आहूवान

भगवती का आवाहन करें -

ॐ जगदम्बावै नमः आहूवायव्यामि स्थापयामि ।

पाद्य

जल में दूध मिलाकर दूब में चढ़ावें।

ॐ जगदम्बावै पादं समर्पयामि नमः ॥

आचमन

लौंग तथा जायफल जल में डाल कर चढ़ाये -
ॐ जगदम्बायै आचमनं समर्पयामि नमः ॥

अष्टर्य

दूब, तिल, चावल एवं कुकुम जल में डाल कर चढ़ाये -
ॐ जगदम्बायै अष्टर्यं समर्पयामि नमः ॥

मधुपर्क

दूध में दही, धी एवं शहद मिला कर चढ़ाये -
ॐ जगदम्बायै मधुपर्कं समर्पयामि नमः ॥

स्नान

स्नान हेतु जल चढ़ाये
परमानन्द बोधाभिं निमग्नं निजमूर्तये ।
सांगोपांगं मिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते ॥

वस्त्र

वस्त्र के स्थान पर मौली चढ़ाये -
ॐ जगदम्बायै वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः ।
जन्थं अक्षतान् समर्पयामि नमः ॥

पुष्प, धूप, दीप

ॐ जगदम्बायै पुष्पं धूपं दीपं दर्शयामि नमः ॥

भैवेद्या, दक्षिणा

ॐ जगदम्बायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।
दक्षिणां द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥

नवदुर्गा के हाँ स्वरूप

नवदुर्गा के नौ स्वरूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिरात्रि हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में प्रत्येक दिन नवदुर्गा के एक-एक कर नौ दिन में सभी रूपों का मंत्र जप करना है। अर्थात् प्रथम दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी नवें दिन सिद्धिरात्रि का मंत्र जप करना है।

शैलपुत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि । इहागच्छ इहतिष्ठ,
शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि नमः ।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्गुणे सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
पूजां गृहण कौमारि जगन्तमातमोऽस्तुते ॥

ब्रह्मचारिणी

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि । इहागच्छ इहतिष्ठ
ब्रह्मचारिण्यै नमः । ब्रह्मचारिणीमावाहयामि

स्थापयामि नमः ॥

ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां मार्गज्ञानस्वरूपिणीम्,
त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥

चन्द्रघण्टा

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघण्टे इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रघण्टायै
नमः । चन्द्रघण्टामावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

ॐ कालिकां तु कालतातीतां कल्याणं हृदयां शिवाम्,
कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥

कूष्माण्डा

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ
कूष्माण्डायै नमः । कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि
नमः ॥

ॐ अणिमादिगुणोदारां मकराकारचक्षुषाम्,
अनन्त शक्ति मेघां तां कामाक्षीं पूजयाम्यहम् ॥

स्कन्दमाता

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः । इहागच्छ इहतिष्ठ
स्कन्दमात्र्यै नमः । स्कन्द मातस्मावाहयामि स्थापयामि
नमः ॥

चण्डवीरां चण्डग्रात्रां चण्डमुण्ड प्रभिजनीम्,
तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥

कात्यायनी

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनी । इहागच्छ इहतिष्ठ
कात्यायन्यै नमः । कात्यायनीमावाहयामि स्थापयामि
नमः ॥

ॐ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वं देवैर्नमस्कृताम्,
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥

कालरात्रि

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि । इहागच्छ इहतिष्ठ
कालरात्र्यै नमः । कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि
नमः ॥

चण्डवीरां चण्डमात्यां रक्तबीज प्रभिजनीम्,
तां नमामि च देवेशीं जायत्रीं पूजयाम्यहम् ॥

महागौरी

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरी । इहागच्छ इहतिष्ठ महागौर्यै
नमः । महागौरीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुख सौभाग्यदायिनीम्,
सन्तोष जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

सिद्धिदात्रि

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदेऽहम् इहतिष्ठ सिद्धिदात्रे
नमः । सिद्धिदात्रिमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

ॐ दुर्गमे दुस्तरेकार्यं जयदुर्गं विनाशिनि ।
पूजयामि सदा भक्तया दुर्गं दुर्गतिनाशिनीम् ॥

नवरात्रि साधना विधान के अनुसार प्रत्येक दिन नवदुर्गाओं
का ध्यान कर उनकी पूजा कर पुष्प अर्पित करने के पश्चात्
ही मूल शक्ति जगदम्बा दुर्गा की साधना मंत्र जप सम्पन्न करना
चाहिये -

स्नानं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः
पानी का छोटा देकर वस्त्र से यंत्र को पोंछ लें ।

तिलकं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः ॥
कुंकुम को तिलक करें ।

धूपं आधापयामि, दीपं दर्शयामि, ॐ जगदम्बायै नमः ॥
धूप और दीप जलावें ।

पुष्पं समर्पयामि, ॐ जगदम्बायै नमः ॥
पुष्प चढ़ावें ।

नवदुर्गा माला पर भी कुंकुम और पुष्प चढ़ायें ।

मंत्र

‘नवदुर्गा माला’ से 5 माला निम्न मंत्र का जप करें -

॥ ॐ दुर्गं दुर्गं दुर्गतिनशय दुर्गं ॐ फट ॥

आरती

इसके पश्चात मां भगवती जगदम्बा की आरती सम्पन्न करें ।

सुमर्पण

गुह्यातिगुह्यगोम् त्वं गृहणास्मत् कृतं जप्यम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि ॥

इसके बाद भगवती को प्रणाम कर प्रदक्षिणा करें । दोनों
हाथ में पुष्प लेकर भगवती को चढ़ावें तथा प्रसाद वितरण करें ।

नवरात्रि साधना पूर्ण होने के बाद लाल वस्त्र में बांध कर
यंत्र शुटिका और माला को जल में प्रवाहित कर दें । कलश के
जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल
दें । कलश के ऊपर जो नारियल है, उसे प्रसाद के रूप में
सपरिवार ग्रहण करें ।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन किसी कुमारी कन्या को
भोजन करा कर उचित दक्षिणा प्रदान करें ।

दुर्गा जी की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय शथामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥१॥

ॐ जय अम्बे गौरी

मां भ सिंहदूर विराजत टीकी मृतमदकी ।
उडवल से दीऊ नैना, चंद्रवदन नीकी ॥२॥

ॐ जय अम्बे गौरी

कनक समान कलैवर रत्नाम्बर राँड़ी ।
रत्न पुष्प नल माला, कण्ठन पर साँड़ी ॥३॥

ॐ जय अम्बे गौरी

कैहरि वाहन राजत, खंडन खप्पर धारी ।
सुर नर मुनि डन सैवत, तिनके दुःखहारी ॥४॥

ॐ जय अम्बे गौरी

कानन कुण्डल शीभित, नासावै गौरी ।
कौटिक चठड़ किवाकर सम राजत डयीति ॥५॥

ॐ जय अम्बे गौरी

शुभ्र निशुभ्र विदारै, महिषासुर-धाती ।
धूम विलीचन नैना निशिदिन भद्रभाती ॥६॥

ॐ जय अम्बे गौरी

चण्ड मुण्ड संहारै, शीणितबीज हरे ।
मधु कैटज दीउ मारै, सुर भयहीन करे ॥७॥

ॐ जय अम्बे गौरी

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आवम लिनम बसानी, तुम शिव पटरानी ॥८॥

ॐ जय अम्बे गौरी

चौसठ यीविनी नावत, नृत्य करत श्रैरव ।
बाजत ताल मृदंबा और बाजत डभरु ॥९॥

ॐ जय अम्बे गौरी

तुम ही डन की माता, तुम ही ही भरता ।
भरत दी दुःखहता, सुख सम्पति करता ॥१०॥

ॐ जय अम्बे गौरी

भुजा आठ अति शीभित, वर मुद्रा धारी ।
सब मजदौषित फल पावत, सैवत नर नारी ॥११॥

ॐ जय अम्बे गौरी

कंचन धाल विराजत अवर कपूर बाती ।
श्री माल कैतु मैं राजत कीटि रतन डयीति ॥१२॥

ॐ जय अम्बे गौरी

हम अति दीन दुखी मां विपति जाल धैरै ।
हम कपूर अति कपटी पर बालक तैरै ॥१३॥

ॐ जय अम्बे गौरी

श्री अम्बे जी की आरती जी कोई नर नावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पर्वै ॥१४॥

ॐ जय अम्बे गौरी

जीवन का सौभाग्य इसी में है

गुरु शरण में जाकर

अपने अन्तःकरण के दीप को प्रज्ञवलित कर लो

तब सद्गुरु का
उद्घोष होगा

आप्पों दीप भव

यह प्रकाश अमृत स्वरूप है और जीवन की अविदाम यात्रा पर चलने का बल देता है।

यही गुरु का वास्तविक बल होता है, जो अक्षय होता है, नित्य होता है।

एकलव्य के नाम से शायद ही कोई भारतीय अपरिचित हो। आध्यात्मिक जगत के व्यक्तियों के लिए तो यह नाम केवल एक व्यक्तित्व का सूचक ही नहीं, साक्षात् तीर्थ के समान पवित्र है, शिष्यों के लिए वह हिमालय की ऐसी चोटी है, जहां तक वे चढ़ना चाहते हैं। ऐसा क्या है, इस नाम में?

वह न तो समाज के उच्च वर्ग से सम्बन्धित था, न लक्ष्मी पति था, न किसी राज्य का स्वामी था, फिर भी प्रत्येक भारतीय का सिर, एकलव्य शब्द सुनकर श्रद्धा से झुक ही जाता है। वह अपने आप में शिष्यता के आकाश में ध्रुव तारे के समान है। उसकी उपमा वी जाती है, एक शिष्य के लिए इससे बड़ा सम्मान हो भी क्या सकता है?

क्या एकलव्य ने यह स्थान अपनी विद्या के कारण अर्जित किया? क्या वह अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धर होने के कारण विख्यात हुआ या फिर गुरु द्रोणाचार्य द्वारा दक्षिणा में अंगूठा के समय अपने प्रिय शिष्य आनन्द से कहा था और यह वाक्य मांग लिए जाने के कारण अपने त्याग से अमर हो गया। ये वस्तुतः एक आस वाक्य है, जो मात्र ढाई हजार वर्ष पूर्व ही सभी बातें सत्य हैं, किन्तु इन बातों से भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य एक बात में छुपा है। वस्तुतः जो तथ्य कहे नहीं जाते, वे तथ्य ही व्यक्ति के, समाज के अन्तर्मन में गहरे बैठ जाते हैं। और वे पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा के रूप में गतिशील होते हैं। जिस प्रकार छल से एकलव्य का अंगूठा लिया गया, उसे समाज कभी न भुला सका और यही कारण है कि, अन्यथा श्रेष्ठतम् योद्धा व भगवान् कृष्ण के सखा होते हुए भी अर्जुन देवताओं की भाँति पूज्य न हो सके।

दूसरी ओर एकलव्य इसलिए महान और पूज्य हुए, क्योंकि उन्होंने यथार्थ में गुरु तत्व को हृदयंगम किया था। उन्होंने यथार्थ में गुरु तत्व की महता समझी थी और उसे अपने प्राणों से पूजा था। यही कारण था, कि अन्यथा वह गुरु द्रोणाचार्य के सम्पर्क में आये बिना धनुर्विद्या की पराकाष्ठा तक कैसे पहुंच सका। गुरु द्रोणाचार्य भी इस तथ्य को

समझते थे, किन्तु वे अर्जुन से वचनबद्ध थे और उन्होंने दक्षिणा में अंगूठा मांग लिया। एकलव्य को इससे कोई अंतर नहीं पड़ता था, क्योंकि वह अपने गुरु की दृष्टि में ऊंचा उठ चुके थे और वे ही सही रूप में 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये' की भावना को समझ सके थे।

एकलव्य की कथा जहां एक ओर गुरु शिष्य मर्यादा की पराकाष्ठा की सूचक है, वहीं गुरु तत्व को आत्मसात् करने की भी सूचक है। जब गुरु को देह से परे जाकर पूजा जाता है, तभी वे हृदय में समा सकते हैं और जिसके हृदय में गुरुदेव समा गए हों, उसे ज्ञान के लिए कहीं भटकने की आवश्यकता ही क्या? जो अपने गुरु की दृष्टि में ऊंचा उठ गया, उसे फिर यथार्थ में किसी अन्य सम्मान की आशा ही कहां और क्यों?

'अप्प दीपो भव' यह वाक्य भगवान् बुद्ध ने अपने महानिर्वाण विख्यात हुआ या फिर गुरु द्रोणाचार्य द्वारा दक्षिणा में अंगूठा के समय अपने प्रिय शिष्य आनन्द से कहा था और यह वाक्य मांग लिए जाने के कारण अपने त्याग से अमर हो गया। ये वस्तुतः एक आस वाक्य है, जो मात्र ढाई हजार वर्ष पूर्व ही नहीं अनादि काल से अस्तित्व में रहा है। भगवान् बुद्ध ने उसकी केवल समयानुसार प्रस्तुति की। भगवान् बुद्ध के गमन के समय जब आनन्द ने पूछा - 'भगवन्! अब हमें कौन ज्ञान देगा? हम किसके पास बैठकर अपनी शंकाओं, जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करेंगे? क्या आप द्वारा प्रदत्त ज्ञान आधार द्वारा ही रह जाएगा?

उत्तर में भगवान् बुद्ध ने यहीं अंतिम उपदेश दिया - 'अप्प दीपो भव, अप्प सारणा, अनन्त सरणा'। अर्थात् अपने आप के दीपक स्वयं बनो स्वयं की ही शरण में जाओ, वही उस अनंत की शरण है।

प्रत्येक महापुरुष अंत में इसी ओर आने का सकेत करते हैं, क्योंकि सब कुछ जान लेने के बाद भी जो आधा अधूरापन ज्ञेष रह जाता है, उसकी कोई व्याख्या अन्य किसी प्रकार से संभव ही नहीं।

प्रश्न यह उठता है, कि व्यक्ति स्वयं का दीपक कैसे बने? स्वयं का दीपक बन सकता, तो उसे गुरु की शरण में जाने की आवश्यकता ही क्या थी? वस्तुतः स्वयं का दीपक स्वयं ही बनना साधना की अंतिम अवस्था है, न कि प्रारम्भिक। गुरु का सारा प्रयास इसी बिन्दु तक लाने के लिए होता है और इसके बाद आगे की यात्रा स्वयं ही करनी पड़ती है। यह प्रकाश अपनी ही आत्मा का प्रकाश होता है। जब हम थक जाते हैं, जीवन के द्वन्द्वों में हताश हो जाते हैं, कुप्रवृत्तियों का समाजव्यापी विष आकर हमारी चेतना को दग्ध कर जाता है, जब अविश्वास और निराशा का घोर अंधकार छा जाता है, तब यही प्रकाश कहीं बाहर से न आकर हमारे अंदर से उद्भूत होता है और आगे का मार्ग प्रशस्त करता है।

यह प्रकाश अमृत स्वरूप है। जब संघर्ष हमारी सारी चेतना का हरण कर लेते हैं, जब हृदय हताश और मृतप्राय हो जाता है, जब हमारे हृदय की सारी श्रेष्ठ भावनाएं मृत हो जाती हैं, जब जीवन से माधुर्य चला जाता है, जब हम अशक्त, दुर्बल और स्वयं को पापी मानने की मनोदशा में घिर जाते हैं, तब यही प्रकाश आकर हमें सहारा देता है और जीवन की अविराम यात्रा पर चलने का बल देता है। यही गुरु का वास्तविक बल होता है, जो अक्षय होता है, नित्य होता है।

जीवन को यदि भौतिक पक्ष ही मान लें, तब भी वह मन पर निर्भर करता है। बिना मनः स्थिति श्रेष्ठ हुए जीवन का भौतिक पक्ष भी शून्य ही होता है, व्यक्ति उसका रसास्वादन नहीं कर सकता है - यह मन सजाता संवरता व सबल होता है, तो केवल आध्यात्मिक जीवन से। अन्तः प्रकाश के बिना बाह्य पक्ष का कोई महत्व नहीं। यह देह तो नश्वर है, जो स्वयं में एक प्रकार से मृतप्राय ही है, वह प्रकाशित होती है तो अन्दर जलते दीप से ही, गतिशील और आह्वादित होती है उसी दीपक से। जब ऐसा होता है तब जीवन जीने का कोई अर्थ लगता है अन्यथा तो यह एक दिनचर्या बनकर रह जाता है।

बुद्धिमत्ता और सौभाग्य इसी में है, जिन्होंने गुरु शरण में जाकर अपने अन्तः करण में स्थित इस दीपक को प्रज्ञवलित कर लिया और भविष्य के पथ पर बिना ठोकर खाए आगे बढ़ सके। एक बात और स्मरण रखने योग्य है, कि जहाँ-जहाँ प्रकाश की बात है, वहाँ पीड़ा का पक्ष भी जुड़ा ही हुआ है, क्योंकि प्रकाश उत्पन्न होता है जलने से और जलने में पीड़ा तो होगी ही, फिर भी यह पीड़ा उस अंधकार में घिरे, निराश बैठे रहने से श्रेष्ठ है। पीड़ा तो प्रत्येक कार्य में है। जिसे हम भौतिक सुख कहते हैं, उसे प्राप्त करने में भी तो पीड़ा ही है।

बुद्धिमत्ता और कौशलाग्रय इक्षी में है, जिन्होंने गुरु शरण में जाकर अपने अन्तः एवं किंवित इक्ष दीपक को प्रज्ञवलित किया था एवं पथ पर बिना ठोकर खाए आगे बढ़ सके।

जीवन को सजाने संवर्णन के लिए हम जिस कड़ी मेहनत को करते हैं, क्या वह भी एक प्रकार की पीड़ा नहीं है? जहाँ भौतिक पक्ष में यह पीड़ा अंत में भी कोई विशेष सुखदायी नहीं है, वही आध्यात्मिक पक्ष में यह पीड़ा अंत में निश्चित सुखदायी है।

जो प्रकाशवान होते हैं, वे ही श्रेष्ठ और सम्माननीय भी होते हैं, क्योंकि उनके प्रकाश में कई और भी दिशा पाते हैं। प्रकाश का यह गुण होता है, कि वह स्वयं के लिए नहीं होता। बिना इस प्रकाश के, बिना आत्मचेतना की निर्मल आभा के कोई भी जनकल्याण या समाज कल्याण की बात कहना भी व्यर्थ है। बिना आत्मज्ञान के न तो समाधि का कोई अर्थ है न कुण्डलिनी जागरण का। केवल कुछ दीक्षाओं को प्राप्त कर उसी का अहंमन्यता में दूब जाने से ही यह अवस्था प्राप्त नहीं होती, वरन् सतत चलते ही रहना पड़ता है और सतत तो हमें दैनिक जीवन में भी नित्य चलना ही पड़ता है। प्रतिदिन भोजन करना पड़ता है, प्रतिक्षण इच्छा-प्रश्नास लेनी पड़ती है, हृदय को प्रतिक्षण धड़कना पड़ता है और स्नायु तंत्र को प्रतिक्षण सतर्क रहना पड़ता है और ऐसी ही अपने शरीर की सैकड़ों ज्ञात-अज्ञात क्रियाओं के कारण ही हम जीवित रहते हैं, तो यही बात अध्यात्म के क्षेत्र में भी सत्य क्यों नहीं होगी?

वस्तुतः जीवन की इस अवस्था तक आने के लिए सतत प्रयासशील रहना पड़ता है। यह अवस्था किसी को दीक्षा के माध्यम से प्राप्त हो जाती है, किसी को शक्तिपात के माध्यम से, किसी को भावनाओं के माध्यम से, किसी को सेवा (निःस्वार्य) के माध्यम से, तो किसी को गुरुदेव की अहैतु की कृपा के माध्यम से। इसके कोई दृढ़ नियम हैं भी, वे भी हमारी बुद्धि से परे हैं। इसी कारणकरा साधक को गुरु साहचर्य में अधिकाधिक आने की बात शास्त्रों में वर्णित है।

यह तो बस एक क्षण की बात है, पता नहीं, कब किसके अन्दर कैसे चिनारी कृट जाए और केवल उसका ही नहीं, उसके आस-पास का जीवन भी प्रकाशित हो जाए।

...और इसी प्रकाश में स्नोकर जीवन की परम शांति और समाधिगत अवस्था भी निहित है।

शिष्य धर्मी

“शंकर भाष्य” ग्रंथ में जगद् गुरु शंकराचार्य ने शिष्यकी पांच कसौटियां एखीं, पांच पहचान बताईं, शिष्य के पांच लक्षण बताए जो इस प्रकार से हैं।

- ❖ अगर वह शिष्य है तो फिर उसके हृदय में गुरु ही स्थापित होंगे, चौबीस घंटे, उसके मानस में गुरु शब्द ही होगा, मुँह से कुछ निकलेगा तो केवल गुरु ही निकलेगा और उसका जो भी खाली समय होगा, चाहे एक घंटा हो या दो घंटे हों, वह गुरु के प्रति ही समर्पित होगा।
- ❖ शिष्य वह है, जो कि गुरु की जो इच्छा है उसमें वह सहायक बने, गुरु के कार्य के प्रति उसके जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित हो। जिस कार्य को करने से गुरु को प्रसन्नता होगी वह कार्य शिष्य करे। उसके मन में तड़प होनी चाहिए कि मैं आगे बढ़कर गुरु सेवा का कार्य मांगूँ।
- ❖ शिष्य वह है, जो कि छाया की तरह गुरु के साथ रहे, जैसे छाया आदमी से अलग नहीं हो सकती, आप दो कदम चलेंगे तो छाया भी साथ चलेगी। शिष्य भी ऐसा ही हो और जब भी गुरु आवाज दे वह सामने खड़ा हो। उसके अंदर हर समय गुरु के पास रहने की तड़प हो। गुरु की रक्षा के लिए, गुरु की सेवा के लिए, गुरु के दर्द को बांटने के लिए वह हर समय तत्पर हो, तैयार हो।
- ❖ शिष्य पूर्ण निष्ठा और विश्वास केवल और केवल अपने गुरु में रखें और उनके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर भी कर दे। सब कुछ न्यौछावर करने का अर्थ यह नहीं कि आप अपना मकान गुरु के नाम लिख दें। इसका तो अर्थ यह है कि हर क्षण जीवन का, गुरु सेवा में समर्पित कर दें।
- ❖ अगर वह शिष्य है तो पूर्ण रूप से गुरु में समाहित हो जाए। फिर वह गुरु से अलग अपने आपको अनुभव ही न करे। हर क्षण उसे यहीं लगे कि वह गुरु से एकाकार हो गया है। गुरु और शिष्य में एक इंच का गैप भी दूरी बना देता है, फिर वह शिष्य नहीं कहलाया जा सकता। शिष्य का अर्थ यहीं है, जो पूर्ण रूप से गुरु में समा गया हो।

गुरु वाणी



★ धोड़े को आप लगाम पकड़ कर तालाब के किनारे ले जा सकते हैं, या उसको कह सकते हैं, कि यह पानी बहुत स्वच्छ है, यदि तू पिएगा तो प्यास बुझा जाएगी। पर यदि धोड़ा पानी पिये ही नहीं तो आप क्या कर सकते हैं? इसी प्रकार क्रिया तो आप को ही करनी है, गुरु तो केवल आपको रास्ता दिखाएँ सकता है।

★ जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है, परन्तु कुछ महापुरुष, कुछ अद्वितीय पुरुष, कुछ युग पुरुष ऐसे होते हैं जो मृत्यु की पगड़ंडी पर नहीं चलते अपितु अमृत के सागर पर पांव रखते हुए गतिशील होते हैं। वे युग पुरुष पृथ्वी पर नहीं चलते, अपितु वायुमंडल पर अपने चरण-चिन्हों को छोड़कर गतिशील होते हुए भी अगतिशील रहते हैं, क्योंकि सामान्य व्यक्तित्व ऐसे युग-पुरुषों को नहीं समझा पाता, और ऐसे ही युग पुरुष अयोनिज कहलाते हैं।

★ जहाँ ब्रह्म है वहाँ माया भी है, और माया उस व्यक्ति की आँखों पर एक परदा डाले रहती है, उसके मन में संशय-असंशय के भाव जाग्रत करती रहती है, उसके मन में विश्वास-अविश्वास की दीवार खड़ी किए रहती है। वह विश्वास ही नहीं कर पाता कि यह व्यक्ति, यह पुरुष, यह गुरु हमारे ही समाज हँसता है, रोता है, स्वाता है, पीता है, विचरण करता है और

ऐसी ही क्रियाएं करता है, जैसे हर व्यक्ति करता है, एक साधारण व्यक्ति करता है, और यह एक युग पुरुष हो सकता है!

- ★ ऐसे युग पुरुष को यह युग नमन करता है, देवता हर्षित होते हैं, अप्सराएं नृत्य करती हैं, और इस युग का भार्या विधाता बनकर अंधकार को दूर करता हुआ ज्ञान के प्रकाश को फैलाने में समर्थ होता है।
- ★ ...और ऐसा युग पुरुष तो सिद्धाश्रम से मृत्युलोक में आता है, पृथ्वी लोक पर आता है और जितने क्षण, जितना समय व्यतीत करना होता है उतना समय व्यतीत कर पुनः सिद्धाश्रम में चल जाता है। यहीं नहीं, अपितु वह निरंतर योग निद्रा के माध्यम से अपने पूरे शरीर को अंगुष्ठवत् बनाकर, सिद्धाश्रम में जाकर पूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है, वहाँ योगियों को साधनाओं में सिद्ध करता है, ऋषियों और मुनियों को ज्ञान और चेतना देता है।
- ★ और अगर आप ऐसे युग पुरुष, ऐसे गुरु को नहीं पहचान सकते वे, तो गुरु तो पूर्ण अवतार हैं ही, गुरु तो पूर्ण अंशावतार हैं ही। वे तो एक विशेष उद्देश्य को लेकर यदा-कदा पृथ्वी लोक पर आएंगे ही, और अपने कार्य को संपन्न कर पुनः किसी अन्य लोक में विचरण करने के लिए प्रस्थान करेंगे ही। मैं आशीर्वाद देता हूं कि आप के आत्मचक्षु जाग्रत हों, आप गुरु को, ऐसे युग पुरुष को समझा सकें और उनके द्वारा स्वपांतरित हो सकें श्रेष्ठतम बन सकें।



शक्ति तत्त्वा आर शादक साधना

आवश्यक है आपके जीवन में

शक्ति का तात्पर्य है प्रकृति, माया अर्थात् जिसने प्रकृति के माया के विशाल भण्डार में से एक अंश को भी अपने अदीन कर लिया, वही शक्तियुक्त है। जहां शक्ति है, वहां दुःख, वेदना, दारिद्र्य, दुर्भाग्य, अधार्म, अन्याय, आलस्य नहीं हो सकता। और जहां बुद्धि, विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है। शक्ति अग्नि तत्त्व की स्वामिनी है, जो शांत नहीं रह सकती, इसीलिए उपनिषद में कथन है, कि महादेव ही शक्ति के रूप में ईश्वर हैं, शक्ति के बिना शब्द रूप हैं, शक्ति के बिना किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न हो ही नहीं सकता, तो फिर इस आधारभूत शक्ति की साधना-उपासना साधक पूर्ण रूप से सम्पन्न क्यों नहीं करता?

शक्ति सगुण और निर्गुण, दोनों रूपरूपों में है। शक्ति के रूपरूप तृष्णि, श्रद्धा, तुष्टि, पुष्टि, काति, लज्जा तो हैं ही, इस महाशक्ति का रूपरूप ही लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री है। जब शक्ति सर्व सम्पन्न रूप में होती है, तो यह अपनी प्रकृति के अनुसार लक्ष्मी कहलाती है, तो कभी चण्डी, काली, तारा, गौरी, छिन्नमस्ता, भूवनेश्वरी, बगलामुखी, मातंगी, भैरवी इत्यादि अपने गुणों के अनुसार नाम धारण करती है।

शक्ति और साधक

जिस प्रकार अग्नि केवल हवा में नहीं रह सकती, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान के बिना अर्थात् साधक के बिना नहीं रह सकती, यह तो उससे जुड़ी हुई एक विशेष शक्ति है, जो केवल जन्म से ही उसके साथ हो, आवश्यक नहीं, अपितु उसकी साधना, इच्छा के अनुसार प्रवाहित होती है।

शक्ति, साधक को गतिशील बनाती है। जिस प्रकार अग्नि तीव्र होने पर ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्त्व का विकास होने पर वह अपने

जीवन में ऊपर उठता जाता है। अपने दुर्भाग्य पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन समझने वाले साधक को तो शक्ति कभी प्राप्त हो ही नहीं सकती और जब वह स्वयं उठ खड़ा होता है, साधना करता है तो उसके भीतर छिपी शक्ति का विस्फोट होता है, और यह निश्चित है, कि एक शक्ति दूसरी शक्ति से जुड़ी है, तभी तो शक्ति साधक को पूर्णता प्रदान करती है, माया और प्रकृति को उसके वश में करती है, यह महाशक्ति ही मातेश्वरी है, आद्या नारायणी शक्ति है, नारायण की महालक्ष्मी है, शिव की पार्वती है, गणेश की ऋष्टि-सिद्धि है, सूर्य की ऊषा है, इसके बिना तो सब कुछ अधूरा है।

आदि शक्ति महादुर्गा

दुर्गा को ही आदिशक्ति माना गया है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है और यही परब्रह्म स्वरूपा, परम तेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, विश्व जननी, मूल प्रकृति, ईश्वरी है, आदि देवी दुर्गा से ही मरुदण्ड, गंधर्व, अप्सरा, इन्द्र, अग्नि, अश्विनी कुमार की उत्पत्ति हुई और देवी के तेज स्वरूप में महाकाली के अतिरिक्त, धूमावती इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ, जो सब संसार की शत्रु बाधा को नष्ट करने में समर्थ हैं।

इस बार आपके लिये नवरात्रि की तीन महत्वपूर्ण साधनाएं भगवती महालक्ष्मी साधना, अम्बिका साधना और सीम्य काली साधनाएं दी जा रही हैं। जीवन के तीन महत्वपूर्ण बिन्दुओं आर्थिक उच्छति, पारिवारिक सुख-शांति और शत्रुबाधा-वलेश निवारण को स्पर्श करती ये साधनाएं अवश्य सम्पन्न करें। तभी आप अपने जीवन में शक्ति को पूर्ण रूप से जाग्रत कर सकते हैं।

भगवती दक्षी साधना

जीवन में ऐश्वर्य, धन, भौतिक सम्पदा, आर्थिक सफलता के लिये

हर मनुष्य की अपनी एक अभिलाषा होती है, कि मैं सम्पदा से परिपूर्ण होऊँ, क्योंकि दरिद्रता जीवन का अभिशाप है। मनुष्य जब से होश सम्हालता है, तब से लेकर जीवन में आखिरी दम तक धन-सम्पदा के लिए प्रयासरत रहता है। प्रयत्न करने के बाद भी यह जरूरी नहीं है, कि वह उस सम्पदा को प्राप्त कर सके, किन्तु हमारे ऋषियों ने, जो कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही सम्पदाओं से पूर्ण थे तथा निश्चित रूप से जो पूर्ण पुरुष थे। उन्होंने कुछ ऐसे उपाय अन्वेष किए थे, जिनके द्वारा अपने छोटे से जीवन काल में ऐश्वर्यवान बन सके। श्रेष्ठ ऐश्वर्य युक्त जीवन का निर्माण ही तो स्वर्णिम जीवन है।

शास्त्रों में विवरण आया है कि रावण की नगरी लंका स्वर्ण निर्मित थी, यह हो सकता है कि इसे उपमा अलंकार आदि द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर अवश्य बताया गया हो, पर इतना अवश्य निश्चित है कि लंका नगरी श्रेष्ठ भवनों से सुसज्जित, धन-धान्य-ऐश्वर्य से युक्त थी एवं अपार सम्पदा का स्वामी होने के कारण ही रावण के व्यक्तित्व में दृढ़ता और ऐश्वर्यता थी। सम्पत्तिशाली व्यक्ति ही जीवन में निःडर बन सकता है, स्वर्ण तो एक आधार है, जिससे सम्पदा का मापदण्ड होता है। भगवती दुर्गा की कृपा से जीवन में स्वर्णिम आभा और स्वर्णिम ऐश्वर्य प्राप्त हो सके, घर में बसी निर्धनता को पूर्णता से समाप्त किया जा सके, जिससे आने वाली पीढ़ी को भी निर्धनता का सामना न करना पड़े, ऐसी ही श्रेष्ठ साधना भगवती साधना है।

नवरात्रि कल्प में अथवा किसी भी मास की अष्टमी या अमावस्या को अपने सामने ‘पारदेश्वरी दुर्गा’ को स्थापित करें। अपने दांयी ओर यंत्र के समीप ‘स्वर्णाकर्णण गुटिका’ को स्थापित करें। पहले निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र को स्नान करावें -

जंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति,
मर्मदे सिन्धु कावेरि, स्नानार्थं प्रतिगृहताम् ।

जंगर जलं समर्पयामि नमः ।

यमुनर जलं समर्पयामि नमः ।

गोदावरी जलं समर्पयामि नमः ।

सरस्वती जलं समर्पयामि नमः ।

मर्मदा जलं समर्पयामि नमः ।

सिन्धु जलं समर्पयामि नमः ।

कावेरी जलं समर्पयामि नमः ।

इसके बाद यंत्र व गुटिका को शुद्ध वस्त्र से पोंछ कर निम्न मंत्रों को बोलते हुए पांच बार भगवती दुर्गा को सिन्धूर का तिलक करें -

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः

महामोहा च भवति महादेवी महासुरी ।

स्वद्गिनी शूलिनी घोरा गदनी चक्रिणी तथा,

शंखिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥

इसके बाद अक्षत समर्पित करें -

सर्वं मंगलं मांगल्ये शिवे सर्वार्थं साधिके

शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ।

पुष्पमाल्यां समर्पयामि नमः ।

धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

फिर पारदेश्वरी दुर्गा के समक्ष आर्थिक सुदृढता के लिए प्रार्थना करते हुए निम्न मंत्र का आधे घण्टे जप करें -

मंत्र

॥३५ ऐं श्रीं सौर्य वर वरद धारिणै नमः ॥

यह 8 दिन का प्रयोग है, प्रयोग समाप्ति के बाद आपको अर्थोर्जन के नये स्रोत मिलने लगेंगे - ये व्यापार वृद्धि के रूप में हों या रोजगार प्राप्ति के रूप में, अकस्मात् धन प्राप्ति के रूप में हों या किसी भी अन्य रूप में, भगवती जगदम्बा के आशीर्वाद से आपको निश्चित रूप से सफलता मिलेगी, क्योंकि यह अत्यन्त तीव्र साधना है। साधना समाप्ति के बाद पारद दुर्गा एवं गुटिका को पूजा स्थान में ही रहने दें।

साधना सामग्री - 360/-

आम्बिकार लाठिना

श्रेष्ठ संतान प्राप्ति अथवा पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये

जगदम्बा महाशक्ति हैं, उन से ही समस्त विश्व का प्रादुर्भाव हुआ है, जिसका पालन-पोषण और रक्षा वे स्वयं पुत्रवत् करती हैं। जगदम्बा में वात्सल्य का स्वतः स्वभाव समाहित है। ये सभी प्राणियों को मां की तरह वात्सल्य प्रदान करती हैं, ममता से परिपूष्ट करती हैं, इसीलिए अम्बिका के रूप में जानी जाती है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए परिवार में पूर्णता आवश्यक है। गृहस्थ जीवन में मधुरता हो, श्रेष्ठ संतान हो, परिवार में कलह का वातावरण नहीं बने, क्योंकि शास्त्रों में घर को 'भुवन' कहा गया है। भुवन अर्थात् वह लोक, जहां व्यक्ति को शारीरिक तृप्ति के साथ मानसिक शांति भी प्राप्त हो, एवं जहां संतान श्रेष्ठ विद्या अध्ययन कर, अपने कुल का नाम विख्यात कर सके। अम्बिका साधना जगदम्बा के उस स्वरूप की साधना है, जिससे परिवार में भय, व्याधि, रोग, शोक दूर रहते हैं, भूत-प्रेत-पिशाच इत्यादि दूर रहते हैं। इसके साथ ही साथ परिवार में आपसी सामंजस्य, सौहार्द से तीव्र उन्नति निरन्तर होती रहती है। अतः इस साधना में परिवार के सभी सदस्यों को संयुक्त रूप से बैठना चाहिये।

प्रातः काले अपने सामने लाल आसन पर जगदम्बा यंत्र को किसी पात्र में स्थापित करें। फिर गुलाब जल से यंत्र को स्नान कराएं, कुंकुम से तिलक करें और पांच पुष्पों को यंत्र पर अर्पित करें। फिर निम्न श्लोक का उच्चारण करें -

**ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानि यति कश्चन्।
सुसस्त्व वस्तिकाम् काम पीत वासिनी॥**

धूप-दीप जलाकर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूर्व या उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाएं। गुरु-पूजन व गुरु मंत्र जप करने के बाद अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम उच्चारित करें और परिवार के मुखिया होने के नाते अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लें और संकल्प में भावना हो - 'मैं यह साधना पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये सम्पन्न कर रहा हूं। इस साधना का पुण्य फल मेरे पूरे परिवार को प्राप्त हो।'

ऐसा कहकर जल भूमि पर छोड़ दें, फिर दोनों हाथ जोड़कर करते रहें।
निम्न बोलें -

सिंहस्कन्ध समारूढां नानालङ्कार भूषिताम्।
चतुर्भुजा महादेवी नार वज्रोपवीतिनीम्॥
सत्त्वदस्त्र यरीधानां बालार्क सदृशीतनुम्।
नारदादै मुनिगणैः सेवितां भवजेहिनीम्॥

इस प्रकार ध्यान के पश्चात् यंत्र का पूजन करें। पहले यंत्र को जल से स्नान कराते हुए निम्न सन्दर्भ का उच्चारण करें -

जंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नम्दे सिन्धु कवेरि जलेऽस्मिन् सज्जिर्णि कुरु॥

यंत्र को पोंछ दें और निम्न सन्दर्भ बोलते हुए यंत्र पर कुंकुम से नौ बिन्दी लगावें -

ॐ अरं प्रभायै नमः।	ॐ ई मायायै नमः।
ॐ ऊ जयायै नमः।	ॐ ऐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ ए विशुद्धायै नमः।	ॐ ओ नन्दिन्यै नमः।
ॐ ऊं सुप्रभायै नमः।	ॐ अं विजयायै नमः।
ॐ अः सर्वसिद्धिदायै नमः।	

फिर निम्न मंत्रों को बोलते हुए यंत्र पर अक्षत चढ़ावें -

ॐ जयायै नमः।	ॐ विजयायै नमः।
ॐ कीर्त्यै नमः।	ॐ प्रीत्यै नमः।
ॐ प्रभायै नमः।	ॐ शुद्धायै नमः।
ॐ मेधायै नमः।	ॐ श्रुत्यै नमः।
ॐ प्रतिष्ठायै नमः।	

धूप-दीप, नैवेद्य से पूजन करके, दोनों हाथ में खुले पुष्प लेकर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर पुष्पांजलि चढ़ावें -

नाना सुजंघ पुष्पाणि वथा कालोद्भवानि च
पुष्पांजलि मर्या दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

निम्न मंत्र का 'सफेद हकीक माला' से नित्य 11 दिन तक प्रतिदिन 3 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ हौं श्री अम्बायै हौं श्री ऊ नमः॥

यह प्रातः कालीन साधना ज्यारह दिन की है, इसके बाद भी जब तक मनोकामना पूर्ति न हो तब तक 1 माला प्रतिदिन

साधना सामग्री - 300/-



सौम्य महाकाली साधना

यों तो काली, महाकाली और दक्षिण काली से सम्बन्धित कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर कई साधनाएं ग्रंथों में प्रकाशित हैं, परन्तु सौम्य दक्षिण महाकाली साधना, साधना क्षेत्र में अत्यन्त उच्चस्तरीय साधना मानी गई है। वामा क्षेपा जैसे तांत्रिक ने भी स्वीकार किया है कि महाकाली दक्षिण काली साधना सर्वाधिक गुद्ध, गुम, अलौकिक, अद्वितीय और अनुपम है। पूरे जीवन काल में बिरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है, कि वे ऐसी उच्च स्तरीय साधना को प्राप्त करें। इसके अलावा इस रहस्य को भी समझें, कि जब जीवन में पुण्योदय होते हैं तभी ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है।

त्रिजटा अधोरी तो विश्व के अद्वितीय आचार्य थे और उसने साधनाओं के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, उसने भी अपने तंत्र समुच्च्य सपर्या ग्रंथ में स्वीकार किया है, कि कई वर्ष भटकने के बाद और हजारों तांत्रिकों से मिलने के उपरान्त ही स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से मुझे दक्षिण महाकाली सौम्य साधना प्राप्त हुई और मेरे पास तंत्र के हजारों रत्नों में से यह अपने आप में अलौकिक अनुपम रत्न है।

सौम्य महाकाली साधना जन साधारण में कम प्रचलित है, इस कारण इस साधना को महत्वपूर्ण होना ही है, यह साधना एक प्रकार से पूरे जीवन का वरदान है और उच्च स्तरीय योगी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते थे जो जीवन भर उनकी सेवा करता था, और जो मन वचन

कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर अग्रसर होता था, जीवन के अंतिम समय में उसी को यह दिव्य साधना प्रदान की जाती थी।

काली का तात्पर्य

भारतीय आचार्यों ने भगवती काली को दस महाविद्याओं में सर्वप्रमुख स्थान दिया है, आचार्य भट्ट ने काली के तेरह अर्थ बताए हैं -

1. जिसकी साधना करने से काल का क्षय होता है, और व्यक्ति दीर्घायु एवं इच्छा मृत्यु प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।
2. काली का तात्पर्य है काल को पहचानने की क्षमता प्राप्त करने वाला, ऐसा साधक भूत, भविष्य और वर्तमान को एक पल में पहचान लेता है।
3. काली का तात्पर्य जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं को समाप्त करने वाली महादेवी।
4. काली जीवन के समस्त विकारों, दोषों, अपराधों को समाप्त करने वाली है, शराब के व्यसन और अन्य बुरी आदतों को एक ही क्षण में समाप्त कर काम, क्रोध, लोभ मोह तथा अहंकार से परे हटाकर साधक को मोक्ष के मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाली है।

5. काली को राज राजेश्वरी भी कहा गया है, इसका साधना विधान तात्पर्य है कि यह उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रदाता है, काली शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार साधक रात्रि में अपने पूजा की साधना करने से साधक के जीवन में स्वतः व्यापार स्थान में शुद्ध वस्त्र लाल धोती पहनकर और गुरु चादर पहन वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।
6. काली विन्ध्यवासिनी है, इसका तात्पर्य है कि जीवन में यह साधना पूर्ण भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।
7. इसे शरण्य कहा गया है, यह जीवन के समस्त दुःखों को समाप्त कर पूर्ण ध्यान लगाने में समर्थ और सहायक है।
8. यह विज्ञान रूपा है और इसकी साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और साधक सभी क्षेत्रों में निरन्तर उन्नति करता रहता है।
9. यह दुर्गा स्वरूपा है, अतः जीवन में आने वाली बाधाओं को तुरन्त समाप्त करने में सहायक है।
10. यह आपत्ति उद्धारक महादेवी है, इसकी साधना करने से पूरे जीवन काल में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।
11. यह सर्व सिद्धि प्रदायक है, छोटी-मोटी साधनाओं या विविध साधनाओं में समय बरबाद करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।
12. काली को प्रबल रोग मुक्ता कहा गया है, यह समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदलने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।
13. यह महाविद्याओं में प्रमुख है, इसकी साधना करने से अन्य सभी महाविद्याएं स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

सौम्य दक्षिण महाकाली

वशिष्ठ, विश्वामित्र, ब्रह्मा सहित शंकराचार्य तथा अन्य महत्वपूर्ण योगियों ने, तांत्रिकों ने सौम्य महाकाली साधना के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है, उस वर्णन से यह स्पष्ट है कि यह साधना कल्याणकारी और मनोवांछित पूर्णता-सिद्धि साधना है, शक्ति तथा लक्ष्मी के साथ-साथ तेजस की साधना मूल रूप से सौम्य महाकाली साधना है।

इस साधना को सम्पन्न करने में न तो आयु का बंधन है, और न ही गृहस्थ अर्थात् विवाहित, अविवाहित, स्त्री अथवा पुरुष का बंधन है।

शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार साधक रात्रि में अपने पूजा स्थान में शुद्ध वस्त्र लाल धोती पहनकर और गुरु चादर पहन कर तथा साधिकाएं लाल साड़ी पहन कर साधना करें।

इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए तीन दुर्लभ वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिनके माध्यम से यह साधना पूर्ण सिद्धि की जा सकती है।

रात्रि में साधक-साधिका लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाएं और सामने तेल का दीपक लगा लें, फिर सामने ही लाल वस्त्र बिछाकर दीपक के आगे 'त्रिशक्ति गुटिका' को स्थापित कर दें और 'सौम्य महाकाली यंत्र' और चित्र को स्थापित कर दें, और यंत्र के ऊपर 'काली हकीक माला' को रखकर इन सभी को सिन्दूर का तिलक कर, पूजन करें।

इसके बाद इन सभी तत्वों का सामूहिक पंच पूजन करें, पंच पूजन में जल, केसर, अक्षत, पुष्प एवं प्रसाद समर्पित करें, पुष्प यथा संभव लाल रंग के ही उपयोग में लाने चाहिए और प्रसाद दूध का बना हुआ किसी भी प्रकार का पदार्थ, भोग में रखा जा सकता है।

इस पूरी साधना में केवल 11 माला मंत्र जप करने का विधान है, साधक चाहे तो इससे ज्यादा भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है।

सौम्य महाकाली मंत्र
॥ॐ क्रीं क्रीं कर्त्तीं कर्त्तीं सौम्य दक्षिण
कालिके कर्त्तीं कर्त्तीं क्रीं क्रीं फट्॥

यह मंत्र अपने आप में अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे मंत्र को गलत लोगों के हाथ में न दें, और कुकर्मा, आलोचक और निन्दक लोगों को भी इस साधना का रहस्य नहीं समझाएं।

यह साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है, दरिद्रता निवारण, पाप दोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शुत्रभय शांति हेतु यह सौम्य महाकाली साधना सर्वश्रेष्ठ है।

साधना की पूर्णता के पश्चात् चित्र, रुद्राक्ष और सौम्य महाकाली यंत्र को पूजा स्थान में ही रख दें, काली हकीक माला को काले कपड़े में बांध कर अपने घर में रुपये पैसे के स्थान पर अर्थात् तिजोरी की जगह रखना चाहिए। ऐसा करने से धन की अभिवृद्धि होती है।

पांच ऐसी प्रमुख साधनाएं



जिन्हें वर्ष भर में एक बार अवश्य करना चाहिये
और किर इसके लिए

बद्रशनि से शैष्ठ मुहूर्त कौन्ज सा है

द्वात्सु जाधना

हरयी जाधना

द्वात्सु चौक्ति जाधना

सरसीहन्ज जाधना

द्वात्सु चूहवी जाधना

1. तारा साधना -

सम्पूर्ण लक्ष्मी सिद्धि हेतु

दस महाविद्याओं में से यह प्रमुख महाविद्या तथा संसार की अद्वितीय धनदायक देवी है। हजारों वर्षों से ऋषि मुनि व हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते आये हैं, क्योंकि निष्ठापूर्वक की गई इस साधना में सफलता प्राप्त होती ही है और मनोवाञ्छित वरदान प्राप्त होता है।

इसके साथ ही इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या सिद्ध हो जाती है और भौतिक दृष्टि से जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, उसे प्राप्त हो जाता है।

साधना विधान

इस साधना को दिनांक किसी भी माह के रविवार की रात्रि को किया जाये तो शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकती है। स्नान से मंत्र जप प्रारम्भ करें, इसमें नित्य 60 माला मंत्र जप अनिवार्य आदि कर, लाल धोती पहन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा

की ओर मुख कर बैठ जायें। सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर 'तारा यंत्र' स्थापित करें। फिर अपने सामने चावल की 7 ढेरियां बना दें, बीच की ढेरी पर तेल का दीपक स्थापित करें। दीपक के सामने 'तारा वत्सनाभ' को स्थापित कर दें और उसके आगे जलपात्र, कुंकुम, अगरबत्ती आदि रख दें।

सर्वप्रथम जल से यंत्र को धोकर रख दें, अक्षत चढ़ा दें, फिर तारा वत्सनाभ को जल से धोकर पौछ कर उस पर माचिस की शलाका से या किसी भी शलाका से कुंकुम के द्वारा निम्न मंत्र अंकित करें -

//ॐ तारा तूरी स्वहा //

इसके बाद दीपक व अगरबत्ती जला दें तथा 'मूँगे की माला'

ही सम्पन्न की जा सकती है। जब छठे दिन भगवती तारा के प्रत्यक्ष दर्शन हों, तो उन्हें हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि वह किया जाए, तो हाथों-हाथ फल प्राप्त होता है तथा जीवन में पूर्ण अभयता प्राप्त होती है।

भौतिक जीवन सम्बन्धित सभी इच्छाएं पूरी करे और नित्य स्वर्ण प्रदान करें। इसके बाद तारा यंत्र को पूजा स्थान में रख दें और 'तारा वस्त्तनाभ' को उसी लाल वस्त्र में लपेट कर घर के किसी सुरक्षित स्थान में रख दें। इस प्रकार करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है जो साधक की इच्छा होती है।

तारा साधना जप मंत्र

//ऐं अर्णं हीं क्रीं हूं फट्// .

वस्तुतः यह साधना अपने आपमें चमत्कार ही है और जो इसे सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस तिनके से अंकित करें - साधना को अवश्य ही सम्पन्न करे।

साधना सामग्री - 300/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

2. बगलामुखी सिद्धि -

शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु

आज का जीवन अत्यधिक असुरक्षित और भयप्रद बन गया है, समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, छल, हिंसा और शुत्रता का वातावरण बन गया है, फलस्वरूप यदि व्यक्ति शान्तिपूर्वक रहना चाहे तब भी सम्भव नहीं हो पाता।

यह साधना शत्रुओं को परास्त करने, उनके लड़ाई-झगड़े को समाप्त करने, मुकदमे आदि में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिये विशेष रूप से सहायक है। यहीं नहीं, अपितु यदि अचानक कोई संकट आ गया है तब भी यह साधना सम्पन्न करने पर वह संकट समाप्त हो जाता है और सामने वाला व्यक्ति शत्रु भाव भूल जाता है।

जीवन की सुरक्षा और शत्रुओं पर निर्मम प्रहार करने और उन्हें शक्तिहीन, निस्तेज करने की दृष्टि से यह अपने आप में अद्वितीय साधना है। प्रत्येक साधक को यह साधना अपने जीवन में अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये। इससे जहां एक ओर महाविद्या तो सिद्ध होती ही है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति शत्रुओं की तरफ से निश्चिन्त हो जाता है। यदि कोई व्यापार में बाधक बन रहा हो अथवा ऑफिसर नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो अथवा आपको प्राणों का संकट हो या आप किसी भी दृष्टि से असुरक्षित अनुभव कर रहे हों तो यह साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है। यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाए, तो हाथों-हाथ फल प्राप्त होता है तथा जीवन में पूर्ण अभयता प्राप्त होती है।

साधना विधान

किसी भी मंगलवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। यह रात्रिकालीन साधना है। दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर, आसन पर बैठ जायें, साधक पीली धोती ही पहनें और यज्ञोपवीत को पीले रंग से रंग कर गले में धारण कर लें। फिर सामने पीले वस्त्र पर 'बगलामुखी यंत्र' स्थापित कर दें और उसके सामने ही 'हरिद्रा हंसराज' स्थापित कर दें, तत्पश्चात् अगरबत्ती और शुद्ध धी का दीपक लगा दें।

// ॐ पीताम्बर देव्यै नमः //

अब 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र का जप करें। इस साधना में निम्न मंत्र का 11 दिनों में सवा लाख मंत्र जप करना आवश्यक होता है -

मंत्र

// ॐ हर्तीं बगलामुखी (अमुकं) शत्रुन् व्राश्य मर्दय हर्तीं फट् //

यह मंत्र छोटा सा है, पर अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये और साथ ही साथ 11 दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये, इस मंत्र में अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु के नाम का उल्लेख करना चाहिये।

जब 11 दिन में मंत्र जप पूरा हो जाये तो उस 'हरिद्रा हंसराज' को जंगल में जाकर लकड़ियाँ ज़लाकर उसमें उसे जला देना चाहिये। इस प्रकार करने से तुरन्त मनोवांछित कार्य सिद्धि हो जाती है और वास्तव में हम जो कुछ चाहते हैं, वैसा हो जाता है। वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र सिद्धिदायक है।

साधना सामग्री - 360/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

3. इतर योनि साधना -

कार्य-सिद्धि हेतु

हमारा विश्वास भूत प्रेतों के प्रति कुछ भी हो परन्तु यह सत्य है कि जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियां होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य और देवता के अलावा भूत-प्रेत

आदि जातियां भी होती हैं, और ये भी मनुष्य की तरह से सुख-दुःख, प्यार-घृणा आदि अनुभव करते हैं। जिस प्रकार एक मनुष्य से सामान्यतः भय नहीं होता, तथा मनुष्य अपनी सामर्थ्य के बल पर दूसरे मनुष्य को नौकर रख कर उससे कार्य करा सकता है, उसी प्रकार कोई व्यक्ति साधना कर भूत को अनुचर के रूप में रख सकता है और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करा सकता है।

यह बात भी अब सिद्ध हो चुकी है, कि भूत-प्रेत किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं पहुंचाते, यदि क्रोधित भी होते हैं तो कोई तकलीफ नहीं देते, मनुष्य से ज्यादा सेवा करते हैं, चौबीस घण्टे आज्ञा पालन में तत्पर रहते हैं तथा वे सभी कार्य कर देते हैं जो मनुष्य के लिए स्वभाविक रूप से असम्भव होते हैं।

भूत त्रि-आयामी होने के कारण लगभग अदृश्य होते रहते हैं, पर जिसने भूत सिद्ध किया होता है, उसे वह स्पष्ट दिखाई देता है। ये अत्यधिक बलशाली होते हैं, हवा की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं, इस लिये ये कठिन से कठिन कार्य भी आसानी से कर सकते हैं।

इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है, इस साधना से किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

साधना विधान

इस साधना को किसी भी माह के कृष्ण पक्ष के रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। रात्रि को बिना स्नान किये काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने काला वस्त्र बिछा दें और उस पर 'भूत डामर यंत्र' रख दें। इसके सामने 'बड़हल का ढुकड़ा' स्थापित कर उस पर निम्न मंत्र काली स्याही से छोटे-छोटे अक्षरों में लिख दें -

॥३५॥ भूताय वशम् करि करि स्वहरा॥

इसके बाद तेल का दीपक प्रज्ज्वलित कर, 'मूँगे की माला' से निम्न मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ श्मशान भूताय वशम् करि मम
आज्ञा पालय पालय फट् ॥

इस मंत्र की नित्य 101 माला मंत्र जप अनिवार्य है। मात्र 11 दिन तक मंत्र जप करने पर 11 वें दिन भूत सामने प्रत्यक्ष होता है तथा आज्ञा मांगता है, तब साधक उसे आज्ञा दें कि मैं जो भी कार्य कहूँगा तुझे पूरा करना है, तब वह भूत वचन देकर चला जाता है और इसके बाद जब भी वह साधक उपरोक्त मंत्र

का तीन बार उच्चारण करता है तो वह भूत उसकी आंखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है, और तुरन्त आज्ञा पालन करता है।

साथेना प्रारम्भ होने पर 'बड़हल के ढुकड़े' को ताबीज में भर कर अपनी बांह पर बांध लेना चाहिये तथा 'भूत डामर यंत्र' को काले कपड़े में लपेट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिये। निश्चय ही यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा गायत्री उपासक अथवा सौम्य साधक भी इस साधना को निर्देष रूप में सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री - 360/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

4. सम्मोहन साधना -

सर्वप्रभावकारी सम्मोहन, वशीकरण एवं अनुकूलन हेतु

आज के युग में वशीकरण एक अनिवार्य साधना बन गई है, क्योंकि चारों तरफ नफरत, द्रेष और धोखा बढ़ गया है, प्रेमी-प्रेमिका को धोखा दे देता है, भाई-भाई से दुश्मनी कर लेता है तथा अकारण ही शत्रु पैदा होते रहते हैं, अधिकारी वर्ग नाराज रहता है, हमारे पास काम करने वाले विश्वास पात्र नहीं रहते हैं, पार्टनर की तरफ से धोखा होने की सम्भावना रहती है, इन सभी स्थितियों में वशीकरण प्रयोग अपने आपमें एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, यह प्रयोग अभी तक गोपनीय रहा है, पर इस प्रयोग से पत्यर जैसे कठोर हृदय को भी अपने वश में किया जाता है और जीवन भर उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है।

वशीकरण का कई लोग गलत अभिप्राय समझते हैं, यह तो मात्र किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने की साधना है। अपने प्रेम से, अपनी भक्ति से, सेवा से हम अपने इष्ट को रिझाते हैं, तो वह भी तो एक प्रकार का वशीकरण ही है, जब इष्ट या गुरु विवश होकर वरदान देने को आतुर हो उठते हैं।

इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है। साधना में सफलता हेतु यह आवश्यक है, कि हृदय में किसी प्रकार का कोई भी दूषित अथवा घृणित उद्देश्य लेकर साधना में प्रयुक्त न हुआ जाए।

साधना विधान

इस साधना को किसी भी माह के शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। स्नान कर, सफेद धोती धारण कर लें और सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुख चला जाता है और इसके बाद जब भी वह साधक उपरोक्त मंत्र कर बैठ जायें। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर 'वशीकरण

ताबीज' रख दें, उसके सामने 'रत्नजोत' रख दें। फिर यंत्र को स्नान कराकर उस पर कुंकुम की बिन्दी लगावें तथा अक्षत चढ़ावें। बाद में रत्नजोत पर केसर से उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसे वश में करना हो। यदि बहुत लोगों को एक साथ अपने अनुकूल करना हो, तो उस पर 'सर्वजन' शब्द लिखें।

इसके बाद तेल का दीपक जला दें और 'स्फटिक माला' से निम्न मंत्र की नित्य 101 माला जप करें। यह पांच दिन की साधना है, और साधना सम्पन्न होने पर उस ताबीज को लाल या पीले धागे में पिरोकर बांह पर बांध लें तथा रत्नजोत को सफेद कपड़े में लपेट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।

मंत्र

**// ॐ क्रीं क्रीं क्रीं (अमुकं) वश्य करि करि
मम आज्ञा पालय पालय फट् //**

इसमें 'अमुकं' शब्द के स्थान पर उसका नाम का उच्चारण करें, जिसे वश में करना हो अथवा 'सर्वजन' का उच्चारण भी कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह साधना आज के युग में अत्यधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है, तथा इस साधना में किसी पत्थरदिल व्यक्ति को भी अपने अधीन कर उसे अपने अनुकूल बनाकर मनोवांछित कार्य कराये जा सकते हैं।

साधना सामग्री - 330/-

* * * * *

5. उर्वशी साधना -

सौन्दर्य, सुख, प्रेम की पूर्णता हेतु

रम्भा, उर्वशी और मेनका तो देवताओं की अप्सराएं रही हैं, और प्रत्येक देवता इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। यदि इन अप्सराओं को देवता प्राप्त करने के लिये इच्छुक रहे हैं तो मनुष्य भी इन्हें प्रेमिका रूप में प्राप्त कर सकते हैं। इस साधना को सिद्ध करने में कोई दोष या हानि नहीं है तथा जब अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्वशी सिद्ध होकर वश में आ जाती है, तो वह प्रेमिका की तरह मनोरंजन करती है, तथा संसार की दुर्लभ वस्तुएं और पदार्थ भेट स्वरूप लाकर देती है। जीवन भर यह अप्सरा साधक के अनुकूल बनी रहती है, वास्तव में ही यह साधना जीवन की श्रेष्ठ एवं मधुर साधना है तथा प्रत्येक साधक को इस सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये।

साधना विधान

इस साधना को किसी भी शुक्रवार से भी प्रारम्भ किया जा

सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। स्नान आदि कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने पीले वस्त्र पर 'उर्वशी यंत्र' (ताबीज) स्थापित कर दें तथा सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दें। फिर पांच धी के दीपक लगा दें और अगरबत्ती प्रज्ज्वलित कर दें। फिर उसके सामने 'सोनवल्ली' रख दें और उस पर केसर से तीन बिन्दियां लगा लें और मध्य में निम्न मंत्र अंकित करें -

// ॐ उर्वशी प्रिय वशं करि हुं //

इस मंत्र के नीचे केसर से अपना नाम अंकित करें। फिर 'उर्वशी माला' से निम्न मंत्र की 101 माला जप करें -

मंत्र

**// ॐ हीं उर्वशी मम प्रिय मम चित्तानुरंजन
करि करि फट् //**

यह मात्र सात दिन की साधना है और सातवें दिन अत्यधिक सुन्दर वस्त्र पहन यौवन भार से दबी हुई उर्वशी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उपस्थित होकर साधक के कानों में गुंजरित करती है कि, जीवन भर आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसका पालन करूँगी।

तब पहले से ही लाया हुआ गुलाब के पुष्पों वाला हार अपने सामने मानसिक रूप से प्रेम भाव से उर्वशी के सम्मुख रख देना चाहिये। इस प्रकार यह साधना सिद्ध हो जाती है और बाद में जब कभी उपरोक्त मंत्र का तीन बार उच्चारण किया जाता है तो वह प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक जैसी आज्ञा देता है, वह पूरा करती है।

साधना समाप्त होने पर उर्वशी यंत्र (ताबीज) को धागे में पिरोकर अपने गले में धारण कर लेना चाहिये। सोनवल्ली को पीले कपड़े में लपेट कर घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिये, इससे उर्वशी जीवन भर वश में बनी रहती है।

साधना सामग्री - 290/-

* * * * *

विशेष - उपरोक्त पांच महत्वपूर्ण साधनाएं एक-एक कर सम्पद्ध करें और अपने अनुभव हमें अवश्य लिखें। इन साधनाओं को सम्पद्ध करने हेतु हमारा बार-बार जोर देना इसलिए है कि ये साधनाएं पूर्णतः आजमायी हुई हैं। हजारों साधकों ने इन्हें सम्पद्ध किया है और अपने जीवन में परिवर्तन अनुभव किया है। साधना का प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त किया है।

छल-छल की आँखों के स्वरूप

श्री हनुमान बजरंग बली
सिद्ध करने का एक मात्र उपाय

बजरंग बाण

एक चमत्कारिक स्तोत्र
जिसका पठन मात्र ही बाधाओं का
हरण कर देता है



महावीर हनुमान शारीरिक शक्ति के प्रतीक हैं, वे अतुलनीय पराक्रमी, बलवान और साहसी हैं तथा कलियुग में उनकी साधना पूर्णतः फलदायक है। हनुमान जी दुष्ट शक्तियों और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाले हैं, उनकी शारीरिक शक्ति के सामने विपरीत परिस्थितियां और बाधाएं उसी प्रकार दब जाती हैं जिस प्रकार पर्वत के नीचे छोटा सा तिनका दबकर समाप्त हो जाता है।

हनुमान, बजरंग, महावीर, के साथ उन्हें वायुपुत्र भी कहा जाता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन ने अपनी ध्वजा पर उनके चिह्न को अंकित कर वायु अर्थात् प्राणों पर विजय प्राप्त की थी इसीलिये उनको वायुपुत्र कहा जाता है, प्राणों पर, अर्थात् चंचल चित्त पर विजय प्राप्त करने के लिये, और मन को पूर्णतः नियंत्रण करने के लिए भी हनुमान उपासना अत्यन्त महत्वपूर्ण कही गई है। इनकी कृपा से मन और प्राण स्थिर होते हैं तथा साधना शक्ति के साथ-साथ साधक की मनः शक्ति भी बढ़ जाती है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जुंग के अनुसार मानव की नैतिक भावनाओं का स्रोत उनका मन होता है क्योंकि मन से गुप्त शक्तियों का विकास होता है, अतः मानव जिन भावनाओं या

विचारों को बार-बार मन में दोहराता है या जिस प्रकार की मानसिक स्थिति में वह रहता है, उसका वैसा ही स्वभाव बन जाता है, अतः बजरंग बाण में पूरी शक्ति रखकर उसे बार-बार दोहराने से मानव मन में हनुमान जी की शक्तियों का विकास होने लगता है और मन की संकल्प शक्ति में वृद्धि होती है, साथ ही साथ कष्टों, बाधाओं और परेशनियों से जूझने की शक्ति जाग्रत होती है, फलस्वरूप उसमें निर्भीकता और साहस आ जाता है।

ग्रंथों में बजरंग बाण के महत्व को बताया गया है। सैकड़ों लोगों का व्यक्तिगत अनुभव है कि बजरंग बाण का नियमित पाठ बाधाओं और आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने में पूर्णतः सक्षम है। मांत्रिक-तांत्रिक क्षेत्र में भी इस स्तोत्र का महत्व माना गया है। ऊंचे से ऊंचे साधक और योगियों ने भी एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि यह स्तोत्र स्वयं ही मंत्रमय है और इसका नित्य पाठ ही अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने वाला है।

शारीरिक व्याधि, घर में भूत-प्रेत आदि की बाधाएं मानसिक परेशनियां आदि के निवारण में यह स्तोत्र रामबाण की तरह

साक्षात् महावीर विराजमान रहते हैं और किसी प्रकार की कोई बाधा उसके घर में व्याप्त नहीं होती।

पूजा कैसे करें?

साधक को चाहिए कि वह अपने सामने हनुमान जी का चित्र या उनकी मूर्ति रख ले और पूरी भावना तथा आत्मविश्वास से उनका मानिसक ध्यान करे, यह विचार करे कि हनुमान जी की दिव्य और बलवान शक्तियां मेरे मन में प्रवेश कर रही हैं मेरे चारों ओर के अणु उत्तेजित हो रहे हैं और यह सशक्त वातावरण मुझे और मेरी मनः शक्ति को बढ़ाने में सहायक हो रहा है। धीरे-धीरे इस प्रकार का अभ्यास करने से साधक के मन में शक्ति का स्रोत खुलने लगता है और एकाग्रता पर उसका नियंत्रण होने लगता है। जब ऐसा अनुभव हो, तब बजरंग बाण की सिद्धि समझनी चाहिए।

अतुलितबलधारम् । हेमशैलाभद्रेहं ।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

हनुमान जी के बारे में ढो बातें विशेष सिद्धि हैं। सर्वप्रथम तो हनुमान रुद्र अर्थात् शिव के अवतार हैं और द्वूसरा, ये पवन पुत्र हैं। हनुमान पूजन साधना से रुद्र सिद्धि प्राप्त होती है। श्री हनुमान वीरता, पराक्रम, दक्षता के प्रतीक हैं और शक्ति, बल वीर्य, ऊज, स्फूर्ति, धीर्य, यश, निर्भयता, निरोगता, विवेक, वाक्पद्मांडित्यादि महागुणों के प्रदाता हैं। इस कारण जो साधक, जो व्यक्ति, चाहे उसे शास्त्रों का ज्ञान हो या न हो, अपनी बुद्धि के अनुसार पूर्ण सेवा भाव से यदि हनुमान साधना भक्ति सम्पद्म करता है, तो उसे ये सभी गुण निश्चय ही प्राप्त होते हैं। शक्ति बाहर से प्राप्त नहीं की जा सकती और न ही बाजार में मिलती है, शक्ति स्रोत तो आपके स्वयं के भीतर छुपा है, उसे जाग्रत करने आवश्यकता है, जिससे मन के साध-साध शरीर भी ऐसा तेजस्वी, बलवान और निरोगी हो जाए कि आत्मविश्वास का अमृत प्याला शक्ति का सौन्दर्य, ज्ञान की गंगा, धीर्यका सागर, सरस्वती की सिद्धि आपमें छलकने लगे-यहीं तो भक्ति साधना का परम स्वरूप है।

सकलगुण निधानं वानराणामधीशं ।

रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

(श्रीरामचरित मानस 51 श्लोक 3)

अर्थात् जो अत्यन्त बलशाली हैं, सोने के पर्वत सुमेरु के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन (को ध्वंस करने) के लिए अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रमण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी और श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त हैं, उन पवन पुत्र हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

इस प्रकार की स्तुति कर साधक को चाहिए कि वह अपने पास दाहिने हाथ की तरफ एक आसन बिछा दे, जैसा कि शास्त्रों में उल्लिखित है कि जब भी बजरंग बाण का पाठ किया जाता है, श्री हनुमान जी स्वयं आसन पर आकर बैठते हैं।

हनुमान की पूजा में इत्र, सुगन्धित द्रव्य एवं गुलाब के पुष्पों का प्रयोग निषिद्ध है, साथ ही साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर बैठे। यदि साधक लाल वस्त्र की लंगोट पहने तो ज्यादा अनुकूल माना गया है।

शास्त्रों के अनुसार स्त्रियों को बजरंग बाण का पाठ नहीं करना चाहिए, परन्तु वे हनुमान जी की तस्वीर के सामने दीपक या अगरबत्ती लगा सकती हैं। हनुमान जी के सामने तेल का दीपक लगाना चाहिये, और उन्हें गुड़ का भोग लगाना चाहिये।

साधक को चाहिए कि वह बजरंग बाण कंठस्थ कर ले, यो नित्य पाठ करने से यह स्तोत्र स्वतः ही कंठस्थ हो जाता है। प्रातः काल के अलावा शाम को या रात्रि को सोने से पूर्व भी इस स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है, परन्तु जब भी इसका पाठ करे, पृथ्वी पर ऊनी वस्त्र का आसन बिछा कर मन में हनुमान जी का ध्यान कर पाठ करें -

पत्रिका के मई 2008 एवं नवम्बर 2007 के अंक में श्री हनुमान जी से सम्बन्धित कुछ साधनाएं दी गई हैं साधकों के लिए उचित है कि वे उन साधनाओं को भी सम्पन्न करें तथा इस चमत्कारिक बजरंग बाण का पाठ नियमित रूप से अवश्य करें।

बच्चों की नजर उतारने, शांत और गहन निद्रा के लिये, कष्ट और संकट के समय, रात्रि को अकेले यात्रा करते समय, भूत बाधा दूर करने तथा अकारण भय को दूर करने के लिए यह स्तोत्र आश्चर्यजनक सफलतादायक है। किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाने से पूर्व भी यदि इसका पाठ किया जाय तो उसे निश्चय ही सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करे सन्मान।
 तेहि के कारण सकल शुभ, सिद्धि करे हनुमान॥
 जय हनुमंत संत हितकारी।
 सुनि लीजे प्रभु विनय हमारी॥
 जन के काज विलंब न कीजै।
 आतुर दौरि महासुख दीजै॥
 जैसे कूदि सिथु के पास।
 सुरसा बदन ऐठि बिस्तारा॥
 आगे जाय लंकिनी रोका।
 मारेहु लात गई सुरलोका॥
 जाय विभीषण को सुख दीनहा।
 सीता निरखि परम एद लीनहा॥
 बाघ उजारि सिन्धु महं बोरा।
 अति आतुर जमकातर तोरी॥
 अक्षय कुमार मारि संहार।
 लूम लपेटि लंक को जार॥
 लोह समान लंक जारि गई।
 जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥
 अब विलंब के हि कारन स्वामी।
 कृपा करहु उन अंतरवामी॥
 जय जय लखन प्रान के दाता।
 आतुर है दुःख करहु निपाता॥
 जय हनुमान जयति बल सागर।
 सुर समूह समरथ भट-नागर॥
 हनु हनु हनु हनुमंत हठीलै।
 बैरिहि मारू बज्र की कीलै॥
 हैं हैं हैं हनुमंत कपीसा।
 हैं हैं हैं हनु अरि उर-सीसा॥
 जय अंजनिकु मार बलवंता।
 संकरसुवन बीर हनुमंता॥
 बदल कराल काल कुल घालक।
 राम-सहाय सदा प्रतिपालक॥
 भूत, प्रेत, पिशाच निसाचर।
 अर्जनि बेताल काल मारी मर॥
 इनहें मारू, तोहि सपथ राम की।
 राखु नाथ मरजाद नाम की॥
 सत्य होहु हरि सपथ पाई कै।
 रामदूत धूर मारू शह कै।

हनुमान से सम्बन्धित साधनाएं

नवम्बर 2007 पृष्ठ संख्या 67

- ☆ संकटमोचन श्री हनुमान साधना
 - ☆ हनुमान प्रत्यक्ष साधना
 - ☆ हनुमान वज्र साधना
 - ☆ कार्य सिद्धि हेतु साधना
 - ☆ सर्व विघ्न निवारण हेतु साधना
 - ☆ शगु बाधा निवारण हेतु साधना
 - ☆ भूत-प्रेत बाधा निवारण हेतु साधना
- मई 2008 पृष्ठ संख्या 38
- ☆ हनुमान सिद्धि साधना
- मई 2008 पृष्ठ संख्या 40
- ☆ रोग मुक्ति बजरंग साधना

जय	जय	जय	हनुमंत	अगाधा।
दुःख	पावत	जन	कैहि	अपराधा॥
पूजा	जप	तप	नेम	अचारा।
नहिं	जानत	कछु	दास	तुम्हारा॥
बन	उपवन	मज	गिरि	जूह माही।
तुम्हरे	बल	हाँ	डरपत	नाही॥
जनकसुता	हरि	दास	कहाबै।	
ता	की शपथ,	बिलंब	न लावै॥	
जय	जय	धुनि	होत	अकासा।
सुमिरत	होय	आनंद	हमारा॥	
यह	बजरंग	बाण	जैहि	मारै।
ताहि	कहै	फिरि	कवन	उबारै॥
पाठ	करै	बजरंग	बाण	की।
हनुमत	रच्छा	करें	प्राण	की।
यह	बजरंग	बाण	जो	जायै।
तासों	भूत	प्रेत	सब	कायै।
धूप	देय	जो	जपै	हमेसा।
ताके	तन	नहिं	रहै	कलेसा॥
उर	प्रतीति	दृढ़ सरन है,	पाठ करे थरि	ध्यान।
बाधा				बाधा सब हर, करै सब, काम सफल हनुमान॥
इस प्रकार बजरंग बाण स्तोत्र का पाठ कर हनुमान चित्र-विघ्न के आगे धूप, आरती 11 बार घुमानी चाहिए और श्री हनुमान जी को दण्डवत् प्रणाम करें।				

नाश्तार्थी की वापरी

मेष -

इस माह आप शत्रु पक्ष से विशेष सावधान रहें। चन्द्रमा की स्थिति आपकी चिन्ताएं बढ़ाएगी। आप किसी नये कार्य को प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो उसे थोड़े समय के लिए टाल दें अन्यथा अवरोध एवं बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस माह आप अपनी वाणी पर भी संयम रखें अन्यथा आप बाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े अथवा कलह में फंस जायेंगे। विद्यार्थियों के लिये भी समय बहुत कठिन होगा, विद्याध्ययन में बाधाएं एवं परेशानियां आ सकती हैं। आप 'महाकाल साधना' (जनवरी 2009) करें। तिथियां - 3, 6, 7, 24, 25 हैं।

वृष -

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह आपके लिये कठिन है। स्वास्थ्य में लापरवाही के कई घातक परिणाम हो सकते हैं। इस माह आप अपने आवेश व क्रोध पर नियंत्रण रखें अन्यथा अपना बना-बनाया काम बिगड़ सकते हैं। व्यापारियों को इस माह शुभ समाचार प्राप्त होंगे, नये अनुबंध बनने की प्रबल संभावना है, जो कि आपके विकास में सहायक होंगे। नौकरी पेशा व्यक्तियों को भी नये दायित्व प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों को इस माह विशेष परिश्रम करने पर विशेष लाभ प्राप्त होंगे। आप 'भैरव साधना' (दिसम्बर 2008) करें। शुभ तिथियां - 5, 9, 26, 27, 28 हैं।

मिथुन -

यह माह भी आपके लिये शुभ ही रहेगा। पिछले माह की तरह इस माह भी आपको सफलताएं प्राप्त होंगी। आप जिन कार्य योजनाओं को सम्पन्न करना चाहते हैं उनको पूर्ण करने के लिये अभी समय अनुकूल ही है। मित्रों एवं परिवार के सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा। सम्पत्ति सम्बन्धी विवादों को हल करने के लिये भी यह समय आपके लिये है। परिवार में उत्साह पूर्ण वातावरण रहेगा। महिलाओं के लिये समय कुल मिलाकर लाभप्रद ही बना रहेगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप 'श्वेतार्क जणपति साधना' (दिसम्बर 2008) करें। तिथियां - 1, 3, 7, 11, 19, 25 हैं।

कर्क -

आपके लिये आनन्द एवं मनोरंजन से भरपूर यह माह जीवन में एक नवीन ऊर्जा का संचरण करेगा। इस माह आप किसी यात्रा पर जा सकते हैं। कला एवं संगीत जगत से जुड़े लोगों के लिये नव सृजन का समय होगा। इस माह आप समाज कल्याण में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रेम-प्रसंगों में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। कुंवारे युवक-युवतियों को मनपंसद वर-वधु की प्राप्ति हो सकती है। आप 'अनंग-रति आनन्द साधना' (जनवरी 2009) करें। तिथियां - 4, 9, 12, 13, 27 हैं।

सिंह -

भय, हानि, बाधा, परेशानी वाला यह माह आपके लिये स्वास्थ्य में लापरवाही के कई घातक परिणाम हो सकते हैं। कठिन ही सिद्ध होगा। स्वास्थ्य की समस्या आपको पूरे माह इस माह आप सेवन कर सकती है। परिवार में किसी अप्रिय घटना से अपना बना-बनाया काम बिगड़ सकते हैं। व्यापारियों को मानसिक रूप से आप तनाव ग्रस्त हो सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें अन्यथा आर्थिक रूप से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्ति अपने अधिकारियों के साथ सम्बन्ध मधुर ही रखें, विवाद एवं मतभेदों से स्वयं को दूर ही रखें। विद्यार्थियों को श्रेष्ठ प्रयास की आवश्यकता होगी। आप 'होलिका तंत्र साधना' (जनवरी 2009) करें। शुभ तिथियां - 7, 11, 16, 20, 29 हैं।

कन्या -

भाग-दौड़ एवं थकान के कारण इस माह आप कुछ नया नहीं कर पायेंगे। इस माह आप बहुत ही व्यस्त रह सकते हैं। किसी अप्रिय घटना के कारण मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी हो सकते हैं। हाथ में आता हुआ रुपया किसी विवाद के कारण रुक सकता है। आपका परिवार के प्रति समर्पण जिस कारण परिवार में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। विवाहिक जीवन में मधुरता बढ़ेगी जिससे आपके मनोबल में वृद्धि होगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। आप 'धूमावती साधना' (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 8, 9, 13, 17, 26 हैं।

तुला -

सामाजिक और परिवारिक गतिविधियों के कारण आप इस माह बहुत व्यस्त रहेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को इस माह पदोन्नति प्राप्त हो सकती है। भविष्य को लेकर बनाई गई योजनाओं को साकार रूप देने का यह समय श्रेष्ठ है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी तथा पत्नी के साथ किसी तीर्थ स्थल या पर्यटन स्थल की यात्रा पर भी जा सकते हैं। विद्यार्थियों को उनके परिश्रम का उचित फल प्राप्त होगा। प्रेम-प्रसंगों को पूर्णता प्रदान करने का यह सही समय है। आप 'बीजावली घोड़शी साधना' (जनवरी 2009) करें। शुभ तिथियां - 10, 11, 16, 21, 23 हैं।

वृष्टिचक -

यह माह आपके लिये गोल्डन टाइम होगा। इस माह आप अपनी महत्वकांक्षाओं एवं विचारों को साकार रूप प्रदान कर पायेंगे। चारों तरफ खुशियां ही खुशियां होंगी जिसके कारण आप बहुत व्यस्त रहेंगे। एक तरफ जहां आपकी आमदमी में वृद्धि होगी वहीं दूसरी तरफ खर्चों में भी बढ़ोतरी होगी। इसके कारण आप कुछ चिंतित हो सकते हैं। प्रेम-प्रसंगों एवं रोमांस में आप सक्रिय रहेंगे। व्यवसाय में नये-नये अनुबंध होंगे जो कि आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होंगे। आप 'बगलामुखी-धूमावती सायुज्य नृसिंह साधना' (जनवरी 2009) करें। तिथियां - 1, 3, 19, 24, 26 हैं।

धनु -

इस माह चतुर्थ का चन्द्रमा आपके जीवन में कलह का वातावरण शुरू करेगा। आपको अपने व्यवहार के कारण नीचे देखना पड़ सकता है। अतः आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपने आप पर नियंत्रण रखें, अपने सहयोगी, मित्रों एवं परिचितों से संयम पूर्ण व्यवहार करें अन्यथा आपको हानि उठानी पड़ सकती है। किसी अन्य के क्रय-विक्रय, गारन्टी एवं न्यायिक कार्यों में हिस्सा नहीं लें। व्यापारी वर्ग अपने शुभ-चिंतकों एवं सहयोगियों से परामर्श करके ही कोई फैसला करें। आप 'महाकाल साधना' (जनवरी 2009) करें। तिथियां - 7, 15, 16, 20, 28 हैं।

मकर -

आर्थिक विषमताओं एवं शुभ योगों से भरा यह माह आपके जीवन में उथल-पुथल कर देगा। इस माह किये गये कार्यों विशेषकर निवेश एवं व्यापारिक योजनाओं का लाभ आपको तत्काल न मिले, परन्तु भविष्य में अवश्य सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। परिवार में उलझनों के कारण आपके खर्च में

योग: सिद्ध योग - 3, 5, 11, 17, 19, 20, 28 फरवरी/3, 18, 23 मार्च ☆

सर्वार्थ सिद्ध योग - 23 फरवरी/4 मार्च ☆ अमृत सिद्ध योग - 23 फरवरी

☆ द्विपुष्कर योग - 30 मार्च ☆ रवि पुष्य योग - 8 फरवरी/8 मार्च ☆

बढ़ोतरी हो सकती है। पत्नी से सामंजस्य में कमी आयेगी। किसी अन्य के कलह, वाद-विवाद से स्वयं को दूर ही रखें। शोध एवं अध्ययन में लगे व्यक्तियों एवं विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जा सकता है। आप 'ऋद्धि-सिद्धि अनुष्ठान' (दिसम्बर 2008) करें। तिथियां - 9, 14, 18, 26, 28 हैं।

कुंभ -

तनावों से मुक्त होकर अपने कार्यक्षेत्र में ध्यान लगायें। वर्तमान आपके लिये बहुत प्रबल है। आर्थिक क्षेत्र में निवेश का आपको लाभ प्राप्त होगा। समाज में आपके सम्मान में बढ़ोतरी होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। सम्पत्ति सम्बन्धी किसी विवाद के हल होने से आप बहुत प्रसन्न होंगे। रुके हुए राजकीय कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी। इस माह आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा पर भी जा सकते हैं जो कि आपके लिये सार्थक सिद्ध होगी। आप 'चन्द्रमौलिश्वर साधना' (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 1, 3, 19, 24, 26 हैं।

मीन -

अर्थ की आवक में वृद्धि के साथ ही साथ आपकी महत्वकांक्षाओं में भी वृद्धि होगी। मित्रों, सहयोगियों से सम्बन्धों में मजबूती आएगी। इन सब के बावजूद आपको अपनी परेशानियों एवं बाधाओं से स्वयं ही लड़ना पड़ेगा। भागीदारी में कार्य कर रहे व्यक्तियों को विशेष सावधान रहना चाहिए। किसी कारण आपसी मनमुटाव बढ़ सकता है। नये व्यापार में भागीदारी से स्वयं को दूर ही रखें। माह के अन्त में किसी राजकीय बाधा का भी सामना करना पड़ सकता है। आप 'होलिका तंत्र साधना' (जनवरी 2009) करें। तिथियां - 1, 4, 11, 22, 28 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

19 मार्च	चैत्र कृ.	-08	गुरुवार	शीतलाप्तमी
22 मार्च	चैत्र कृ.	-11	रविवार	पाप मोचनी एकादशी
24 मार्च	चैत्र कृ.	-13	मंगलवार	प्रदोष व्रत
26 मार्च	चैत्र कृ.	-30	गुरुवार	अमावस्या
27 मार्च	चैत्र शु.	-01	शुक्रवार	चैत्र नवरात्रि प्रा.
02 अप्रैल	चैत्र शु.	-07	गुरुवार	दुर्गापूजा
03 अप्रैल	चैत्र शु.	-08	शुक्रवार	श्रीराम नवमी
05 अप्रैल	चैत्र शु.	-11	रविवार	कामदा एकादशी

साधक

समय हैं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय ग्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (फरवरी 15, 22) (मार्च 1, 8)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (फरवरी 16, 23) (मार्च 2, 9)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (फरवरी 17, 24) (मार्च 3, 10)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (फरवरी 18, 25) (मार्च 4, 11)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (फरवरी 19, 26) (मार्च 5)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (फरवरी 20, 27) (मार्च 6)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (फरवरी 21, 28) (मार्च 7.)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमनों नहीं बराहमिहि नै कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार रहे होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दद्युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो बराहमिहि के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मार्च

1. प्रातः काल सूर्य नमस्कार सम्पन्न करें।
 2. 'त्रिपुणिंडिका' (न्यौछावर 60/-) का पूजन, अक्षत, कुंकुम से करके 108 बार "ॐ नमः शिवाय" का जप करें। फिर शिव मंदिर में अर्पित करें। दुर्भाग्य नष्ट होगा।
 3. हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाएं।
 4. पांच बार निम्न श्लोक का उच्चारण करें।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः सर्वं विघ्नं हरस्तस्मै जणधिष्ठये नमः
 5. गुरु आरती अवश्य सम्पन्न करें।
 6. आज प्रातः बगलामुखी मंत्र का 21 बार उच्चारण अवश्य करें।
॥ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वं दुष्टान्तं वाचं मुखं पदस्तम्भय जिह्वा कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ फट॥
 7. किसी प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक बनाएं उसमें शुभम् गुटिका (न्यौछावर 40/-) स्थापित करें तथा उसका पूजन अक्षत, पुष्प, कुंकुम से करें।
 8. घर से निकलते समय पीली सरसों के दाने द्वारा के दोनों ओर फैक दें।
 9. तुलसी के पौधे के नीचे धी का दीपक प्रज्ज्वलित करें।
 10. आज विशेष तंत्र साधना करें और गुरु माला के अतिरिक्त सालभर में एकत्र की सभी साधना सामग्री होलिका अग्नि में समर्पित कर दें।
 11. पीपल के पेड़ की जड़ में तेल का दीपक जलाएं।
 12. आज गुरु गीता का पाठ करें।
 13. "शुभदा" (न्यौछावर 40/-) का पूजन लाल पुष्प एवं कुंकुम से करके भगवती जगद्मा के चरणों में अर्पित करें।
 14. "ॐ ह्रीं थूं ह्रीं ॐ फट" मंत्र का 35 बार जप करके ही घर से निकलें।
 15. आज भैरव गुटिका (न्यौछावर 80/-) जेब में रख कर घर से निकलें।
16. आज 11 बार गायत्री मंत्र से धी की आहूति दें।
ॐ भूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यज्ञेनः प्रचोदयात् ॥
 17. प्रातः काल हनुमानाष्टक के पाठ से दिन का आरंभ करें।
 18. आज काली उड्ढ तथा सरसों के तेल का दान करें।
 19. आज प्रातः गुरु पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
 20. भगवती जगद्मा को लाल पुष्प अर्पित करें।
 21. गुरु जन्म दिवस के अवसर पर निखिलेश्वरानंद स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
 22. **ॐ सूर्य अदित्याय स्वाहा मंत्र से सूर्य देव का अर्च दें।**
 23. शिवलिंग पर बिल्व पत्र एवं मधुसूपेण रुद्राक्ष (न्यौछावर 60/-) अर्पित करें।
 24. हनुमान चालीसा का श्रवण "प्रातः कालीन वेद ध्वनि" कैसेट (न्यौछावर 40/-) से करें।
 25. प्रातः काल 15 मिनट तक 'सोहम्' मंत्र का जप करें।
 26. 'विशेषिका' (न्यौछावर 80/-) का पुष्प, अक्षत से पूजन कर जेब में रखकर घर से बाहर जाएं।
 27. पत्रिका में दी गई विधि अनुसार घट स्थापन और दुर्गा पूजन अवश्य करें। एक माला नवार्ण मंत्र 'ऐं ह्रीं कर्लीं चामुण्डायै विच्छै' का जप करें।
 28. आज काले कपड़े तथा काली उड्ढ की दाल दान करें।
 29. किसी गाय को रोटी और गुड़ खिलाएं।
 30. "ॐ नमः शिवाय" का 21 बार जप करके ही घर से चलें, रक्षा होगी।
 31. घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर लोटे से जल अर्पित कर ही घर से बाहर निकलें।

व्याधी आप द्वापरो द्वापवरो व्यार करते हैं?

शहद हैं तो आप अपनी जीवन की उंचा उड़ा सकते हैं
जीवन ही साधना है

★ कर्म कीत्रीण

★ ज्ञान प्राप्ति कीत्रीण

★ योग तत्व जागिये

★ कृति तत्व में विलीन होइये



इन चारों का सम्मिलित रूप आपका जीवन है

मानव शरीर को ही सबसे उत्कृष्ट शरीर कहा गया है।

मनुष्य को स्वाधीन इच्छा भी प्राप्त है, उसके पास सुख-दुःख, अनुभव करने की शक्ति भी है। मनुष्य में उचित-अनुचित, हित-अहित का विचार करने की विवेक शक्ति भी है। यही कारण है, कि मनुष्य को दूसरे प्राणियों से उत्कृष्ट

माना गया है, मनुष्य के शरीर को कर्म शरीर माना गया है, जबकि दूसरे प्राणियों के शरीर को भोग शरीर कहा गया है। दूसरे प्राणी जो करते हैं वे संस्कारवश करते हैं, जबकि मनुष्य जो करता है, वह अपनी विवेक शक्ति के प्रयोग के द्वारा ही करता है। यही दूसरे जीवों से मनुष्य का वैशिष्ट्य है।

संसार में मनुष्य अपने परिवार के साथ रहता है, परिवार ही उसके प्रेम की केन्द्रभूमि है, यहीं से उसका प्रेम चारों तरफ प्रसारित होता है। परिवार ही मानव की कोमलता का अरण्य, सुख व विश्व प्रेम का संरक्षक है। जिस तरह पृथक् सत्य से एक साधारण प्रतिज्ञा संघाटित होती है, उसी तरह पारिवारिक प्रेम से ही विश्व प्रेम का उदय होता है।

मनुष्य स्वभावतः स्वयं ही प्रेम करता है। वह अपने प्रेम से सुखी और अपने दुःख से दुःखी होता है। इस तरह जब वह सिर्फ अपने लिए सोचता है, तो यह उसकी स्वार्थपरता है।

हम पहले अपने से प्रेम करते हैं, फिर अपने माता-पिता, आत्मीय-स्वजन व परिजन से प्रेम करना सीखते हैं। इसके बाद क्रमशः समाज, देश व विश्व से प्रेम करना सीखते हैं। पारिवारिक प्रेम व देश प्रेम का चरम फल है विश्वजन के प्रति प्रेम और विश्व नियन्ता के प्रति प्रेम।

विश्व प्रेम की शिक्षा के लिये ही मनुष्य दो भागों में विभक्त है, एक पुरुष व दूसरा रमणी। पुरुष व रमणी पति-पत्नी के रूप में दृढ़ बन्धन में आबद्ध रहते हैं। पुरुष व रमणी का बन्धन धर्म मूलक नहीं होने पर वह स्थायी नहीं रहता है, धर्म मूलक रहने पर ही वह स्थायी व पवित्र रहता है। यह धर्म मूलक बन्धन न रहने पर संसार पाप का क्षेत्र बन जाता है। स्त्री-पुरुष का वैध प्रणय ही समाज का बन्धन है, स्नेह का केन्द्र है तथा विश्व प्रेम का मूल है।

इसी कारण प्राचीन काल में आर्य क्रष्णियों ने ब्रह्म विवाह का प्रचलन किया था। वे अरण्यवासी व तपस्वी होते हुए भी पत्नी व परिजन विहीन नहीं रहते थे। वे गृहस्थ बन कर संसार में रहते थे, किन्तु वे संन्यास से ज्यादा प्रेम करते थे, यह सत्य है। यह प्रेम भगवत् प्रेम था। ज्ञान का सार प्रेम है और प्रेम ही ज्ञान की चरम सीमा है।

सांसारिक प्रेम प्राकृत द्रव्य विशेष में ही आबद्ध है, जबकि भगवत् प्रेम अनन्त कल्याण में आबद्ध। इसी कारण सांसारिक प्रेम दुःखमय है, जबकि भगवत् प्रेम परम सुखमय है। आर्य ऋषिगण यह जानते थे, किन्तु उन्होंने संसार का त्याग भी नहीं किया और भगवत् प्रेम में भी लीन रहे।

सिद्धों की दृष्टि में संन्यास धारण कर वन में रहना या गृहस्थ रहना बोधि प्राप्ति का साधन नहीं, क्योंकि बोधि न घर में है और न वन में। इस भेद को भली प्रकार जानकर चित्त को निर्मल करें। यही यथार्थ है, उसका बराबर सेवन करें।

सत्य के शोध में निरन्तर दत्त चित्त रहना या सत्य सिद्धि की अवस्था में तल्लीन रहना साधना है। साधना का स्वरूप सत्य के तथ्य की खोज करने में है, उसे प्राप्त करना साधना का विषय है। अतः साध्य की प्राप्ति तक किये गये सारे प्रयत्न, लक्ष्य को प्राप्त करने तक किये गये सारे प्रयास, अपने गंतव्य को प्राप्त करने तक की गयी सारी कोशिशें, साधना के ही अन्तर्गत आती हैं। अतः व्यक्ति के ये सारे प्रयत्न, सारे प्रयास, जो उसे अपने निर्दिष्ट गंतव्य की प्राप्ति करने में सहायक होते हैं, साधना है।

ये प्रयास प्राणी मात्र के लिए स्वसाध्य और स्वरुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः साधनाएं भी विभिन्न प्रकार की होती हैं। किन्तु फिर भी ये विभिन्न साधनाएं अपने आप में पूर्ण होती हैं। अतः किसी एक साधना को या साधना के प्रकार को ही सर्वथा सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ मान बैठता साधना की व्यापकता की अवहेलना करना है। भारतीय दर्शन ने भी साधना को साक्षात् जीवन का प्रतिरूप ही माना है और प्रत्येक जीवन को साधना के रूप में ही स्वीकार किया है। यही कारण है, कि प्राणी मात्र को अपने जीवन में किसी न किसी साधना में रत रहते हुए देखा गया है। अतः इस मान्यतानुसार जीवन स्वयं एक साधना है। जीवन और साधना का यह सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। एतदर्थं जीवन साधना है और साधना जीवन, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, प्रतीक हैं और स्वयं एक-दूसरे से अविच्छिन्न हैं।

जीवन में साधनाएं प्रमुखतः चार मानी गयी हैं -

1. कर्म साधना, 2. ज्ञान साधना, 3. योग साधना और 4. भक्ति साधना।

1. कर्म साधना - कर्म साधना में कर्म को प्रधानता देकर साधना में संस्कार मात्र डालने का प्रयत्न भर किया गया है और इसी को सर्वस्व मान कर कर्मकाण्ड को जीवनमुक्ति का कारण माना गया है।

सत्य के शोध में निरन्तर दत्तचित्त रहना या सत्य सिद्धि की अवस्था में तल्लीन रहना साधना है। साधना का स्वरूप सत्य के तथ्य की खोज करने में है, उसे प्राप्त करना साधना का विषय है। अतः साध्य की प्राप्ति तक किये गये सारे प्रयत्न, लक्ष्य को प्राप्त करने तक किये गये सारे प्रयास, अपने गंतव्य को प्राप्त करने तक की गयी सारी कोशिशें, साधना के ही अन्तर्गत आती हैं। अतः व्यक्ति के ये सारे प्रयत्न, सारे प्रयास, जो उसे अपने निर्दिष्ट गंतव्य की प्राप्ति करने में सहायक होते हैं, साधना है।

2. ज्ञान साधना - ज्ञान साधना में ज्ञान प्राप्ति की प्रमुखता रहती है। साधक ज्ञान के माध्यम से मुक्ति की कामना करता है।

3. योग साधना - योग का तात्पर्य है स्वयं को उस परम तत्व में लीन कर देना। योग साधना में साधक और साध्य के विलगाव को योग की युक्ति द्वारा संयुक्त कर परस्पर तादात्म्य का प्रयास किया जाता है।

4. भक्ति साधना - भक्ति निष्काम होती है जिसमें श्रद्धा, विश्वास, प्रेम और हृदयगत निश्छलता, शुद्धता, स्वच्छता व पवित्रता के साथ ही साथ सदाचार, सत्याचरण आदि भी सम्मिलित हैं। निराकार या साकार दोनों उपासकों, दोनों भक्तों की भक्ति निष्काम है।

अधिकतर व्यक्ति कर्म करते हुए ही जीवन को गुजार देते हैं। उनके लिए प्रत्येक दिन के जीवन में कर्म ही प्रमुख है, वही जीवन की साधना भी है।

इस तरह साधना में साध्य से वंचित हो, साधना की सीमा तक ही अपने आपको सीमित कर लेते हैं, यही सीमा फिर बंधन का कारण बनती है, किन्तु जो जाग्रत होते हैं, वे कर्म को जीवन का स्वभाविक अंग या प्राकृतिक अंग मानते हैं तथा निष्काम या अनासक्त भावना के साथ इसमें संलग्न रह कर भी इसके माया पाशों से विलग हो जीवन बन्धन से विमुक्तता प्राप्त करते हैं।

इस कर्म साधना में आडम्बर, पाखण्ड या दिखावे आदि का किंचित् मात्र भी स्थान नहीं रहता है, इनमें अहं भाव तथा वासनादि भी नहीं है, इसमें कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं है, यहां केवल सदाचार और शुभाचरण है।

वीर साधना

भंवर वीर तू चेला मेरा
गुरु गोरख की दुहाई

जब साधक के सम्मुख वीर (यक्ष)

प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उपस्थित होकर उसके कार्य सम्पन्न करता है

तंत्र विशेषांक में जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया था कि मनुष्य की शक्तियों के परे भी महान् अदृश्य शक्तियां सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विचरण करती रहती हैं, और साधना का तात्पर्य है इन शक्तियों को वश में कर अपने शक्ति तत्व के साथ जोड़ देना, तभी साधना का वास्तविक अर्थ है, अन्यथा साधना केवल नित्य कर्म बन कर रह जाती है।

वीर शब्द का शाब्दिक अर्थ बलशाली होता है, लेकिन तांत्रिक रूप में वीर का तात्पर्य बिल्कुल अलग है। यह यक्ष का स्वरूप है, जिसके सेवक भूत-प्रेत इत्यादि होते हैं और यक्ष योनि केवल अभिशस देवता को ही प्राप्त होती है और जब यक्ष योनि में यह वीर साधकों के कल्याण हेतु कुछ शुभ कार्य सम्पन्न कर लेता है तो उसकी यह शाप योनि समाप्त होकर पुनः देव योनि प्राप्त हो जाती है। साधना के क्षेत्र में तो इस साधना का सर्वोपरि महत्व है, और तांत्रिक साधना में शिष्य की यह इच्छा रहती है कि उसके गुरु उस पर कृपा कर, वीर साधना में सिद्धि दिलाएं।

वीर साधना

वीर साधना का तात्पर्य ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर वीर जो एक ऐसा बलिष्ट पुरुष है, जो अत्यन्त ही ताकतवर और वह जीवन भर वश में रह कर काम करता है।

वीर विक्रमादित्य की कहानी सर्वविदित है, कि उन्होंने एक वीर साधना कर रखी थी, और वह वीर हमेशा उनके नियंत्रण में और उनकी आज्ञा में तैयार रहता था, जब भी विक्रमादित्य वीर साधना के द्वारा ही मैंने जीवन की पूर्णता, यश, सम्मान आज्ञा देते, वह वीर एक पल में ही उस कार्य को पूरा कर और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

देता। विक्रमादित्य ने उस वीर की सहायता से ही अपने सारे शत्रुओं को काबू में किया। इस वीर की सहायता से ही जब राज्य पर पड़ोसी राज्य की फौज चढ़ आई तो पूरी फौज का सफाया किया, वीर की सहायता से ही उसने अपने राज्य में अकूल धन सम्पत्ति जोड़ दी और वीर की सहायता से ही विक्रमादित्य पूरे संसार में विख्यात हुए।

रामभक्त हनुमान ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, इसीलिए उनको महावीर हनुमान कहते हैं। इस वीर की सहायता से ही वे चार सौ योजन का समुद्र एक ही छलांग में पार कर सके थे, ऐसे वीर की सहायता से ही वे लंका के अशोक वन को तहस-नहस कर अपनी धाक जमा सके थे, और उस वीर की सहायता से ही वे बड़े से बड़े पर्वत गेंद की तरह हथेली में लेकर कहीं पर फेंक भी सकते थे।

शंकराचार्य ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, जिसकी वजह से चौबीसों घण्टे उनकी सुरक्षा बनी रहती थी, वीर की सहायता से ही जब वे जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते तो वीर उनका सही मार्ग दर्शन करता, जंगल के हिंसक पंशुओं से रक्षा वीर ही करता, वीर की सहायता से ही शंकराचार्य ने अकेले पूरे भारतवर्ष से बौद्ध धर्म को समाप्त कर सनातन धर्म को स्थापित करने में सफलता पाई। वे स्वयं इस बात को स्वीकार करते थे कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं सम्पन्न की हैं, तथा और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

गुरु गोरखनाथ वीर साधना के आचार्य थे, और उनके ने वीर को सिद्ध किया है, जिसकी वजह से वे तंत्र क्षेत्र में पूर्ण सफलता पा सके थे। यद्यपि कई लोगों ने मिल कर गुरु गोरखनाथ को मारने की चेष्टा की, परन्तु अकेले गुरु गोरखनाथ सैकड़ों लोगों से मुकाबला कर सके, और विजय प्राप्त कर सके।

वीर

जिस प्रकार से भूत साधना या शून्य साधना सम्पन्न कर जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है, उसी प्रकार से वीर साधना के द्वारा भी संसार का कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। वीर का तात्पर्य भूत से मन्त्रबूत, वीर का तात्पर्य एक ऐसे महान् व्यक्तित्व से है, जो अत्यन्त ही सरल, भलाई करने वाला प्रत्येक प्रकार की मुसीबत से सहयोग देने वाला और अपने मालिक के कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में हल करने वाला है।

यह साधना वास्तव में ही अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, क्योंकि कोई भी गुरु इस प्रकार की साधना को प्रकट करना नहीं चाहता, अपने अन्तिम समय में गुरु अपने शिष्य को ही यह महत्वपूर्ण साधना समझाता और उसे पूर्ण सिद्ध योगी बना देता है।

ऐसे एक दो नहीं, कई उदाहरण हैं, जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में इस साधना को सम्पन्न किया और उसमें सफलता प्राप्त की। किसी को शत-प्रतिशत सफलता मिली तो किसी को कुछ कम, कई व्यक्तियों को असामान्य कार्य की पूर्णता हेतु वीर प्रत्यक्ष आकर उपस्थित हुआ तो कई साधकों को अदृश्य रूप से किसी न किसी माध्यम से कार्य में पूर्णता प्राप्त हुई। ऐसे साधकों के पत्र आते हैं कि भयंकर से भयंकर बाधा के समय, जब कार्य की पूर्णता हेतु कोई मार्ग नहीं दिखता, और उन्होंने पूर्ण मनोयोग से वीर साधना सम्पन्न की तो सात दिन के भीतर ही वह बाधा सरल हो गई और कार्य सिद्ध हो गई, उन्हें हर समय यह विश्वास बना रहता है कि वीर की अदृश्य शक्ति उनकी बाधाओं का नाश अवश्य कर देगी।

प्रत्येक साधक इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें, क्योंकि यह साधना जाग्रत साधना है, शक्ति तत्व को उदय करने की साधना है, अपने कार्यों के सफल होने के मार्ग में बाधा के निवारण की साधना है, भैरव के स्वरूप की साधना है।

साधना-विधि

मैं नहीं चाहता कि कोई भी विद्या गोपनीय रहे, अतः इस देव दुर्लभ साधना को भी पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत कर

रहा हूं और मुझे विश्वास है कि प्रत्येक पत्रिका पाठक इस साधना को सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकेगा।

यह साधना मात्र 14 दिन की है। इस साधना को सम्पन्न करने के लिए निम्न पांच नियमों का पालन करना जरूरी है -

1. किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें, रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर लाल धोती पहन कर बैठ जाएं, अपने बाजोट पर लाल आसन बिछाकर कर उस पर 'वीर सिद्धि यंत्र' को स्थापित करें तथा फिर पास में तेल का दीप लगावें। नित्य रात्रि को 'मूँगा माला' से 'वीर सिद्धि यंत्र' के सामने 11 माला मंत्र जप करें, इसमें यंत्र का ही सर्वाधिक महत्व है।

2. साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य-ब्रत से रहें, एक समय भोजन करें, साधना काल में या मंत्र जप के समय कोई अनुभव हो तो किसी से न कहें।

3. यह साधना सम्पन्न हो जाय तो 15 दिन बाद उस यंत्र को लाल धागे से अपनी भुजा में बांध लें या अपने पॉकेट में अपने पास रख लें।

4. साधना सम्पन्न होने के बाद जब पांच बार मंत्र उच्चारण कर वीर को आवाज दी जायेगी तो आंखों के सामने वीर प्रत्यक्ष होगा और उस समय आप उसे जो भी आज्ञा देंगे, वह तुरन्त आज्ञा का पालन करेगा।

इस प्रकार की महत्वपूर्ण साधना में साधक को भय रहित होकर साधना अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए और इस हेतु अर्थात् साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो, इस हेतु गुरुदेव के आशीर्वाद से बढ़ कर साधक के लिए क्या हो सकता है, अतः मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले एक माला गुरु मंत्र का जप अवश्य कर लें।

गोपनीय वीर मंत्र

// ॐ क्लर्णै एै क्लर्णै वीराय प्रत्यक्षं भव ॐ फट् //

प्रत्येक दिन मंत्र जप पश्चात् हनुमान मंत्र का एक माला मूँगा माला से मंत्र जप करें -

// ॐ हूं हूं हनुमन्तर्यै हूं हूं फट् //

वीर साधना के सम्बन्ध में यदि कोई अन्य जानकारी प्राप्त करना चाहे तो कार्यालय से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

वास्तव में ही ऐसी अद्वितीय साधना को सम्पन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त करने का सौभाग्य वरदान स्वरूप ही है।

साधना सामग्री - 320/-

शुक्र ग्रह प्रतीक है जीवन में
 भोग, उत्साह, उमंग, काम, सौन्दर्य,
 प्रेम, यौवन, विलास और आठन्द का
 अवश्य प्रबल करें
 अपने जीवन में शुक्र को



शुक्र शान्ति बाण

नक्षत्र पथ (गैलेक्सी) का जाज्वल्यमान, ऊर्जावान और हजारों की भीड़ को तनाव मुक्त करके उनके अन्दर गुदगुदी सबसे अधिक आभा युक्त ग्रह शुक्र है। संसार में जहां कहीं भी पैदा कर दे, हंसने के लिए बाध्य कर दे तो निश्चित मानिये आकर्षण या मन को बलात् खींचकर आकृष्ट करने की कला कि शुक्र ग्रह से प्रभावित होने के कारण ही वह कलाकार यह है, वह शुक्र से ही प्राप्त हो सकी है। वन मार्ग में किसी सरोवर सब करने में समर्थ हो पाया है। अर्थात् समाज में नीरसता में खिले हुए कमल को देखें, उसके निर्दोष गुलाबीपन और को दूर कर सरसता पैदा करना, आलस्य और कुण्ठा को धीमी-धीमी हवा में लहराने में जो विशिष्ट आकर्षण है या समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को वाटिका के पुष्पों में जो सौन्दर्य है, ओस की बूँदों में जो सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र अनूठी मस्ती है, किसी नवयौवना के यौवन में किसी को भी ग्रह की अनुकूलता से ही संभव है।

दीवाना बना देने की जो क्षमता है यह सब शुक्र ग्रह की ही विशेषता है।

आप किसी नगर में चले जायें और वहां एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती हुई ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएं, उनमें वास्तुकला, रंगों का सांमजस्य, इंटीरियर डेकोरेशन का सौन्दर्य, यह सब यदि आपको ठिक जाने के लिए बाध्य कर दे तो

निश्चित मानिये कि जिन हाथों ने इनका निर्माण किया है वह भी, जिसने कार्य निर्देशन किया है वह भी, यहां तक कि जिसने इसे बनवाने के लिए खर्च किया है - जो इसका स्वामी है और जो वास्तव में उसमें रहकर सुख प्राप्त करता है, वह बातों को रेखांकित करते हुए पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने गहन भी शुक्र ग्रह की विशिष्ट अनुकूलता का पात्र है। यदि कोई

जन्म पत्रिका में शुक्र अनुकूल होने से ही व्यक्ति समाज उन्मुख हो, अपने कार्यों से यश प्राप्त कर श्रेष्ठ पुरुष बन पाता है। इसीलिए समाज में किसी व्यक्ति को विशेष आनंद युक्त अथवा एक के बाद एक कार्यों में सफल होते देखें जाने पर लोगों को यह कहते सुना गया है -

‘अरे क्या तुम्हारी शुक्र की दशा चल रही है?’

शुक्र ग्रह अपने आप में इसीलिए आनंद, सफलता तथा उमंग का पर्याय बन गया है। बिना शुक्र की अनुकूलता के किसी भी व्यक्ति के जीवन की सार्थकता संभव नहीं है इन्हीं हैं और जो वास्तव में उसमें रहकर सुख प्राप्त करता है, वह बातों को रेखांकित करते हुए पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने गहन अध्ययन कर, संन्यास जीवन में हिमालय की कन्दराओं में कलाकार अपने हावभाव से, वाद्य यंत्र से या मात्र आवाज से अपने गुरु के चरणों में बैठकर विशिष्ट साधनाओं का अवलोकन

कर, तत्कालीन ऋषियों से सम्बन्ध स्थापित कर, प्रामाणिक रूप से ग्रहों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया तथा उसे समाज के लिए उपलब्ध कराया।

ऐसे ही एक अवसर पर मनाली के निकट अपने गृहस्थ शिष्यों से चर्चा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया था कि गेहूं के दानों में किसी व्यक्ति की क्षुधा निवृत्ति की या उसके अन्दर ऊर्जा प्रदान करने की जो क्षमता है, वह इसलिए है क्योंकि गेहूं का बीज सबसे पहले अपने अस्तित्व को फना करते हुए जमीन के अन्दर गड़ जाता है और बाद में वही बीज पौधे के रूप में पनपता है और अपने जैसे हजारों दाने तैयार करता है। उसकी बलिदान गाथा यहीं समाप्त नहीं हो जाती। पौधे को किसान जाकर काट देता है, बाली को मसलता है, दाने निकाल कर उनको फिर चक्की में पीसा जाता है, आठा बनाकर उसे पुनः पानी के साथ मसल-मसल कर उसकी लोई तैयार की जाती है, और उसके बाद गरम तवे और फिर आग से गुजर कर ही उसमें वह योग्यता आ पाती है कि मनुष्य की भूख को मिटा सके। तभी पहला निवाला तोड़ने के पहले मनुष्य अपने गुरुदेव को, इष्ट को और माता अन्नपूर्णा को प्रणाम कर भोजन शुरू करता है।

ठीक इसी प्रकार शुक्र को दैत्य गुरु शुक्रचार्य का पद प्राप्त हुआ क्योंकि शुक्रचार्य सूर्य का तेज ग्रहण करते हुए निरन्तर तप युक्त ही रहे। शुक्रचार्य को यह ज्ञात होने पर कि संसार में तो क्या, पूरे ब्रह्माण्ड में भगवान शिव शंकर जैसा कोई तेजस्वी नहीं है। भगवान शिव का रोम-रोम तेजपुंज तथा दिव्य शक्तियों का भण्डार है, वे भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए संकल्प लेकर साधनारत हो गये और इस प्रक्रिया में सर्वोच्च सफलता, ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करने के लिए, अपने गुरु रूपी भगवान में समाहित होने के लिए उन्होंने अति सूक्ष्म रूप रखा तथा उनके शरीर में प्रविष्ट हो, अपने आप को मिटा दिया 7. और भगवान शिव के अन्दर का ज्ञान प्राप्त कर अपना कायाकल्प कर लिया। जब भगवान शिव को इस बात का भान हुआ तो 8. वीर्य मार्ग के द्वारा बाहर निकालकर उन्हें दिव्यता प्रदान की और इस तरह संसार में वे शुक्र अर्थात् वीर्य उद्भूत शुक्रचार्य कहलाये।

अपने सर्वोच्च बलिदान, गुरु चरणों की निःस्वार्थ और निरन्तर सेवा तथा भगवान शिव की परम प्रसन्नता के प्रतीक शुक्रचार्य संसार में सर्वोच्च रसायन शास्त्री हो गये, पारद के अधिक से 10. अधिक संस्कार विशेषज्ञ बनकर पारद संजीवनी विद्या के तो मानो वे प्रतीक ही बन गये और इसीलिए नक्षत्र पथ में सबसे

ज्यादा प्रभावान और आभावान नक्षत्र के रूप में चांदनी रात में उन्हें आज भी देख सकते हैं।

शुक्र ग्रह साधना के लाभ

शुक्र के प्रभाव से निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं -

1. व्यक्ति के स्वास्थ्य पर और इस तरह उसकी आयु पर शुक्र का प्रभाव पड़ता है।
2. संगीत, कला/सौभाग्य का सम्बन्ध शुक्र से है, इन क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यक्तियों को शुक्र साधना अनिवार्य है।
3. वाणी का अधिष्ठाता ग्रह बुध है परन्तु उसमें सम्मोहन शुक्र की वजह से ही होता है और तब ही व्यक्ति गायक बन पाता है। उदाहरणार्थ किसी भी सफल अभिनेता या अभिनेत्री के अभिनय में उसकी आवाज का कितना महत्व है यह समझा जा सकता है।
4. व्यवहार में शिष्टाचार, साज-सज्जा, पोशाक में विशिष्टता - यह शुक्र ग्रह की अनुकूलता से ही संभव है।
5. उत्साह, उमंग और कार्य में तल्लीनता, व्यवहार में अभिरुचि - यह सब शुक्र ग्रह की देन है। भगवान श्रीकृष्ण जन्म से लेकर शरीर त्याग करते समय तक सदा सक्रिय रहे, उनके जीवन में बाल लीलाओं से लेकर महाभारत कालीन उनके व्यवहार में, अर्जुन को गीता का ज्ञान देने में और उसे बाद के उनके पूरे जीवन में जरा भी कहीं ठहराव नहीं दिखता है, हमेशा दूसरों को भी नित्य नवीन ऊर्जा प्रदान करते रहे और ऐसा ही व्यक्ति शुक्र की ऊर्जा से युक्त सर्वोच्च व्यक्तित्व अर्थात् कामदेव के अवतार प्रद्युम्न का भी पिता बन सका।
6. महिलाओं के लिए शुक्र ग्रह की साधना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। महिलाओं के लिए उच्चतम सौन्दर्य एवं निखार प्राप्त करने हेतु भी यह साधना उचित है।
7. विवाह के उपरान्त वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार भी शुक्र ग्रह ही है।
8. मनचाहे लड़के या लड़की से विवाह के लिए शुक्र साधना अधिक अनुकूल होती है।
9. विवाह में बाधा आ रही हो अथवा विवाह की बात-चीत बार-बार असफल हो रही हो और शादी नहीं हो पा रही हो, तो शुक्र साधना करने से बाधा दूर हो जाती है।
10. संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा हो अथवा पुत्र या पुत्री संतान की कामना हो, तो भी शुक्र साधना करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

11. अक्षुण्ण यौवन/दुर्दन्त पौरुष दोनों के लिए शुक्र ही किस व्यवसाय में शुक्र अनुकूलता देता है? आधार है।
12. अर्थ प्राप्ति में, व्यापार में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लक्ष्मी पति अथवा विश्व प्रसिद्ध करोडपति बनाने में शुक्र ग्रह गजब का प्रभाव डालता है।
13. नये-नये अविष्कारों में बिना शुक्र की सहायता के सफलता संभव ही नहीं है क्योंकि नवीन सृजनात्मक ऊर्जा और नवीन विचारों का प्रादुर्भाव शुक्र से ही संभव होता है।
14. जीवन में जहां भी सफलता प्राप्त करनी हो, शुक्र की साधना करनी ही होगी क्योंकि सफलता का आधार ही शुक्र ग्रह है।
15. वाणी में सम्मोहन और कांतिहीन चेहरे को कांतिमय बनाने तथ शरीर को सुडौल बनाने के लिए भी शुक्र साधना में सफलता मिलती है।
16. पूर्ण पौरुष प्राप्त करने के लिए अनंग साधना, कामदेव रति साधना के साथ ही शुक्र साधना अथवा इनसे सम्बन्धित दीक्षा लेना भी बहुत उपयोगी है।
- प्रत्येक ग्रह किसी न किसी कार्य क्षेत्र या व्यवसाय के क्षेत्रों को प्रभावित करता है। शुक्र साधना सम्पन्न कर निम्न क्षेत्रों में अद्वितीयता प्राप्त की जा सकती है -
- विज्ञापन या मॉडलिंग, फिल्म या अभिनय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के साथ ही धन और यश कमाने के लिए शुक्र साधना आवश्यक है।
 - औषधि विज्ञान, औषधि निर्माण, आयुर्वेद और विभिन्न रोगों की सफल चिकित्सा तथा इन रोगों के उपचार के लिये, पूर्ण प्रभावशाली और लाभदायक चिकित्सा प्रणाली एवं औषधियों की खोज के लिए भी यह साधना आवश्यक है।
 - खिलौनों का व्यापार अथवा गिफ्ट आर्टिकल्स, कॉस्मेटिक्स, ब्यूटी पॉर्लर के व्यवसाय/व्यापार में सफलता के लिए भी शुक्र साधना अनुकूल है।
 - फैशन डिजाइनर या नई-नई मनमोहक पोशाकों के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु यह साधना आवश्यक है।
 - विदेश यात्रा या विदेशों में व्यापार, विदेश भ्रमण, विदेश में उच्च अध्ययन आदि के सुअवसरों के लिये तथा उनमें भी सफलता प्राप्त करने के लिए शुक्र साधना उपयुक्त है।
 - फोटोग्राफी, फिल्म क्षेत्र अथवा पर्यटन व्यवसाय, होटल, ऑटो मोबाइल इंडस्ट्री अथवा सजावट में सफलता मिलती है।
 - कृषि, बागवानी या फलों आदि उद्यान के क्षेत्र में यदि आप सफलता चाहते हैं तो शुक्र की साधना कीजिये।
 - स्पोर्ट्स की गतिविधियों अथवा इन क्षेत्रों में विशिष्टता के लिए शुक्र की साधना आवश्यक है।
 - चित्रकार के लिए शुक्र प्रधान ग्रह है, इसी तरह मूर्तिकार मूर्ति में सजीवता तब डाल देता है जब वह शुक्र ग्रह की अनुकूलता के समय मूर्ति का निर्माण करता है।
 - परद विज्ञान के क्षेत्र में सफलता एवं अप्सरा साधना में सफलता हेतु शुक्र ग्रह की साधना आवश्यक है।

हीरा शुक्र ग्रह का रत्न

प्राचीन समय से ही हीरा राजा-महाराजाओं की शान रहा है। आज के समय में हीरा हर घर, हर वर्ग को आकर्षित कर रहा है। महिलाओं के श्रृंगार में हीरे जड़ित आभूषणों से तो उनका सौंदर्य और निखरता है। सभी रत्नों में हीरा सबसे कठोर एवं चमकीला है। यह एक खतंत्र खनिज है व घनाकार खरूप में हमें प्राप्त होता है। यह अच्छी पारदर्शिता के साथ सभी रंगों में आता हैं हीरे का मूल्य इसके भार, शुद्धता, रंग तथा पारदर्शिता को ध्यान में रखकर तय किया जाता है। इसकी आंतरिक शुद्धता एवं रंग की श्रेणी का एक पैमाना होता है। वैसे तो हीरे के बहुत से कट होते हैं, किन्तु गोल उबल कट सबसे ज्यादा चलन में है। इस कट में ४७ फलक होते हैं। इस कारण इसकी दीसि आकर्षक एवं सम्प्रोहित करने वाली होती है। हीरा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुक्र सभी ग्रहों में सबसे चमकीला है।

शुक्र ग्रह साधना का विशेष मुहूर्त

इस वर्ष दिनांक 30 मई 2009 तक शुक्र मीन में उच्च का होकर गतिमान रहेगा। अतः इस काल खण्ड में किसी भी दिन इस साधना को सम्पन्न कर त्वरित सफलता पाई जा

सकती है। अन्यथा इस साधना को किसी भी शुक्रवार को तो सम्पन्न किया ही जा सकता है।

साधना विधान

साधक पूर्व दिशा की ओर मुख कर सफेद रंग के आसन पर बैठें। सामने भूमि पर सफेद चन्दन से निम्न प्रकार के यंत्र का अंकन कर लें।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	६

उस पर सफेद वस्त्र बिछा दें। गुरु चित्र स्थापित कर गुरु पूजन कर लें। इस प्रकार की साधना में नारियल के तेल अथवा तिल के तेल का दीपक मंत्र जप के समय जलना आवश्यक है। तेल में चन्दन भी मिला देना चाहिये। वस्त्र पर एक थाली रखें। थाली में अक्षत से एक सितारा (★) बनाएं। अक्षत के उस आसन पर निम्न मंत्र बोलते हुए मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठित 'शुक्र यंत्र' को स्थापित करें -

शुक्र स्थापन मंत्र

हर्षं हिमकुन्दं मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशस्त्रं प्रवक्तारम् भार्जवं प्रजमाम्यहम्॥

ॐ भूभुर्वः स्वः शुक्रः इहागच्छ इहतिष्ठः। शुक्राय नमः।

इसके बाद 'शुक्र आकर्षण मुद्रिका' को दाहिने हाथ की मुट्ठी में बंद कर शुक्र का ध्यान करें -

ॐ श्वेतः श्वेताम्बरधर किरीटि च चतुर्भुजः।
दैत्यगुरुः प्रशान्तश्च साक्षसूत्रं कमण्डलुः॥

शुक्र स्तोत्रम्

नमस्ते भार्जवं श्रेष्ठं दैत्यं दानवं पूजितं,
वृष्टिरोधं प्रकर्त्रं च वृष्टि कर्त्रं नमो नमः।

देववानि पिस्तुभ्यं वेदं वेदांगं पारगं,
परेण तपसा शुद्धः शंकरे लोकं सुन्दरः।

प्राप्तो विद्यां जीवनाल्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः,
नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेद्यसे।

तारा मण्डलं मध्यस्थं स्वभासाभासिताम्बरं,
यस्योदये जगत्सर्वं मंगलाहं भवेदिह।

अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मंगलं रूपिणे,
त्रिपुरा वासिनो दैत्यान् शिवं शरणं प्रपीडितान्।

विद्याऽ जीवयच्छक्रो नमस्ते भृगुनन्दन,
यथाति गुरुवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन।

बलिराज्यं प्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः,

ध्यान के बाद मुद्रिका को यंत्र के मध्य में रख दें। फिर कुंकुम से यंत्र पर निम्न मंत्र बोलते हुए सात बार तिलक करें -

ॐ भार्जवाय नमः पादं समर्पयामि।

ॐ शुभदाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ दैत्यगुरवे नमः स्नानं समर्पयामि।

ॐ भोगकराय नमः गन्थं समर्पयामि।

ॐ श्वेताम्बराय नमः धूपं दीपं दर्शयामि।

ॐ सर्वेश्वरं प्रदाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

ॐ शुक्राय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

इसके बाद 'सफेद हकीक माला' से निम्न मंत्र का 16 दिन तक नित्य 7 माला जप करें -

शुक्र साधना मंत्र

॥ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः॥

नित्य मंत्र जप के बाद यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर शुक्र स्तोत्र का पाठ करें। साधना समाप्ति पर सफेद वस्त्र एवं चावल किसी को दान में देना विशेष रूप से लाभप्रद होता है।

यह विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलाने पर 570/- की दीपीयी द्वारा आपको इस साधना की कंप मिट्टि प्राण प्रतिष्ठायुत सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो जये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप की 570/- न्यौछातर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

भार्जवाय नमस्तुभ्यं पूर्वं जीवाणि दन्दितः।

जीवपुत्राय ये विद्यो प्रादात्तस्मै नमो नमः,
नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि।

नमः कारणं रूपाय नमस्ते कारणात्मने,
स्तवराज मिमं पुण्यं भार्जवस्य महात्मनः।

यः पठे च्छृण्युद्वापि लभते वांछितं फलम्,
पुत्र कामालभेत् पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियमः।

राज्य कामो लभेदाज्यं स्त्री कामः स्त्रियमुत्तमाम्,
भृगु वारे प्रवत्तनेन पठितव्यं समाहितैः।

अन्यवारे तु होरायां पूजयेद् भृगुनन्दनम्,
रोगार्तो मुच्यते रोगद् भयार्तो मुच्यते भयात्।

यद्यत्प्रार्थयते जनतु सतत्प्राप्नोति सर्वदा,
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः।

सर्वं पापं विनिर्मुक्तः प्राप्तु याच्छिवस निधिम्॥



वर्तमान युग की राबरो लड़ी रामरथा

देवदृढ़—देवदृढ़—देवदृढ़—देवदृढ़

तो

मुक्त हो जाइये तनाव से
यह सब आपके हाथ में है
निश्चय कर लें

बहाव दुक्ति के संवादित सूत्र

यदि व्यक्ति के जीवन में तनाव न हो, तो वह क्षमता से पांच हजार गुना ज्यादा कार्य कर सकता है, परन्तु होता यह है कि उसके शरीर में जो ऊर्जा पैदा होती है, उसमें से अधिकांश ऊर्जा तो परिस्थितियों से जूझने में ही व्यतीत हो जाती है।

यदि हम अपने आपमें श्रद्धा और विश्वास पैदा कर सकें, यदि हम किसी भी घटना को सकारात्मक रूप से देख सकें, और यदि उस घटना को विशेष विधि से जान सकें, तो हमारी सारी ऊर्जा स्वयं ही बच जायेगी, और उस ऊर्जा के द्वारा हम अपने जीवन के बहुत अधिक कार्य भर्ती प्रकार से सम्पन्न कर सकेंगे।

आज का युग असुरक्षा और व्यस्तता का होने की वजह से भूख न लगना, नींद न आने की शिकायत बनी रहती है, मनुष्य ज्यादा से ज्यादा तनावयुक्त रहने लगा है, यह बीमारी इसका सम्बन्ध रक्त बहाव से भी है, चिन्ता की वजह से केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु पूरे संसार में व्याप्त है, और नाड़ियां शिथिल पड़ जाती हैं, और वे रक्त संचार उतनी तत्परता प्रत्येक तीन में से एक व्यक्ति की मृत्यु चिन्ता की वजह से से नहीं कर पातीं जितनी तत्परता से होना चाहिए, फलस्वरूप होती है। अनिद्रा, रक्तचाप, हृदयरोग, मस्तिष्क रोग, पेट से हृदय को पूरा रक्त नहीं मिल पाता और 'हार्ट अटैक' की सम्भावना बन जाती है, डॉक्टर ऐसी स्थिति में दवाइयों के होते हैं और यदि यह चिन्ता न हो तो व्यक्ति सैकड़ों रोगों से माध्यम से उपचार प्रारम्भ करते हैं, परन्तु इसके मूल स्रोत मुक्ति पा सकता है। उच्च वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति ब्लड प्रेशर, पर नहीं पहुंचते, जबकि इस प्रकार की बीमारियों का मूल अजीर्ण, अपच आदि बीमारियों से ग्रस्त है। डॉक्टरों के अनुसार कारण चिन्ता है, और यदि चिन्ता मिटाने का उपाय किया चिन्ता का सीधा सम्बन्ध पाचन संस्थान पर पड़ता है, इससे जाय तो इस बीमारियों का स्थायी हल हो सकता है।

पेट की आंतों में वृण पड़ जाते हैं, जिसकी वजह से पेट दर्द, चिन्ता होने के कई कारण हैं, जिनमें अज्ञात भय प्रधान है -

आर्थिक असुरक्षा, पुत्री का विवाह, पारिवारिक कलह, व्यापार की असफलता, जीवन की असुरक्षा आदि कई कारण हैं, जिनकी वजह से चिन्ताएं व्याप हो जाती हैं, और इन चिन्ताओं से व्यक्ति कंकाल मात्र बन कर रह जाता है, आवश्यकता इस बात की है, कि उन युक्तियों को अपनायें जिससे हम चिन्ता मुक्त हो सकें और जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकें।

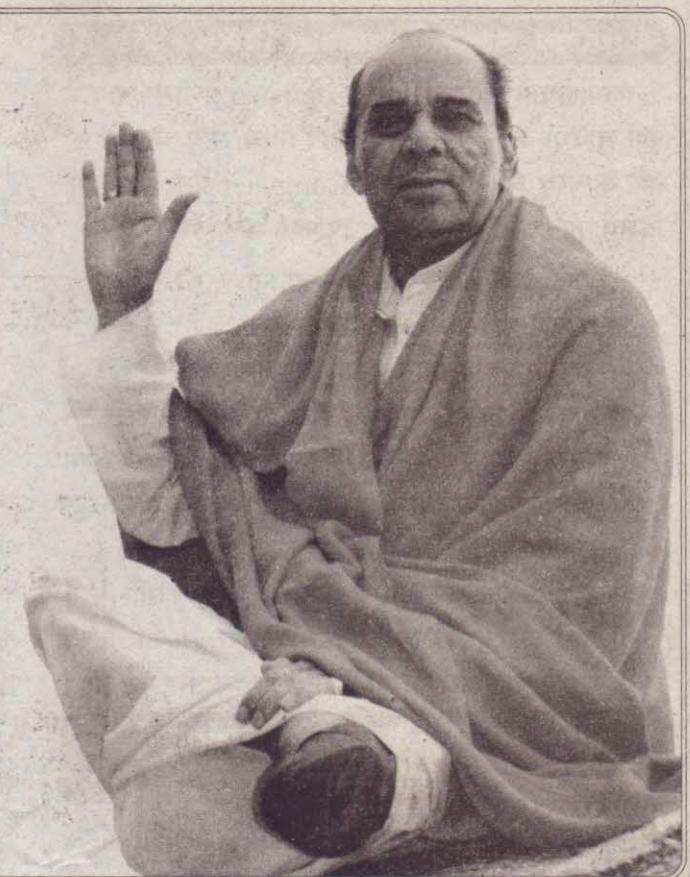
तनाव क्यों -

आज का व्यक्ति तनावों से घिरा हुआ है, और यदि सही रूप में देखा जाय, तो उसके दिन भर के क्रिया कलाओं में हँसी और प्रसन्नता के क्षण बहुत कम हैं, तनाव चिन्ता और परेशानी में समय ज्यादा व्यतीत होता है, और उसके पास जो मानसिक शक्ति होती है, उसका उपयोग उन तनावों से मुक्ति पाने में व्यतीत करना पड़ता है, फलस्वरूप वह अपने जीवन में जो सकारात्मक कार्य करना चाहता है, अपनी उन्नति के लिए जो कुछ प्रयत्न करना चाहता है, वह प्रयत्न नहीं कर पाता, और उसे विभिन्न कार्यों में अपनी शक्ति व्यय करनी पड़ती है।

...और यह भी भली भांति स्पष्ट हो गया है, कि हमारे जीवन का प्रबलतम शत्रु मानसिक तनाव है। विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है, कि तनाव की वजह से ही व्यक्ति ब्लड प्रेशर, हार्ट अटेक, और अन्य सैकड़ों प्रकार की बीमारियों से घिर जाता है, तनावों की वजह से ही उसका शरीर रुग्ण और कमजोर हो जाता है, और इन तनावों की वजह से ही वह समय से पहले ही बूढ़ा हो जाता है, इसलिए जो हानि जीवाणु-विषाणु कर पाते, वह कार्य मानसिक चिन्ताएं कर देती है।

इन मानसिक चिन्ताओं को दूर करने से सम्बन्धित कोई औषधि बाजार में उपलब्ध नहीं है। यदि मानसिक तनाव से घिरा हुआ व्यक्ति डॉक्टर के पास जाता है, तो डॉक्टर उसे नींद को गोली दे देता है, वह कुछ समय के लिए बेसुध सा जरूर पड़ा रहता है, परन्तु जब उसकी आंख खुलती है, तो वह फिर उन्हीं तनावों से घिर जाता है।

इसका कारण यह हुआ, कि इन औषधियों से तनाव समाप्त नहीं होता, कुछ समय के लिए हम गाफिल जरूर हो जाते हैं, कुछ समय के लिए हम बेसुध अवश्य हो जाते हैं, और फिर इन नींद की गोलियों का विपरीत प्रभाव ही



पश्चिम के प्रयोग

पश्चिम में मानसिक तनाव जरूरत से ज्यादा बढ़ गया है, न तो उनका जीवन सुखमय रहा है, और न उनका पारिवारिक जीवन। हर समय एक असुरक्षा सी अनुभव होने लगी है, वहां का व्यक्ति हर समय एक तनाव सा अनुभव करने लगा है, और इसकी वजह से वहां आत्महत्या का प्रतिशत बहुत बढ़ गया है, और यह पश्चिम के लिए एक चिन्ता का विषय बन गया है।

ठीक यही स्थिति भारत की भी है, यहां के लोग भी आज के वातावरण में कई प्रकार के तनावों से ग्रस्त हैं, प्रत्येक व्यक्ति का तनाव अलग है, परन्तु इन तनावों का प्रभाव तो शरीर पर पड़ता है, वह एक सा ही है। इस तनाव की वजह से वह असमय में ही वृद्ध होने लगा है, उसके चेहरे की रौनक समाप्त हो गई है, और आत्महत्या का प्रतिशत भारत में भी बढ़ गया है।

जो विपरीत परिणाम पुरुषों को भोगने पड़ रहे हैं, वैसे ही परिणाम स्त्रियों को भी भोगने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, वे भी कई प्रकार के तनावों से परेशान रहने लगी हैं, उनके सिर के बाल झड़ने लग गये हैं, आंखों के चारों ओर काले धब्बे बनने लग गये हैं, और चेहरे पर जो कोमलता, सुन्दरता

कार्यालय सम्बन्धी व्यवस्था विशेष ध्यान दें

कार्यालय में स्थापित नवीन Computer प्रणाली आपकी पूर्ण सुविधा के लिये बनाई गई है। नित्य सांच चार से छः बजे के बीच श्री नरेन्द्र कुमार Computer प्रमुख आपको विशेष जानकारी हाथों-हाथ उपलब्ध करा देंगे।

- ❖ आप अपनी सदस्य संख्या जानना चाहते हैं?
- ❖ आपकी सदस्यता कब समाप्त हो रही है?
- ❖ आप अपना वर्तमान पत्ता बदलवाना चाहते हैं?
- ❖ आपको सामग्री सम्बन्धित वी.पी. कब और कितने धनराशि की भेजी गई थी, यह सब जानकारी, समाधान तथा आवश्यक सुधार तत्काल कर दिया जायेगा।
- ❖ केवल उपरोक्त प्रश्नों के सम्बन्ध में ही 4 से 6 के बीच में बात करें। अन्य कार्य के लिये कार्यालय में शर्मा जी/कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें। अपनी बात थोड़े शब्दों में और स्पष्ट तौर पर कहें।

सदस्यता नवीनीकरण के सम्बन्ध में विशेष ध्यान दें।

- ❖ आपकी वार्षिक सदस्यता पूर्ण होने के 1 महीने पहले आपको नवीनीकरण प्रपत्र भेज दिया जाता है और उसके साथ ही सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त उपहार की वी.पी. वार्षिक शुल्क 258 + 45 डाक व्यय सहित भेज दी जाती है। यदि आपको सूचना पत्र प्राप्त नहीं हुआ है और सीधे वी.पी. प्राप्त हुई है तो भी यह समझिये की यह नवीनीकरण हेतु है। आपको भेजा गया पत्र डाक में कहीं खो गया है।
- ❖ सामग्री की वी.पी. का आर्डर आप कार्यालय में लिखवाते हैं और आप पर विश्वास कर यह वी.पी. भेजी जाती है। यदि आप इसे नहीं छुड़ाते हैं तो यह कार्यालय का अपमान है। आपके प्रति जो हमारा विश्वास है उसे ठेस लगती है। आप साधक हैं, शिष्य हैं विश्वास को कभी न तोड़ें।
- ❖ आर्डर फोन पर लिखवाते समय अथवा कार्ड भेजते समय अपना नाम, पता स्पष्ट रूप से लिखे तथा साथ ही अपना फोन नम्बर (मोबाइल अथवा लैंडलाईन) अवश्य लिख दें।
- ❖ भविष्य में ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि आपको वी.पी. सम्बन्धी जानकारी अथवा अन्य जानकारी आपके फोन पर आपको बता दी जायेगी।

और स्निग्धता होनी चाहिए, वह समाप्त होने लगी है, इसलिए मैं जो उपाय बता रहा हूं, वह केवल पुरुषों के लिए ही नहीं है, स्त्रियों के लिए भी समान रूप से लागू होता है।

...और यह बात तो सही है, कि व्यक्ति मानसिक तनाव से मुक्त होता है, तभी वह साधना कर सकता है, तभी उसका ध्यान केन्द्रित हो सकता है,

तभी वह अपनी ऊर्जा का सदुपयोग कर सकता है, और तभी वह अपनी ऊर्जा के द्वारा निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

पश्चिम में मानसिक शक्ति पर कार्य हो रहा है, और उन्होंने अनुभव किया है, कि यदि व्यक्ति के जीवन में तनाव न हो, तो वह क्षमता से पांच हजार गुना ज्यादा कार्य कर सकता है, परन्तु उसके शरीर में जो ऊर्जा पैदा होती है, उसमें से अधिकांश ऊर्जा तो परिस्थितियों से जूझने में ही व्यतीत हो जाती है।

पिछले दिनों यूरोप में इससे सम्बन्धित कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं, और इस विज्ञान को 'फेथ हीलर' के नाम से जाना जाता है, इसका तात्पर्य यह है, कि यदि हम अपने आपमें श्रद्धा और विश्वास पैदा कर सकें, यदि हम किसी भी घटना को सकारात्मक रूप से देख सकें, और यदि उस घटना को विशेष विधि से जान सकें, तो हमारी सारी ऊर्जा स्वयं ही बच जायेगी, और उस ऊर्जा के द्वारा हम अपने जीवन के बहुत अधिक कार्य भली प्रकार से सम्पन्न कर सकेंगे।

कैसे मुक्त हों तनाव से पांच सकारात्मक उपाय

1. होनी को होने दीजिये

जो घटना घटित होने वाली है, वह घट कर के रहेगी फिर उसके लिए अभी से चिन्ता करने की क्या जरूरत है? यदि कोई दुर्घटना घट गई है, तो उस पर चिन्ता करने की अपेक्षा उस प्ररिस्थिति को स्वीकार कर लीजिये ऐसा करने से आप आधी विजय प्राप्त कर लेंगे। चर्चिल 70 वर्ष की अवस्था में जमीन हमलों से जर्जर इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने तो उनके चारों ओर चिन्ताएं ही चिन्ताएं थीं। जब उन्हें पूछा गया कि आप इतनी अधिक चिन्ताओं से परेशान नहीं होते तो उन्होंने कहा, जो घटना घटित होने वाली है, यह घटित होगी ही, मैं उसे टाल नहीं सकता, यदि घटना घट भी गई और मैं चिन्ता से ब्रस्त रहा तो उस विपक्षि का सामना भी नहीं कर सकूगा इसकी अपेक्षा तो जो भी समस्या आयेगी, उस समय उसका

कोई न कोई रास्ता निकल ही जायगा और तब मैं उससे संघर्ष कर उस पर विजय प्राप्त कर लूँगा।

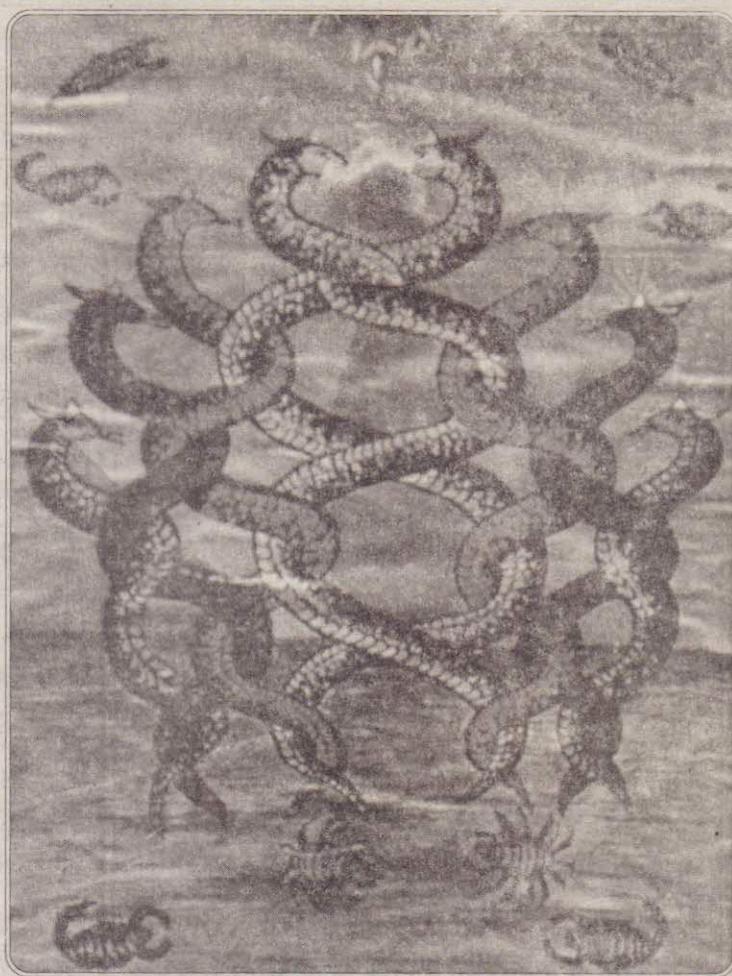
चिन्ताओं पर विजय प्राप्त करने का पहला मूल मंत्र यही है, कि हम मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ रहें और होनी को स्वीकार कर लें, ऐसा ही व्यक्ति जीवन में सफलता पा सकता है।

2. अधिकतर आशंकाएं घटित होती ही नहीं

हम कई प्रकार की भावी चिन्ताओं से चिन्तित रहते हैं, यदि ऐक्सीडेन्ट हो गया तो क्या होगा, यदि किसी ने नुकसान पहुँचा दिया तो मैं क्या करूँगा, नौकरी छूट जायगी तब मेरा क्या हाल होगा, व्यापार में बहुत उतार चढ़ाव है, यदि दिवालिया हो गया तो क्या होगा, आदि ऐसी आशंकाएं बराबर मानस में व्याप रहती हैं, जिनकी वजह से हम चिन्तित रहते हैं। एक बार जब मैं कई कारणों से चिन्तित था तो मैंने शांत चित्त से बैठकर विचार किया कि वे कौन-कौन सी चिन्ताएं हैं, जिनकी वजह से मैं परेशान हूँ, तो मुझे चार कारण नजर आये, मैंने उन्हें कागज पर उतार लिया।

1. मेरा पुत्र बीमार है, वह इकलौता पुत्र है, यदि वह मर गया तो क्या होगा?
2. अब मेरे पास बहुत कम पैसा बचा है, जीवन निर्वाह कैसे होगा?
3. मेरा मकान जर्जर है, और दीवारें कमजोर हैं, गिर गया तो हम सब दब कर मर जायेंगे।
4. पुत्री बड़ी हो गई है, और यदि इसकी सगाई जल्दी नहीं हुई तो क्या होगा?

मैं इन चारों आशंकाओं से अत्यधिक चिन्तित था, और दिनों दिन घुलता जा रहा था, यह कागज मैंने अपनी फाइल में रख दिया था, और फिर अपने कार्यों में लग गया था, साल भर बाद संयोगवश फाइल को उलटने पलटने पर यह कागज मेरे हाथ लगा तो इसमें से एक भी घटना घटित नहीं हुई, मेरा पुत्र बीमार था वह सही इलाज से ठीक हो गया और उसकी किसी प्रकार कोई तकलीफ नहीं रही, मर्हीने भर बाद ही मुझे एक अतिरिक्त काम मिल गया जिसकी वजह से मेरी आर्थिक स्थिति अनुकूल हो गई, उस बरसात में मेरा मकान गिरा नहीं और सर्दियों में मैंने उसकी वापस मरम्मत करवा कर ठीक हुक्कियों को ढूँढ निकालिये जिसके माध्यम से आप चिन्ता पर करवा दिया, पुत्री की सगाई अभी तक हुई नहीं है, परन्तु अब



पूरी सम्भावना है, और बातचीत अन्तिम स्तर पर चल रही है।

इस प्रकार जिन चार समस्याओं से मैं चिन्तातुर और भयग्रस्त था, उनमें से तीन चिन्ताएं तो अकारण ही थीं, अतः स्पष्ट है, कि हम जिन आशंकाओं से परेशान रहते हैं, वे आशंकाएं घटित नहीं होतीं अतः भावी आशंकाओं से चिन्तित नहीं होना चाहिए, यदि ऐसा निश्चय मन में आ जाता है, तो कई समस्याएं और चिन्ताओं से हम मुक्त हो सकते हैं।

3. चिन्ता को आप मिटा दें

चिन्ता और आपके बीच बराबर संघर्ष है, या तो चिन्ता आपको और आपके स्वास्थ्य को मिटा देगी या यदि आप में पौरुषता है, तो आप चिन्ता को मिटा देंगे।

चिन्ता को दो तरीकों से मिटाया जा सकता है, पहला तो यह कि उन कारणों की खोज कीजिये जिनकी वजह से आपको चिन्ता है, यह पता लगाइये कि वे कौन से कारण हैं, और उनसे क्या अनिष्ट हो सकता है, इतना होने के बाद उन युक्तियों को ढूँढ निकालिये जिसके माध्यम से आप चिन्ता पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरा तरीका यह है, कि आप अधिक से अधिक व्यस्त रहिये। मस्तिष्क निरन्तर क्रियारत रहता है, परन्तु उसमें एक ऐसी विशेषता है, कि वह एक बार में एक ही बात सोच सकता है, दो बातें एक साथ मस्तिष्क नहीं सोचता। यदि आप कुछ नहीं करेंगे तो वह चिन्ता के बारे में ही या भावी

आशंकाओं के बारे में ही सोचता रहेगा और आपको धुन की तरह खोखला बना देगा। इसके लिए आप दूसरे कार्यों और प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाइये। ज्यादा से ज्यादा अपने आपको व्यस्त रखिये, उन पुस्तकों का अध्ययन कीजिये जो आप व्यस्त होने की वजह से नहीं पढ़ पाये थे, उन अधूरे कार्यों को पूरा कर लीजिये जिनका पूरा करना जरूरी है, घूमने निकल जाइये, मित्रों के साथ बातचीत में ज्यादा समय लगाइये और अन्य प्रवृत्तियों में अपने आपको लीन कर दीजिए। ऐसी स्थिति पैदा कर दें कि मस्तिष्क को उन भावी आशंकाओं के बारे में सोचने का समय ही न मिले और जब मस्तिष्क को चिन्ता से संबंधित घटनाओं के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलेगा तो फिर चिन्ता भी नहीं होगी।

चिन्ता उस समय आप पर हावी होने की कोशिश करती है, जब आप खाली होते हैं, आपने स्वयं ने अनुभव किया होगा कि जब आप व्यस्त होते हैं, तब आपको किसी प्रकार का तनाव या चिन्ता नहीं होती परन्तु ज्योंही आप रात को खाली होते हैं, त्योंही चिन्ता आपके मस्तिष्क पर नियन्त्रण कर लेती है, और आपको परेशान कर डालती है।

चिन्ता मुक्त होने के लिए अपने आपको अत्यधिक व्यस्त रखिये, इतना अधिक व्यस्त, कि चिन्ता आप पर हावी नहीं हो सके।

4. दूसरों से उम्मीद मत रखिये

हमारी चिन्ताओं का एक कारण यह भी है, कि हम दूसरों से कई बातों की उम्मीद रखते हैं, यदि हमने किसी के लिए भलाई का कार्य किया है, तो सहायता की उम्मीद रखते हैं, हम उम्मीद रखते हैं, कि पत्नी हमारी सेवा करे, हम उम्मीद रखते हैं, कि बीमार होने पर मित्र हाल चाल पूछने के लिए आवें और हम उम्मीद रखते हैं, कि हमारे पुत्र हमारी सेवा करें और मदद करें; इस प्रकार के विचार या दूसरों से उम्मीद रखना ही चिन्ता का कारण है, आज के युग में व्यक्ति पूर्णतः स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो गया है, किसी को किसी की परवाह नहीं है, इसलिए हमें पूर्वजों की कहावत याद रखनी चाहिए कि 'नेकी कर कुएं में डाल'।

कृतज्ञ और अशिक्षित सन्तान सांप से ज्यादा दुःखदायी होती है, परन्तु उसे कुढ़ने से और चिन्ता करने से कोई प्रयोजन सार्थक नहीं होता, यदि पत्नी पूरी सेवा नहीं कर पाती तो आप व्यर्थ में इस तनाव को लेकर बैठने से अपना ही नुकसान करेंगे, जीवन में जो कुछ हो सके, आप दूसरों के लिए पत्नी, पति या पुत्रों के लिए अवश्य कीजिये परन्तु

तनाव मुक्त रहने के दस शर्वोत्तम उपाय

1. आज की चिन्ता करिये ... कल जौ हीमा दैखा जायेगा।
2. अपनी स्थिति और विपत्ति की स्वीकार कर लें, स्थिति की स्वीकार करना, चिन्ता और पर विजय पाना है।
3. समस्या की कामज पर लिखिये, उसका विश्लेषण कीजिये फिर उसका हल ढूँढ लीजिये।
4. अत्यधिक व्यस्त रहिये, जिससे आपकी चिन्ता करने का समय ही न मिले।
5. तनाव आपकी बरबाद कर दे, उससे पहले आप उसे समाप्त कर दें।
6. जिन आवी घटनाओं से आप चिनित हैं, ही सकता है वे घटनाएं घटें ही नहीं, फिर आप अभी से चिनित कर्यों हैं?
7. दुर्घटना, चिन्ता या तनाव की एक वीर पुरुष की तरह स्वीकार कीजिये।
8. विपत्ति या तनाव का समाधान एक आधिक्षण में तो हीमा नहीं, फिर आप दुःखी कर्यों ही रहे हैं?
9. जौ घटना घटित ही चुकी, उसे अब जाइये और व्यस्त ही जाइये।
10. विनम्रता, सहनशक्ति एवं निर्णय से आप तनाव पर सफलता पा सकते हैं।

उनसे किसी प्रकार की अपेक्षा मत रखिये, तटस्थ होकर यदि आप कार्य करते रहेंगे तो आपके जीवन में चिन्ता और तनाव के क्षण कम ही होंगे। इस सुनहरे सूत्र को बराबर याद रखिये कि मैं मात्र तटस्थ हूं और जो कुछ हो रहा है, नियन्ता की कृपा से हो रहा है, ऐसा सोचने पर अप पूर्णतः शांति अनुभव कर सकेंगे।

5. निर्लिप्त रह कर प्रभु के चरणों में अपने आपको सौंप दीजिये

निन्दा सबसे मधुर रस होता है, व्यक्तियों को निन्दा करने में आनन्द की अनुभूति होती है, यदि आप कुछ हैं, आपका कुछ व्यक्तित्व है, यदि आप कुछ कर रहे हैं, और यदि आपने अपने प्रयत्नों से जीवन को ऊँचा उठाया है, तो निश्चय ही सैकड़ों शत्रु स्वतः ही पैदा हो जये होंगे, और वे आलोचना करेंगे ही क्योंकि आलोचना करने से तथा निन्दा करने से उन्हें मधुर रस की अनुभूति होती है, तथा इससे सुख मिलता है।

परन्तु आप विचलित न हों, याद रखिये कि सङ्क पर पढ़े हुए कुते को कोई लात नहीं मारता, परन्तु घायल शेर को लात मारकर प्रत्येक को सुख मिलता है। यदि आपकी आलोचना हो रही है, गालियां मिल रही हैं, समाज में निन्दा हो रही है, तो आप अपने आपको निर्लिप्त रखिये, क्योंकि इन अनुभूतियों से तो प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को गुजरना पड़ा है, जिसने भी कुछ बनने का प्रयास किया है, ऐसी स्थिति में आप अपने आपको प्रभु के चरणों में लीन कर दें, आप भूल जायं कि आपका कुछ अस्तित्व है भी, ऐसा करने पर आप पूर्णतः चिन्ता मुक्त हो सकेंगे।

यूरोप में और पश्चिम में जिसे 'फेथ हीलिंग' कहा गया है, भारतवर्ष में उसे 'तनाव मुक्ति साधना' के नाम से पुकारा गया है 'सांख्योपनिषद' में इस तनाव मुक्ति के बारे में अत्यन्त महत्वपूर्ण चिन्तन और उपाय बताया गया है, उसमें तो यहां तक स्पष्ट किया गया है, यदि व्यक्ति के लिए सांस लेना आवश्यक कार्य है, तो नित्य पांच मिनट तक इस साधना के लिए व्यय करना भी आवश्यक है।

और यह नित्य केवल पांच मिनट की साधना है, सही अर्थों में देखा जाय, केवल पांच मिनट का प्रयोग है और यदि साधक नित्य इस प्रयोग को सम्पन्न करे तो जहां उसमें मानसिक शक्ति का विकास होता है, वहीं उसमें ऊर्जा का संचरण भी होता है, और वह निश्चित रूप से तनावों से मुक्ति पाता हुआ, उच्चति की ओर अग्रसर हो जाता है।

मैंने स्वयं इस प्रयोग को आजमाया है और मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से इस प्रयोग पर नित्य पांच मिनट व्यय करता हूं और मैंने यह अनुभव किया है कि यह संसार का सर्वोत्तम प्रयोग है, क्योंकि इसमें ज्यादा साधना या पूजा की आवश्यकता नहीं है, कोई जटिलता या क्रिया पद्धति नहीं है, केवल पांच मिनट इस प्रयोग को सम्पन्न करना है, और व्यक्ति स्वयं इसका परिणाम कुछ ही दिनों में अनुभव करने लगेगा।

पश्चिम में जो पद्धति विकसित हुई है मेरी राय में उसका आधार भी यही 'तनाव मुक्ति साधना' है क्योंकि इस साधना में जिस प्रकार से क्रिया पद्धति समझाई है, ठीक उसी क्रिया पद्धति को यूरोप के लोगों ने आजमाया है, यह अलग बात है कि उन्होंने इसे फेथ हीलिंग के नाम से पुकारा है, पर उन्होंने इसके द्वारा जो अनुकूल परिणाम अनुभव किये हैं वे आश्चर्य चकित कर देने वाले हैं, इसकी वजह से उनके मानसिक तनावों में कमी आई है, स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है और अपनी पूरी ऊर्जा के साथ आगे की ओर बढ़े हैं।

तनाव मुक्ति साधना प्रयोग

इसके लिए किसी विशेष समय या मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं है, साधक किसी भी दिन से इस प्रयोग का प्रारम्भ कर सकता है। इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका, वृद्ध या वृद्धा कोई भी सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि इसके अनुकूल परिणाम ही अनुभव हुए हैं।

इस प्रयोग के बारह बिन्दु हैं, जिनका प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए यूरोप में इसे 'ट्रैल्व पॉइंट्स' के नाम से पुकारा गया है, ये बारह बिन्दु निम्न प्रकार से हैं।

1. साधक जब भी उठे, स्नान कर, एकान्त स्थान में बैठ जाय, उस समय साधक को ढीले ढाले वस्त्र पहनने चाहिए, कसे हुए वस्त्र ध्यान में बाधा डालते हैं।
2. इस कार्य के लिए विशेष रूप से निर्मित 'तनाव-मुक्ति यंत्र' को अपने सामने रख दें, और उसके पास ही गुरु का चित्र स्थापित कर दें, या जिसकी आप पूजा करते हैं, जिस देवता को आप मानते हैं, उसका चित्र सामने स्थित कर दें।
3. इसके बाद तीन बार ॐ की ध्वनि का उच्चारण करें।
4. फिर सामने जो 'तनाव मुक्ति यंत्र' रखा हुआ है, उसके मध्य में एक टक देखने का प्रयत्न करें, और मन में यह चिन्तन करें, कि अलौकिक शक्ति को प्राप्त कर रहा हूं।
5. यदि मन भटक रहा हो, तो फिर उस यंत्र पर केन्द्रित

कर मन को एकाग्र करने का प्रयत्न करें, यों यह महायंत्र विशेष रूप से इसी कार्य के लिए निर्मित है, और इसकी जो पारलौकिक किरणें निकलती हैं, वे साधक के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती हैं, और उसकी मानसिक एकाग्रता को मजबूत करती है।

6. इस महायन्त्र के मध्य में बिना पलक झपकाए बराबर देखते रहने का प्रयत्न करें, जितना ज्यादा हो सके आप स्थिर दृष्टि से इस महायन्त्र के मध्य में देखते रहें, जिससे कि शक्ति सम्पन्न उस यंत्र की किरणें साधक के लिए अनुकूलता प्रदान कर सकें।
7. जब आंखें थक जायं या पलक झपक जाय, तो पास में रखे हुए जल से आंखों को हल्के से भिंगों दें, और फिर पौँछ कर फिर इसी प्रकार से इस यंत्र के मध्य में देखने का प्रयत्न करें।
8. जब यह प्रयोग आप सम्पन्न कर रहे हों, उस समय आस पास का वातावरण शान्त रहे तो ज्यादा उचित रहेगा, साथ ही साथ आप एक अगरबत्ती और शुद्ध घृत का दीपक लगा सकते हैं।
9. इस महायंत्र के मध्य में एक टक देखने से पूर्व ॐ की ध्वनि के बाद पांच मिनट निम्न मंत्र जप करें, और जब यह प्रयोग समाप्त हो जाय तब भी पांच मिनट के लिए इसी मंत्र जप को सम्पन्न करें।
10. यह मंत्र है -

॥ ॐ सोहम् हं ॐ ॥

11. जिस यंत्र पर आप अभ्यास कर रहे हैं, उस पर केवल आप ही नित्य अभ्यास करते रहें, एक यंत्र दो या तीन लोगों के लिए उपयोगी नहीं हो सकता, क्योंकि उसकी पारलौकिक किरणों का सीधा संबंध आपकी मानसिक किरणों से स्थापित हो जाता है, और दूसरे, जो ऊर्जा मंडल निर्मित होता है, वह आपको शक्ति देने में समर्थ हो पाता है।
12. यथासंभव ज्यादा से ज्यादा समय तक एक टक बिना पलक झपकाये इस दुर्लभ मंत्रसिद्ध महामंत्र के मध्य में देखने का अभ्यास करें, यह अभ्यास धीरे धीरे बढ़ते रहें, यदि बारह मिनट तक अभ्यास हो जाता है, तो अपनी साधना को पूर्ण समझें।

उपरोक्त बारह बिन्दु आपकी जिन्दगी और आपकी सफलता के मूल सूत्र हैं, क्योंकि इस प्रकार करने से जहां 24 घंटों में

आपको ज्यादा से ज्यादा पांच या दस मिनट व्यय करने पड़ते हैं, पर इस प्रकार के प्रयोग से जो पारलौकिक किरणें प्रवाहित होती हैं, वे आपके पूरे व्यक्तित्व को बदलने में सहायक होती हैं, और आप मानसिक तनाव से मुक्त हो जाते हैं।

इस प्रयोग का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि किसी भी प्रकार की विपत्ति या परेशानी आ भी जाय, तो भी आप विचलित नहीं होते, और उस बाधा या समस्या से जूझनें की क्षमता आप में आ जाती है, और आप पूरी शक्ति से उस समस्या के निराकरण में लग जाते हैं।

इसके अलावा इस प्रयोग से आपके चेहरे पर एक विशेष आभा मण्डल बन जाता है, जिसका प्रभाव सीधे सामने वाले व्यक्तित्व पर पड़ता है, चाहे सामने वाला व्यक्ति आपका अधिकारी हो या विरोधी। आप जब उसके सामने जाते हैं तो इस आभा मण्डल की वजह से वह निस्तेज हो जाता है और आपका व्यक्तित्व उस पर हावी हो जाता है, फलस्वरूप जीवन में कार्य सम्पन्न करने में, अपना काम निकालने में और सफलता पाने में ज्यादा सुविधा हो जाती है।

इससे आपकी ऊर्जा व्यर्थ में व्यय नहीं होती और उस ऊर्जा से आप रचनात्मक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, तथा उन्नति के लिए विशेष प्रयोग, विशेष कार्य और विशेष चिन्तन सम्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रयोग से कई प्रकार के रोगों पर मानव स्वयं विजय प्राप्त कर लेता है, पेट से संबन्धित रोगों और ब्लड प्रेशर आदि में तो यह महत्वपूर्ण तथा लाभदायक है। जो काम लाखों स्पर्ये खर्च करने के बावजूद औषधि भी नहीं कर पाती, वह कार्य केवल यह छोटा सा प्रयोग सम्पन्न कर लेता है।

यदि आप यात्रा पर हैं, तो इस यंत्र को अपने साथ में रख सकते हैं, वहां पर भी समय मिले तो पांच दस मिनट के लिए इस अभ्यास को पूरा कर सकते हैं।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यदि आपको किसी विशेष अधिकारी से किसी विशेष कार्य के लिए मिलने जाना है, तो जाने के ठीक पूर्व यह अभ्यास करके जाय, और आप स्वयं इसका चमत्कार देख लें, कि जो कार्य सम्पन्न होने की संभावना ही नहीं थी, वह कार्य देखते-देखते पूरा हो जाता है।

वस्तुतः आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस प्रकार का महायंत्र और साधना आवश्यक है, और जीवन की पूर्णता के लिए सहायक है।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

‘इच्छा विहीनः पशुः’ जिस मनुष्य की कोई इच्छा न हो, आकांक्षा न हो उसका जीवन पशुतुल्य ही है। जीवन का सौभाग्य तो तब है, जब व्यक्ति इच्छा करे और वह पूरी हो जाए। आपा-धापी के इस युग में, मनुष्य की इच्छाएं तो बढ़ गई हैं, परन्तु प्रयास के बाद भी जब वह इन इच्छाओं को साकार नहीं कर पाता है, तब उसका निराश हताश हो जाना स्वाभाविक है।

आपकी अनेक आकांक्षाओं व समस्याओं को देखते हुए पत्रिका कार्यालय द्वारा समय-समय पर विशिष्ट प्रभावकारी दिव्य ऊर्जा से पूरित सामग्री उपलब्ध कराई गई है -

हिरण्यगर्भ गुटिका - भगवान् सूर्य के तेजस्वी मंत्रों से चैतन्य इस गुटिका को धारण करने से आपमें वही तेजस्विता, प्रखरता आ जाएगी जो भगवान् कृष्ण के पुत्र साम्ब ने सूर्य साधना से प्राप्त की थी।

क्रीं चक्र - शक्ति तत्त्व को प्राप्त कर लेने के लिए यह चक्र अद्वितीय है, जिसको धारण करने के पश्चात् जीवन की सभी विसंगतियां समाप्त होने लगती हैं।

कामदेव चंत्र - जिसे प्राप्त कर आपका व्यक्तित्व आकर्षक व सम्मोहक हो जाएगा, कि आप स्वयं भी आश्चर्यचित रह जाएंगे।

सर्वकार्य सिद्धि गुटिका - जिसके प्रभाव से आपके वांछित कार्य सम्पन्न होने लगते हैं तथा मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

बगलामुखी गुटिका - जिसके प्रभाव से शत्रु पक्ष निस्तेज हो जाता है, और जीवन पर यदि कोई संकट आ गया हो, तो वह टल जाता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - ‘ज्ञानदान’

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि “मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठित ‘हिरण्यगर्भ गुटिका, क्रीं चक्र, कामदेव यंत्र, सर्वकाय सिद्धि गुटिका एवं बगलामुखी गुटिका’ 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें”, आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठित ‘हिरण्यगर्भ गुटिका, क्रीं चक्र, कामदेव यंत्र, सर्वकाय सिद्धि गुटिका एवं बगलामुखी गुटिका’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुकृष्णामा जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव श्री होने लगता है।

रविवार, 08-03-09

यह तो अपने आप में अद्वितीय प्रयोग है। इसे सिद्ध करने की प्रत्येक साधक के मन में इच्छा रहती ही है। षोडशी योगिनी साधना सम्पन्न करना अपने आप में तंत्र की ऊंचाईयों की ओर कदम बढ़ाना है। एक ही प्रयास में तंत्र की प्रचण्डता को अपने जीवन में उतार लेने की क्रिया सम्पन्न करना है, मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि के साथ-साथ वायुगमन, जल गमन, योग में पूर्णता, अदृश्य होने की क्षमता आदि अनेक अलौकिक शक्तियों को प्राप्त करना, अद्वितीयता व श्रेष्ठता को प्राप्त करने की क्रिया सम्पन्न करना है। जिसने भी यह अद्भुत और अद्वितीय साधना सम्पन्न कर ली, उसके जीवन के शब्दकोश में फिर असम्भव जैसा कोई शब्द रह ही नहीं सकता... एक दुर्लभ और सर्वथा गोपनीय प्रयोग... और इसे प्रत्येक साधक साधिका सम्पन्न कर सकते हैं।

सोमवार, 09-03-09

साबर धनदा प्रयोग

आयु, आरोग्य, उमंग, उत्साह, परम सौन्दर्य से सम्पन्न धर्म पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र और अन्य सभी सुख उस समय बेकार लगते हैं, जब धन का नितान्त अभाव हो। हमारे ऋषियों-मर्हषियों ने ऐसे अनेक उपाय बताये हैं, जिनसे अर्थ का अभाव दूर किया जा सकता है। फिर जब परम पूज्य गुरुदेव स्वयं ही आकस्मिक धन प्राप्ति की विशिष्ट रथियों से युक्त साधना सामग्री पर यह प्रयोग साधकों को सम्पन्न करायें तो निश्चय ही यह ऐसा अवसर है जिसे किसी भी कीमत पर हासिल कर लेना ही चाहिए। आप अपने परिवार के अन्य सदस्य के लिये भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र भेंट में देकर उसे यह सुअवसर प्रदान कर सकते हैं।

मंगलवार, 10-03-09

स्वर्णविती अप्सरा साधना

जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य साधनाओं का भी विशेष महत्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह अन्य किसी साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। इस आपाधारी, तनाव, हताशा, निराशा आदि से भरे हुए युग में व्यक्ति प्रेम और कोमलता को भूल सा गया है.... जबकि प्रेम तो जीवन का आवश्यक अंग है.... जो प्रेम करना नहीं जानता, वह ईश्वरत्व को भी प्राप्त नहीं कर सकता.... और विशुद्ध प्रेम साकार होता है अप्सरा साधना के माध्यम से.... स्वर्णविती अप्सरा साधक के जीवन में एक नयी उमंग और यौवन के समान कोमलता ले आती है जिससे कि वह हमेशा ही प्रसन्नतामय दिखता है। आप सभी एक बार इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें, और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की शृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में 3 दिनों के लिये 08-09-10 मार्च 2009

किन्हीं पांच शक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $300 \times 5 = \text{Rs.} 1500/-$ जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अझेपन को दूर कर लेने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में स्थिर प्राप्त कर लेने का...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अधिष्ठक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांयं-9 बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

नवार्ण दीक्षा

यह मंत्र मात्र अपने भीतर विराट शक्तियों को समेटे हुए है। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव के मुख से निकली अरिनि एकाकार होकर

विराट शक्ति पुंज बन गई और उसने द्वुर्गा महाकाली का स्वप्न धारण कर लिया, इसी प्रकार शक्ति के सभी मंत्रों का पुंजीभूत स्वरूप 'नवार्ण मंत्र' है, इसके प्रत्येक अक्षर में शक्ति के एक-एक स्वप्न का विवेचन है, नवार्ण मंत्र जपने मात्र से शक्ति जाग्रत होती है, शरीर में ऊष्मा व्याप्त होने लगती है, रोम-रोम जाग्रत होने लगता है। ऐसे महामंत्र की साधना दीक्षा जब गुरु कृपा से प्राप्त होती है तो शक्ति का आहवान होता ही है।

For Overcoming Any Problem

Any Monday

AGHOR SHIVA SADHANA

No one can possibly comprehend the great powers of Lord Shiva.

**To be able to do so one has to completely merge
in the divine and pure form of the Lord.**

Every form of the Lord is supremely blissful and benign for the Sadhak. But to benefit from His grace one has to enter into the world of Sadhanas.

Aghor means the Science of Hathyog through which the senses are brought under perfect control and the Kundalini Power is activated in order to have the divine glimpse of Lord Shiva. Through the Aghor form of Lord Shiva one can overcome even the most adverse situation in life.

It is quite famous among even the most accomplished sadhaks that it is very difficult to obtain a Aghor Sadhana. One can obtain knowledge of hundreds of Sadhanas but to get information regarding this wonderful form of Sadhana is almost impossible. It is easier to find a needle in a haystack than come across an Aghor Sadhana in the world of Sadhanas.

This Sadhana is based on Tantra the pure science which is used to make the individual progress spiritually. And once this happens then one can not just help oneself but also others to overcome their problems.

Generally no Guru is ready to give this Sadhana because of the tremendous power instilled in it. So it is very difficult to obtain this particular ritual.

Another fact about this ritual is that it is very simple, easy and quick acting. This is why revered Sadgurudev very kindly revealed it for the benefit of the common man.

For the common man the ritual comes as a boon because living in this world one has to face so many

problems and adversaries.

But after trying this Sadhana through the blessing of Lord Shiva one is able to banish all fear from life. This is an eleven day Sadhana that must be started on **Monday** of the dark fortnight of lunar month.

Try the Sadhana early morning between 4 and 6 am. Have a bath and wear fresh clothes red in colour. Cover the wooden seat with a clean red cloth. In a copper plate. Place a Mantra energized **Aghor Shiva Yantra**. Offer flowers, sandalwood paste and rice grains.

Light a ghee lamp. Near the Yantra place a **Rudraksha** and on it also offer flowers and sandalwood paste. Then chant the following verse praying to Lord Shiva for success and meditating on his divine form.

**Dakshinam Neel Jeemoot Prabham Sanhaar
Kaarakam Vakrabhroo-kutilam Ghoram-
ghoraakhyam Tamarchayet**

Next with a Rudraksha rosary chant 21 rounds of the following Mantra.

**OM YANG RANG LANG VANG
AGHORAAY GHORTARAAY NAMAH**

Do this daily for 11 days. Then wear the Rudraksha in a thread around the neck. Drop the Yantra and rosary in a river or pond. Do the same with the Rudraksha after one month.

Sadhana Articles - 260-

Any Eighth Day of Lunar Month

Kaal Gyaan Sadhana

LIKE TO FORESEE FUTURE PROBLEMS?

Who would not like to do so? How easy life would become once one could know what is in store in the near future!

Time has its own value and those who do not care to respect time are not respected by time. Fame and success fall to the share of those who know how to recognise the correct moment and make the best use of it.

But it is extremely difficult to be able to have the capability and few people do have the uncanny knack of choosing just the right moment.

But it would also be wrong to think that this capability cannot be acquired. Through a capable Guru one sure can gain this amazing power.

Both Lord Ram and Rayan had gained the same from their Guru Vishwamitra. Ravan misused the power and used it only for selfishgains while Lord Ram used it for good ends.

When Ravan was about to die Lord Ram asked Lakshman to go and acquire the knowledge of Kaal Gyaan (science of recognising value of each moment) from Ravan.

Lakshman obeyed his brother and went to Ravan. Ravan explained to him the importance of each moment and to demonstrate the fact he asked Lakshman to bring seven leaves and a needle.

Lakshman did and waiting for the most propitious moment Rayan pierced the seven leaves placed one over the other. To his surprise Lakshman found that the top leaf had transformed into gold, second into silver, third into copper and so forth and the last leaf

remained as it was.

Ravan thus explained that even the hundredth fraction of a second has its importance.

One can very well gain a similar power to distinguish the importance of each moment by performing the following ritual. It is a very powerful Sadhana that can simply change one's life for then one could use the power to take decisions at the right moment and even avoid dangerous moments.

This is basically a Sadhana of Mahakaal, one of the forms of Lord Shiva and hence one should meditate on the divine form of the Lord when trying the Sadhana.

On the **eighth day of the lunar month** try this ritual late in the night. Have a bath and wear clothes which are white.

Then sit facing North on a white mat. Cover a wooden seat with a white cloth and on a mound of rice grains place **Mahakaal Yantra**.

On the right side of the Yantra place **Mahakaal Gutika** and then light a ghee lamp. Offer flowers and rice grains on the Gutika and Yantra.

Then chant 21 rounds of the following Mantra with **Hakeek rossary**.

**OM HLOUM HLEEM KAAL-
TATVAAYPHAT**

After Sadhana wear the Gutika in a thread around your neck. Then for 21 days chant one round of the Mantra daily in the night before the Yantra. Light a ghee lamp daily. After 22 days drop the Yantra and rosary and also the Gutika in a river or pond.

Sadhana Articles - 360/-

Any Wednesday

SHWETAARK GANPATI SADHANA

Fulfil All Wishes

It is said that the Sadhana of Lord Ganesh brings all boons.

It is also said that in the present age of Kaliyug Lord Ganpati is a deity who is easily pleased and blesses the Sadhak with success in all spheres.

Lord Ganpati is the epitome of true knowledge and joy. That is why He is worshipped first among all the gods and goddesses. Lord Ganpati being the son of Lord shiva and Mother goddess Parvati imbibes the divine powers and kindness of both.

From the very early times it has been believed and it is also said in the ancient texts that Lord Ganpati must be first worshipped before starting any new task. Without his blessing no task can be fulfilled.

Lord Ganpati is a deity who also imbibes the energy and blessings of all deities. This is also the reason why He is worshipped foremost. When Lord Ganpati was born all divine deities came to bless Him. Lord Vishnu blessed Him with his knowledge and Siddhis.

Lord Brahma blessed Him with the power of creation. Lord Shiva blessed him with the power of destroying evil. Goddess Lakshmi blessed Him with wealth and prosperity. Goddess Saraswati blessed Him with intelligence and eloquence. Thus all deities bestowed their powers upon Him.

Hence by worshipping Lord Ganpati one can fulfill all and any wish. If a person remembers the Lord early morning then the entire day is spent happily and successfully. Man always has wishes and he always craves for their fulfilment. He keeps trying day and night to make his desires fructify.

Lord Ganpati is said to be Siddhi Pradaataa that is bestower of all boons. So through Sadhana of Ganpati and that too a special form of the Lord i.e. Shwetaark Ganpati all wishes can be fulfilled.

Try this Sadhana only on a **Wednesday** early in the morning. Have a bath and prepare Laddoos for the Lord.

Wear fresh red clothes. Sit facing North on a red mat. First of all chant four rounds of Guru Mantra. Cover a wooden seat with red cloth and on it make a mound of rice grains. On it place the **Shwetaark Ganpati**. On either side place a **Riddhi** and **Siddhi**. Offer Laddoos to the Lord. Then take water in the right palm and express your wish speaking your name and surname i.e. speak thus- I (name and surname) perform this Sadhana for fulfillment of this wish.

Next let the water flow to the ground. Next light a ghee lamp and incense. Then chant the following Mantra meditating on the form of Lord Ganpati for 35 minutes.

**OM HREEM KLEEM VINAYAKAAY
MANOVAANCHHITAM SIDDHAYE
OM KLEEM HREEM PHAT.**

Do this regularly for 21 days. After the Sadhana place the Shwetaark Ganpati at the place of worship.

Sadhana Articles - 300/-

22-23 फरवरी 2009

महाशिवरात्रि साधना शिविर, वाराणसी

शिविर स्थल: क्रीड़ा मैदान, महाबोधि इण्टर कॉलेज,
सारनाथ, वाराणसी (उ.प्र.)

आयोजक: वाराणसी: दीनानाथ यादव - 094541-61021 ○ मदन
मोहन श्रीवास्तव - 094153-93636 ○ हरि नारायण सिंह बिसेन -
098390-58363/094153-18363 ○ अनुराग तिवारी - 099367-
57386 ○ गोकर्ण सिंह - 094127-05845 ○ के.के.मिश्रा - 094523-
00621 ○ शक्ति प्रताप सिंह - 098389-25957 ○ संदीप कुमार -
097935-91113 ○ राजेश सिंह - 094252-36394 ○ लक्ष्मी नारायण
यादव - 093369-37214 ○ योगेश श्रीवास्तव - 094150-
37488 ○ पंकज कुमार सिंह - 094530-02455 ○ विवेक दूबे -
093362-75405 ○ डॉ. ए.के.सिंह - 094153-00185 ○ सिद्धाश्रम
साधक परिवार छत्तीसगढ़ ○ लखनऊ: राजबीर सिंह
○ जगदीश पाण्डेय - 093357-47134 ○ अजय सिंह - 099198-
04788 ○ मुगलसराय: सुनील कुमार - 094156-22157 ○ राकेश
त्रिपाठी - 099352-61012 ○ शिवकुमार जयसवाल - 098388-
51002 ○ दोहरीघाट: राजकुमार - 094526-57585 ○ अजय कुमार
राय - 094541-67052 ○ वडहलगंज: सुजीत राय - 099567-
63778 ○ रिकू तिवारी - 099363-52661 ○ हरिद्वार: संजय मिश्रा -
093193-72844 ○ रायबरेली: मोहन लाल वर्मा - 094157-
22805 ○ जगदम्बा सिंह - 098383-90535 ○ सुल्तानपुर: प्रकाश
यादव - 094533-42189 ○ इलाहाबाद: ओमप्रकाश पाण्डेय -
090053-07769 ○ कानपुर: डॉ. प्रमोद सचान - 098396-
87351 ○ बस्ती: दिनेश चन्द पाण्डेय - 099185-04677 ○ रामफेर
गुमा ○ शाहजहांपुर: प्रमोद मिश्रा - 094504-19596 ○ रामबाबू
सक्सेना - 05842-230671 ○ अजय शुक्ला ○ लखीमपुर:
राजकुमार रस्तोंगी - 093353-58238 ○ प्रेमशंकर कश्यप - 098383-
10548 ○ सीतापुर: रामसिंह राठौर - 094517-
67370 ○ के.के.निखिल - 099356-59468 ○ बरेली: एम.पी.सिंह -
094125-10771 ○ श्रीमती कमला मलिक - 097619-84527 ○
दीपक पाठक - 094128-99568 ○ राजेश प्रताप सिंह ○ मीरगंज:
ओंकार मिश्रा - 094124-50948 ○ बीसलपुर: श्याम कुमार
निखिल - 097617-49450 ○ रामकृष्ण वर्मा - 094128-
70223 ○ पूरनपुर: मोहन प्रधान - 094124-51424 ○ रमाशंकर
तिवारी - 093193-66729 ○ किंच्छा: अरविन्द अरोरा - 090124-
74077 ○ कायमगंज: प्रदीप भारद्वाज - 094118-48222 ○ संतोष
भारद्वाज - 099369-39907 ○ जौनपुर: डॉ. ए.के.सिंह - 094524-
09351 ○

09-10 मार्च 2009

होली महोत्सव, जोधपुर

शिविर स्थल: डॉ. श्रीमाली मार्ग, 1 हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर, राज., फोन: 0291-2433623/2432209

परमपूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले
एवम् वन्दनीय माता भगवति के चरणारविन्दों तले जोधपुर
की दिव्यतम भूमि में आप सभी गुरु भाई बहनों को प्यार भरा
आंमत्रण, हम तो केवल अपने हृदय के भावों के द्वारा आपसे
निवेदन कर सकते हैं। आप सभी सद्गुरुदेव के आत्म अंश
हैं। आप अवश्य ही आएंगे। - समस्त जोधपुर स्टॉफ

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆

28-29 मार्च 2009

चैत्र नवरात्रि महोत्सव साधना शिविर,

धनबाद

शिविर स्थल: सिन्धुआ स्टेडियम (धनबाद), झारखण्ड

आयोजक: आर.के.राय - 094319-54268 ○ जे.पी.सिंह - 092347-
94944 ○ रामलगन निषाद - 099312-33407 ○ रामनाथ राउत -
098353-60137 ○ सकलदीप रवानी - 092341-23654 ○ सपन
कुमार - 099552-94658 ○ सुधीर सुमन - 098355-71588 ○ लैखो
चौहान - 090067-60458 ○ रामदेव प्रसाद गुमा - 0326-
2372548 ○ अनुज कुमार सिन्हा - 098353-69456 ○ सत्येन्द्र कुमार
- 0326-2374538 ○ सहदेव प्रसाद चौहान - 099317-
82382 ○ मनोहर सिंह - 093340-49826 ○ लालबाबू गुमा - 098355-
07202 ○ अर्जुन व्यास - 092346-71689 ○ समरशक्ति सिंह -
099055-27225 ○ विजय सिंह - 092347-22322 ○ राधानाथ महतो
- 098357-71809 ○ लता देवी - 092348-13810 ○ प्रदीप भद्रानी -
098355-62509 ○ मनु चौधरी - 093440-1567 ○ गोविन्द ठाकुर -
099395-81531 ○ संजय कुमार सिंह - 094313-20502 ○ ओम
प्रकाश कुशवाहा - 094315-07549 ○ दिलीप प्रसाद गुमा - 098359-
60235 ○ अतुल कालिंदी - 099315-22416 ○ जनेश्वर प्रसाद -
094315-07559 ○ सच्चिदानन्द धारी - 092348-17179 ○ ओम-
प्रकाश उपाध्याय - 099345-53341 ○ उमेश झा - 094319-
54441 ○ डी. मुखर्जी - 094303-45816 ○ महाराज धारी - 098357-
06871 ○ पी.के.चक्रवर्ती - 094307-55357 ○ पी.एन.सिंह ○ मनोज
गुमा - 098351-46254 ○ पी.आर. ता. - 094317-30663 ○ सुरेश
साव - 094313-16453 ○ आर.पी.चौरसिया - 094313-
15463 ○ रामनाथ चौहान - 098353-76478 ○ अरुण कुमार सिंह
- 094317-31552 ○ सुजान महतो - 094311-91792 ○ श्रीदाम महतो

- 093400-4552 ○ राजु साव - 098357-67850 ○ राम कुमार महतो - 098355-97276 ○ चन्दन सिंह - 093343-94092 ○ शैलेन्द्र कुमार सिन्हा - 098351-29018 ○ हौसला पंडित - 098353-03527 ○ वी.एस.वी.राव - 093341-98077 ○ युधिष्ठीर महतो - 093340-18463 ○ अरुण कुमार - 092340-79296 ○ दुख हरण पासवान ○ राजेश राव - 099345-11440 ○ गौरी पासवान ○ गनौरी पासवान - 093340-64539 ○ रामजनम पासवान - 094313-40365 ○ सुदर्शन सिंह - 099055-53162 ○ रामप्रसाद महतो - 093349-16181 ○ विजय राम - 093348-53933 ○ श्रीप्रकाश सिंह - 098355-71731 ○ जनार्दन प्रजापति - 03262-311326 ○ राजेश कुमार - 093081-10113 ○ विविक बर्मन - 094319-14047 ○ अम्बिका प्रसाद ○ ओम प्रकाश जयसवाल - 099055-26545 ○ कैलाश शर्मा ○ ओम प्रकाश ओझा - 098355-72543 ○ सच्चिदानन्द सिंह ○ बबन सिंह - 098357-29172 ○ सत्यनारायण राय - 098355-36839 ○ योगेन्द्र राय - 098354-90715 ○ बी.पी.सिंह - 093340-11450 ○ डॉ. विजय कुमार - 098355-27315 ○ रविन्द्र प्रसाद ○ अशोक सिंह ○ बी.के.मंडल - 099343-69579 ○ अजित मंडल ○ हिरा कुमार - 094313-16398 ○ विजयभर ○ हरिश्चन्द्र कहार ○ संजय कुमार शर्मा ○ दयानन्द यादव ○ जनार्दन चौबे - 092341-24010 ○ रंजित कुमार सिंह ○ रंजित पासवान - 097987-56338 ○ उत्तम कुमार राय - 094313-20255 ○ श्यामसुन्दर राजभर ○ एनुअल हरिजन ○ बंगाली पासवान - 097987-56338 ○ अनिल विश्वकर्मा - 099311-81575 ○ धर्मेन्द्र कपुर - 098523-77830 ○ डी.डी.सिंह ○ सिंधेश्वर प्रसाद - 098357-06479 ○ दशरथ ठाकुर ○ सुखदेव विद्रोही - 098355-36530 ○ समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, सिजुआ (धनबाद) ○ बोकारो: अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक, बोकारो ○ पी.एन.पाण्डे - 094311-27345 ○ सुभेश्वर झा - 094317-39993 ○ डॉ.एस.के.बरियार - 094307-68661 ○ विजय झा - 094313-79234 ○ गोपाल ठाकुर - 094311-45601 ○ संतोष ठाकुर ○ मोहन सिंह ○ अरुण कुमार वर्मा ○ बेरमो (फुसरो): धनेश्वर निखिल - 099553-32125 ○ भगवान दास - 099341-17533 ○ गोमिया: श्रीराम - 094315-04350 ○ रामगढ़ तोपाः शोलो मनी - 094313-95121 ○ टाटा: वाई.एन.मुर्ति - 093047-90006 ○ अभय कुमार वर्मा - 098355-63288 ○ रांची: विनोद कुमार सिन्हा - 094315-79976 ○ श्याम चन्द्र सवासी - 093344-33652 ○ सुभाष पोद्दार ○ इन्द्रदेव राम ○ विमल पाठक ○ पटना: डॉ.बी.के.आर्य - 092348-88896 ○ हावड़ा: विजय शंकर दीक्षित - 033-2658403 ○ हजारीबाज, विष्णुगढ़: गोपाल सिंह मौर्य - 098355-42120 ○ बासदेव महतो ○ महेन्द्र साव ○ जगदीश प्रसाद स्वर्णकार ○ महेन्द्र महतो ○ डॉ.एस.एन.लाल - 094311-40675 ○ पाकुड़: हरिकिशोर मंडल - 094312-75415 ○ खण्डिया: राममनोहर प्रसाद - 093341-07730 ○ अनिरुद्ध झा ○ अजीत सिंह ○ डॉ. अशोक कुमार ○ गया: विरेन्द्र कुमार वर्मा - 097988-62061 ○ नवादा: बाढ़न मिस्त्री - 094300-25917 ○ कोडरमा: रामअवतार प्रसाद - 094319-82587 ○

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

12 अप्रैल 2009

नवग्रह शांति साधना शिविर, सूरत

शिविर स्थल: लेऊआ पाटीदार पंच की वाडी, रामपुरा पुलिस लाईन के पीछे, अशकताश्रम

हॉस्पिटल के सामने, सूरत (गुजरात)

आयोजक: शैलेष पटेल - 099256-60784 ○ नेहा पटेल - 099749-17224 ○ राजभाई श्रीवास्तव - 099798-80150 ○ पी.बी.शंकर - 098257-55806 ○ अल्पेश देसाई - 094268-75498 ○ रितेश पटेल - 099254-79521 ○ शिल्पाबेन चौधरी - 098792-93448 ○ कल्पेश पटेल - 099130-22868 ○ शशीकांत भाई - 093273-58472 ○ भरत परमार - 098985-89554 ○ बकुल भाई - 098799-20432 ○ प्रभाबेन - 092283-18183 ○ धीरुभाई - 099788-03194 ○ ताराबेन - 096011-96113 ○ हान्दिक व्यास - 098256-58143 ○ देवेन्द्र पंचाल - 099988-74612 ○ निरंजन पंचाल - 099792-79563 ○ हरेश जोशी - 098255-23924 ○ अनुलभाई जानी - 098791-90523 ○

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

20-21 अप्रैल 2009

निखिल जयंती महोत्सव एवं साधना शिविर, लखनऊ

शिविर स्थल: कु फियाघाट (प्राचीन कौण्डिन्य ऋषि आश्रम),

बड़ा झामामबाड़ा के पास-चौक, लखनऊ (उ.प्र.)

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियाँ



पूज्य गुरुदेव 'डा. नारायण दत्त श्रीमाली जी'
द्वारा रचित ज्ञान की गणिमा से चुना
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली अनमोल कृतियाँ

★ सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ विधान	20/-	★ शिष्योपनिषद	20/-
★ महाकाली साधना	20/-	★ द्वूलभीपनिषद	20/-
★ षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-	★ गुरु संध्या	20/-
★ तंत्र साधना	20/-	★ सिद्धाश्रम साधना सिद्धि	20/-
★ भुवनेश्वरी साधना	20/-	★ नारायण सार	15/-
★ मैं सुगन्ध का झोंका हूँ	20/-	★ नारायण तत्त्व	15/-
★ हंसा उझहूँ गगन की ओर	20/-	★ गुरु और शिष्य	15/-
★ मैं बाहे फैलाये स्वडा हूँ	20/-	★ सिद्धाश्रम	15/-
★ अप्सरा साधना	20/-	★ दीक्षा	15/-
★ बगलामुखी साधना	20/-	★ गुरुदेव	15/-
★ धन वार्षिणी तारा (महासरस्वती)	20/-	★ साधना एवं सिद्धि	15/-

सम्पर्क :- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2007-08

Licence to post Without pre payment

Licence No. RJ/WR/PP04/2007-09



माह : मार्च में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
08-09-10 मार्च

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
20-21-22 मार्च

वर्ष - 29

अंक - 02

.. संपर्क ..

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342031 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2422
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700